Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

ओ३म्

पाक्षिक
परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५४ अंक - ७ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र अप्रैल (प्रथम) २०१३

स्वामी रामदेव को स्मृति चिह्न भेंट करते स्वामी विष्वङ्

आचार्य सत्यजित्, स्वामी रामदेव, स्वामी विष्वङ्

स्वामी रामदेव का ऋषि उद्यान में आगमन (८ मार्च २०१३)

१

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५४ **अंक** : ०७
दयानन्दाब्द: १८९
विक्रम संवत्: चैत्र कृष्ण, २०६९
कलि संवत्: ५११३
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११३

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

अप्रैल प्रथम २०१३

अनुक्रम

१. १६ वर्ष की आयु में सम्बन्ध.........	सम्पादकीय	०४
२. लक्ष्य निर्धारण	स्वामी विष्वङ्	०७
३. मृत्यु के बाद के अनुभव व.........	नरेन्द्र	०८
४. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	१३
५. कासीत्प्रमा०-मन्त्र में मूर्तिपूजा.......	डॉ. वेदपाल	२०
६. मेरे हृदय से आर्यसमाज नहीं........	रामनिवास	२१
७. उनकी बोलती बन्द हो गई...........	इन्द्रजित् देव	२३
८. गोमांस का बढ़ता निर्यात और दूध..	मनमोहन शर्मा	२४
९. महाघोटाला	इन्द्रजित् देव	२६
१०. पुस्तक-परिचय		३०
११. पाठकों के विचार		३३
१२. पाठकों की प्रतिक्रिया		३६
१३. संस्था समाचार	ब्र. प्रभाकर	३७
१४. आर्यजगत् के समाचार		३९

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com
- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

१६ वर्ष की आयु में सम्बन्ध बनाने का औचित्य

कभी भारत की प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी ने देश को नारा दिया था-''गरीबी हटाओ'' विपक्ष ने कहा गरीबी तो नही हटी, गरीब हटाने का कार्यक्रम प्रारम्भ हो गया। उसी प्रकार मनमोहन सरकार से जब देश की जनता ने देश को बलात्कार जैसे अपराध से मुक्त करने की बात की तो सरकार ने बलात्कार को अपराध की श्रेणी से ही बाहर निकालने का मार्ग चुना। जब बलात्कार अपराध ही नहीं होगा, तो अपराधी बलात्कारी कैसे होगा? अपराध मिटाने का इससे सरल उपाय और क्या हो सकता है? अट्ठारह वर्ष से कम आयु के युवक-युवतियों के शारीरिक सम्बन्ध बनाना विधान के अनुसार अपराध है, ऐसा करने पर दण्ड विधान है। सरकार ने इस अपराध पर कड़े कानून बनाने की बात कहकर युवक-युवतियों की अट्ठारह वर्ष की कम आयु में भी सहमति से सम्बन्ध बनाने की कानूनी स्वीकृति देने का निश्चय कर लिया। इसमें एक-दो मन्त्रालयों में परस्पर विरोध भी था, परन्तु मन्त्री समूह बनाकर विरोध समाप्त कर दिया और सरकार ने सर्वसम्मति से कानून बनाने का निर्णय कर लिया। सरकार के निर्णय करने में कोई कठिनाई नहीं होती क्योंकि विरोध करने वाले के पास सरकार छोड़ने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं होता। अतः सबको समझा-बुझाकर मना लिया जाता है।

अभी सरकार की इच्छा मात्र से तो कानून नहीं बन जायेगा। इसके लिए सरकार ने सर्वदलीय बैठक बुलाई है उसमें विचार होने के बाद ही कोई निर्णय हो सकेगा। विपक्ष में ऐसे लोग बहुत हैं जो इस परिवर्तन को अनुचित मानते हैं। समाज में भी प्रगतिशीलता के नाम पर विदेशी कम्पनियों की दलाली करने वालों को छोड़ अधिकांश प्रबुद्ध व्यक्ति, माता-पिता, समाज के बड़े व्यक्ति भी कानून के इस परिवर्तन को अनुचित ही स्वीकार करते हैं। अब प्रश्न उठता है, सरकार को सहमति से सम्बन्ध बनाने के नियम में आयु १८ से १६ वर्ष करने का निर्णय क्यों करना पड़ा? इस प्रश्न पर विचार करने से दो तथ्य सामने आते हैं-**प्रथम** सहमति से सम्बन्ध बनाने की आयु शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से उचित है, इसलिए इस परिवर्तन की आवश्यकता थी। अतः यह कानून बदलने का विचार बना। यदि ऐसा होता तो समाज में और सरकार में इस बदलाव का विरोध न किया जाता न ही इसके लिए सर्वदलीय बैठक बुलाने की आवश्यकता पड़ती। बच्चों के अभिभावकों से अधिक हित-चिन्तक सरकार नहीं हो सकती, अधिकांश अभिभावक इस परिवर्तन के विरोधी हैं। विशेषज्ञों की दृष्टि से भी यह परिवर्तन अनपेक्षित है।

स्वतन्त्रता के बाद देश में अनुभव किया गया, हमारे देश की उन्नति में सबसे बड़ी बाधा बालविवाह है। उसको रोकने के लिए कानून बनाये गये। स्वतन्त्रता से पूर्व प्रसिद्ध इतिहासकार और आर्यसमाजी नेता हरविलास शारदा ने संसद से बालविवाह निरोधक कानून बनवाया था। स्वतन्त्रता के बाद विवाह की आयु फिर भी बढ़ाई गई। जब तक इस बात को देश व समाज की प्रगति में इसे बाधक समझते रहे, विवाह की आयु बढ़ाना उचित समझा। अब धारा विपरीत बहने लगी। सरकार कहती है कि देश की हर दूसरी लड़की का विवाह कानून का उल्लंघन करके हो रहा है। अतः सरकार इस कानून को तोड़ने से बचने के लिए विवाह की आयु भी घटाने की बात करती है। जो लोग विवाह की आयु घटाने का विचार रखते हैं और उसके लिए ऐसा तर्क देते हैं, वे साथ में इसके परिणाम पर विचार करना नहीं चाहते। सरकार तो माता-पिता से बढ़कर तर्क देती है, लड़के-लड़कियाँ सोलह वर्ष की आयु में शारीरिक सम्बन्ध बनाने की पर्याप्त समझ रखते हैं। यदि सरकार की बात मान ली जाए कि सोलह वर्ष की आयु ठीक समझ की है, तो इस आयु में उन्हें उत्तरदायित्व देने में क्या बाधा है। आप उन्हें विधानसभा में भेजिये, संसद में भेजिए, मन्त्री, प्रधानमन्त्री बनाइये। जब व्यक्ति अपने विषय में उचित निर्णय लेने में सक्षम हो जाता है तो वह दूसरे के हिताहित को सोचने में असमर्थ कैसे हो सकता है?

मनुष्य के शरीर में उसकी रचना के साथ ही उसके विकास की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है। शरीर का बनना लम्बे समय तक चलता रहता है, शरीर के विकास के साथ-साथ उसमें परिपक्वता आती है। शरीर की वृद्धि तो एक अवस्था में ह्रास की ओर जाने लगती है, परन्तु मानसिक और बौद्धिक विकास इन्द्रियों के ठीक-ठीक काम करने तक चलता रहता है। गर्भ में शिशु मां के रक्त से पुष्ट होता है। जन्म के बाद उसको पुष्टि माँ के दूध से मिलती है, आगे का विकास करने के लिए प्रकृति ने भोजन प्रदान किया है। शरीर की आवश्यकता के लिए प्रकृति ने शरीर में भूख की व्यवस्था की है। बालक को भूख जन्म से लगती है। भूख लगना स्वाभाविक प्रक्रिया है, परन्तु क्या खाना क्या नहीं खाना, कब खाना, कितना खाना? उसे परिपक्व होने पर ही समझ में आता है। जैसे भोजन मनुष्य की नहीं प्राणियों की स्वाभाविक आवश्यकता है, उसी से मनुष्य व प्राणियों का संसार में अस्तित्व बना हुआ है। उसी प्रकार प्रकृति ने प्राणियों में अपने अस्तित्व के लिए काम भावना की रचना की है। जैसे भूख के लगने से प्राणियों के

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

वर्तमान अस्तित्व की सुरक्षा होती है, उसी प्रकार काम-भावना से संसार के प्रवाह में प्राणियों का अस्तित्व बना हुआ।

पशु अपनी भावना को स्वभाव से चलाता है, परन्तु मनुष्य अपनी इच्छाओं को स्वाभाविक प्रक्रिया से पूर्ण नहीं कर सकता। इसके लिए उसे नैमित्तिक ज्ञान या बौद्धिक परिपक्वता से इच्छाओं को नियन्त्रण पूर्वक पूर्ण करना होता है, जिसमें मनुष्य का और उसके समाज का हित होता है। मनुष्य के बच्चों में काम भाव का उदय किशोर वय में लगभग बारह वर्ष की आयु से प्रारम्भ होता है, अट्ठारह वर्ष की आयु तक बड़ी तीव्रता से बढ़ता है, इस अवस्था में धातुओं का निर्माण भी उतनी ही गति से होता है। इस अवस्था में बालकों से सम्बन्ध बनाने की इच्छा व सामर्थ्य तो होता है, परन्तु उसकी समझ होती है, यह कहना गलत होगा। जो मध्यकाल में बचपन में विवाह कर देते थे, वे भी जानते थे कि गृहस्थ आयु परिपक्वता की है, अत: वे उस समय तक प्रतीक्षा करते थे। यदि बालक में चौदह या सोलह वर्ष की अवस्था में शारीरिक सम्बन्ध बनाने की समझ उत्पन्न होना मान लिया जाता है, तो विवाह करने में क्या बाधा है? सोलह वर्ष में शारीरिक सम्बन्ध बना लेना मात्र समस्या का समाधान नहीं। यह भूख केवल शारीरिक नहीं इसका अधिक सम्बन्ध मन-मस्तिष्क से है। भावनाओं से है, जिसका प्रभाव जीवन में बड़ी दूर तक जाता है। सबसे बड़ी बात सोलह वर्ष की आयु में बालकों द्वारा सम्बन्ध बनाना शारीरिक विकास के लिए हानिकर होता है। यह आयु पढ़ने-लिखने की, खेलने-कूदने, व्यायामादि कर शरीर को पुष्ट करने की है। सहमति से सम्बन्ध बनाने की छूट से वह समाप्त हो जायेगा।

हमारे देश के पिछड़ने का कारण बालविवाह रहा है और सरकार चोर दरवाजे से बालविवाह के मार्ग पर बढ़ रही है। विवाह की धार्मिक मान्यता और उसके अनुसार विवाह की आयु कुछ भी हो सकती है, परन्तु शारीरिक विकास के साथ उसका विरोध होने पर, प्राकृतिक नियम ही मानने होंगे, धार्मिक नहीं। धार्मिक नियम प्राकृतिक नियमों के पूरक होने चाहिए तभी उपयोगी होते हैं। इस्लाम में लड़की की विवाह की आयु मासिक प्रारम्भ होने से मानी गई है, भारत में यह नौ वर्ष स्वीकृत है। क्या यह विवाह उचित माना जायेगा। ऐसे मानने वालों के मस्तिष्क में स्त्री का वस्तु की भांति उपयोग करने की दृष्टि है। उसके व्यक्तित्व की स्वतन्त्रता का कोई अधिकार नहीं। आज पढ़ना-लिखना और योग्यतापूर्वक कार्यों का सम्पादन करने के लिए लम्बी समयावधि की आवश्यकता होती है। सहमति से सम्बन्ध बनाने की आयु घटाने पर सब से बड़ी बाधा बालक के बौद्धिक व शारीरिक विकास पर पड़ती है।

सरकार शारीरिक सम्बन्ध की आयु घटा कर किसे लाभ पहुँचाना चाहती है, किसको रोकना चाहती है। बालकों के इस प्रकार शारीरिक सम्बन्ध बनाने में सबसे बड़ी बाधा उनके माता-पिता हैं, कोई भी माता-पिता कितना भी आधुनिक हो वह अपने बच्चों को इस बर्बादी के मार्ग पर भेजना पसन्द नहीं करेगा। सरकार उस नियन्त्रण को समाप्त करना चाहती है। सरकार में बैठे लोग इस बात को दो प्रकार से देखते हैं। पहली दृष्टि में पाश्चात्य प्रगतिशील लोग हैं, जिनके लिए कामभाव केवल शारीरिक आवश्यकता है, जिसे कहीं भी किसी के साथ भी पूरा किया जा सकता है, पूरा कर लेना चाहिए। नई शिक्षा संचार साधन, जन सम्पर्क के माध्यम से इस प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल रहा है, फिर भी इस देश की परम्परा में सामाजिक तथा पारिवारिक सम्बन्ध विशेष स्थान रखते हैं। शारीरिक सम्बन्ध बनाने में पश्चिमी लोगों में सम्बन्धों का कोई महत्त्व नहीं है। जैसे इस्लाम में सगे भाई-बहन को छोड़कर विवाह सम्बन्ध किये जा सकते हैं, प्रगतिशील लोग उनसे भी आगे हैं, वे बिना विवाह के सम्बन्ध स्थापित करने को मान्यता देते हैं, उनकी दृष्टि में किन सम्बन्धों को छोड़ना चाहिए, किन को ग्रहण करना चाहिए, इसका कोई महत्त्व नहीं है। इस दिशा में बढ़ते हुए वयस्क लोगों को विवाहेतर सम्बन्धों को मान्यता मिल चुकी है। जिसको आजकल के लोग लिव इन रिलेशनशिप कहकर मान्यता देते हैं। न्यायालयों ने इससे भी आगे जाकर समलैंगिकता को मान्यता देकर अति आधुनिक होने को प्रमाणित किया है। उसी क्रम में शारीरिक सम्बन्धों में आयु घटाने की बात भी देखी जानी चाहिए।

दूसरी जो प्रमुख बात है वह है बाजार, हमारी सरकार के निर्णय समाज व्यक्ति देश के हानि-लाभ को देखकर नहीं होते। सरकार के निर्णय बाजार के हित-अहित की चिन्ता करते दिखाई देते हैं। आजकल सत्ता, सरकार में सामर्थ्य नहीं है। आज वास्तविक सत्ता बाजार में निहित है। बाजार की उपस्थिति इच्छाओं पर आधारित है। मनुष्य में इच्छा उत्पन्न होती है उससे बाजार उत्पन्न होता है। स्वाभाविक प्रक्रिया तो इच्छा उत्पन्न होना और उसके लिए बाजार उत्पन्न होना है, परन्तु आज इसके विपरीत होता दिख रहा है, मनुष्य में बाजार इच्छाओं को उत्पन्न कर रहा है, उन्हें बढ़ा रहा है। बाजार के मालिक मनुष्यों की इच्छाओं को बढ़ाकर बाजार को सफल बना रहे हैं। आपको क्या खाना है, आपकी इच्छा, आपकी आवश्यकता से नहीं, बाजार के निर्देश से जुड़ी है। पिज्जा खाना है, नूडल्स, मांस खाना है, चूजा खाना है, या कुछ और यह बाजार बतलाता है। आप को कपड़ा कैसा, कौनसा पहनना है? इसका निर्णय बाजार करता है। क्या देखना अच्छा लगता है, बाजार बताता है। बाजार इच्छा को अच्छा लगने से जोड़ देता है, जैसे खाना-पीना पहनना, देखना, सुनना, सूँघना सब कुछ बाजार निर्धारित करता है। इनकी इच्छा बढ़ने से बाजार बढ़ता है, उसी प्रकार काम भावना का भी बड़ा बाजार है। भोजन के बाद यदि कोई सब से बड़ा बाजार है, तो वासना का बाजार है। वासना तो है, उसकी पूर्ति में

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

सुख अनुभव भी होता है, तो अधिक सुख के लिए अधिक इच्छा और अधिक साधन यह बाजार का खेल है। इस में वासना की भूख बढ़ती है, तो इसमें और जो शरीर की आवश्यकता है, काम की भावनाओं से अन्य इच्छाओं में अन्तर है और अन्य इच्छाओं में इच्छापूर्ति का साधन जड़ है। हम उसे कैसे भी प्रयोग कर सकते हैं। हम क्या देखें, कुछ भी देखें, कुछ भी सुनें, कुछ भी खायें, कुछ भी सूँघे इससे जिसका उपयोग किया जा रहा है, उसको कोई हानि-लाभ नहीं हो रहा है, परन्तु स्पर्श सुख में ऐसा नहीं है, उस इच्छा की पूर्ति का सम्बन्ध चेतन से है। अत: इसका हानि-लाभ दोनों पर होता है। अत: विवाह सम्बन्ध की कल्पना की गई है। जड़ वस्तुओं से विवाह नहीं किया जाता, उनसे सहमति नहीं ली जाती, क्योंकि उन वस्तुओं को आपके साथ आने न आने की कोई इच्छा नहीं आपका उन पर अधिकार होता है, आप उनका कैसे भी प्रयोग कर सकते हैं, वे सर्वथा आपके आधीन हैं। परन्तु वासना की तृप्ति का सम्बन्ध चेतन से है, समाज से है। अत: सहमति की आवश्यकता है।

काम-भावना अन्य भावनाओं के समान तृप्ति के साथ वहीं समाप्त नहीं हो जाती, अपितु उसका परिणाम सन्तान होता है। बाजार भावना को बढ़ाना चाहता है। आने वाली बाधा बाजार में बाधक बनती है। यदि काम का भाव केवल सन्तान हो तो बाजार की आवश्यकता समाप्त हो जाती है। अत: बाजार ने इसमें अपना स्थान बनाया है। काम भाव बढ़ाने वाली औषधियों की बाजार में भरमार है। इसके साथ इस इच्छापूर्ति में बाधक कारणों को भी तो दूर करना होगा। इन काम सम्बन्धों में सबसे बड़ी बाधा रोग है, उसके लिए एण्टी बायोटिक्स का आविष्कार हुआ। आज उसके भी असफल होने पर अन्य उपाय खोजे जा रहे हैं। दूसरी ओर सन्तान की बाधा दूर करने के उपायों की एक बहुत बड़ी शृंखला बाजार में है, उनका उपयोग कर लोग अपने को सन्तान के उत्तरदायित्व से मुक्त रख सकते हैं। आज मुख्य रूप से यह बाजार सरकार पर हावी है। यह बाजार भारत मे उत्पन्न होने वाले हर बच्चे को अपना ग्राहक समझता है, वह इसको, अपने बाजार के लिए उपयोगी मानता है, उसका पूरा उपयोग करना चाहता है। अच्छा विज्ञापन देकर खाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है, उसी प्रकार काम, व्यापार के लिए व्यक्ति को उत्तेजित किया जा सकता है।

सरकार के सम्बन्ध बनाने की आयु घटाने से न तो युवक-युवतियों का हित है। न माता-पिता इससे सहमत हैं। बुद्धिजीवी चिकित्सकों का भी मत इसके अनुकूल नहीं है फिर भी सरकार बाध्य है, वह ऐसा करना चाहती है, क्योंकि बाजार अपने हाथ से इतना बड़ा क्षेत्र छोड़ना नहीं चाहता। आज सबकुछ खरीदा जा सकता है, तो सरकार क्यों नहीं खरीदी जा सकती। प्रतिदिन रिश्वत और घोटाले इसी के उदाहरण है। काम एक शक्ति है, शक्ति का उपयोग रचना और निर्माण में किया जा सकता है। हमारी सरकार को समाज निर्माण से अधिक विनाश में लाभ दीख रहा है, इसे रोका जाना चाहिए। सरकार की दशा पर एक पंक्ति है-

अर्थार्थी जीव लोकोऽयं श्मशानमपिसेवते।
त्यक्त्वा जनयितारं स्वं निःस्वं गच्छति दूरतः।।

-धर्मवीर

वैचारिक क्रान्ति हेतु
सत्यार्थप्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र प्रचार-प्रसार की योजना

सभी धर्म प्रेमी सज्जनों, आर्यसमाजों व संस्थाओं से निवेदन है कि इस कार्य को सफल बनाने हेतु शीघ्रता से अपना आर्थिक सहयोग परोपकारिणी सभा को भिजवायें ताकि तदनुरूप कार्य को आगे बढ़ाया जा सके। सहयोग भिजवाते समय **सत्यार्थप्रकाश का प्रचार-प्रसार** शीर्षक लिखना ना भूलें। धन्यवाद।

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र-आचार्य दिनेश शास्त्री, ऋषि उद्यान, अजमेर। चल दूरभाष-०७७३७९०४९५०, ०९६०२९२१३७३

मनुष्यों को सब जगत् के उत्पन्न करने वाले निराकार, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान्, सच्चिदानन्दादि लक्षणयुक्त परमेश्वर, धार्मिक सभापति और प्रजाजन समूह ही का सत्कार करना चाहिये, उनसे भिन्न और किसी का नहीं। विद्वान् मनुष्यों को योग्य है कि प्रजा-पुरुषों के सुख के लिये इस परमेश्वर की स्तुतिप्रार्थनोपासना और श्रेष्ठ सभापति तथा धार्मिक प्रजाजन के सत्कार का उपदेश नित्य करें, जिससे सब मनुष्य उनकी आज्ञा के अनुकूल सदा वर्त्तें रहें और जैसे प्राण में सब जीवों की प्रीति होती है, वैसे पूर्वोक्त परमेश्वर आदि में भी अत्यन्त प्रेम करें।-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.२५।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

लक्ष्य निर्धारण

-स्वामी विष्वङ्

आध्यात्मिक मार्ग में चलने वाले प्रत्येक साधक को अपने जीवन के लक्ष्य पर गम्भीरता से मनन चिन्तन करना चाहिए। यद्यपि आध्यात्मिक साधक अपने जीवन का लक्ष्य यह बनाकर चलता है कि मुझे समस्त दु:खों की निवृत्ति के लिए ईश्वरीय पूर्ण आनन्द को प्राप्त करने के लिए मोक्ष-मुक्ति को प्राप्त करना है। इस लंक्ष्य से बढ़कर और कोई सर्वोत्तम लक्ष्य मनुष्य जीवन के लिए नहीं है। इसी सर्वोत्तम लक्ष्य को जानकर-समझकर साधक आध्यात्मिक मार्ग पर चल पड़ता है। संकल्प-प्रतिज्ञा करता है कि मेरा लक्ष्य ईश्वर को प्राप्त करना और कराना है, सार्वजनिक घोषणा भी करता है और तदनुरूप चलता भी है।

आध्यात्मिक साधक का ऐसा कथन करना कि मेरा लक्ष्य ईश्वर को प्राप्त करना और कराना है। यह कथन सैद्धान्तिक रूप से अनुचित नहीं है। साधक इस ऊँचे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये पुरुषार्थ करता है। कुछ उपलब्धियों को प्राप्त भी कर लेता हैं। स्वयं को ईश्वरोपासक, आध्यात्मिक साधक बनाकर इस अध्यात्म मार्ग पर निरन्तर चल रहा होता है। परन्तु कालान्तर में मुख्य लक्ष्य गौण हो जाता है और गौण लक्ष्य को मुख्य बना लेता है। ऐसा होने का ज्ञान साधक के क्रिया-कलापों से प्रतीत होता रहता है। कालान्तर में साधक संघर्षमय जीवन को व्यतीत कर रहा होता है। प्राय: साधक बहुत सी लौकिक योग्यताओं को प्राप्त करने में समय व्यतीत कर रहा होता है। लौकिक योग्यताओं को प्राप्त करते हुए ईश्वर को प्राप्त करने योग्य उपायों को गौण कर रहा होता है अथवा उन उपायों को छोड़ रहा होता है। जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, वैसे-वैसे वित्तैषणा, पुत्रैषणा और लोकैषणा प्रबल होने लगती है। इन एषणाओं को त्याग करना चाहिए, ऐसा सैद्धान्तिक रूप से समझते हुए भी उन्हीं एषणाओं को पुष्ट कर रहा होता है। इस कारण साधक अपने मुख्य लक्ष्य की ओर उतना नहीं बढ़ता जितना बढ़ना चाहिए।

वास्तव में आध्यात्मिक साधक अपने मुख्य लक्ष्य की ओर शीघ्रता से तभी आगे बढ़ पाता है, जब उसके मन में केवल ईश्वर-एषणा हो। ईश्वर-एषणा उसी के मन में होती है, जो वित्तैषणा, पुत्रैषणा, लोकैषणा को त्याग करता है। यहाँ पर यह जानना अति आवश्यक है कि एषणाओं को कौन साधक त्याग कर पाता है। जिसने पूर्व जन्म में एषणाओं को भोग कर देखा हो, उनके प्रति वैराग्य की भावना लाई हो और उस पूर्व जन्म में उसे पूरी सफलता न मिली हो, तो इस जन्म में पूर्व जन्म के प्रबल संस्कारों से प्रेरित हो कर शीघ्र विवेक, वैराग्य को प्राप्त कर लेता है। अथवा इस जन्म में कुछ वित्त पाकर देख चुका हो, पुत्र पाकर या शिष्य-प्रशिष्य रूप पुत्रों को बनाकर देख चुका हो, समाज में ऐसे कुछ विशेष परोपकारमय कार्यों को करके सम्मान पा चुका हो, तो शीघ्र विवेक, वैराग्य को प्राप्त करने में सरलता होती है और ईश्वर-एषणा को अपना सकता है। अन्यथा साधक भ्रम में पड़कर न तो एषणाओं को पूरी तरह भोग पाता है और न ही ईश्वर-एषणा को अपना पाता है। इस कारण आध्यात्मिक साधक को यह विचार कर चलना है कि यद्यपि मेरा लक्ष्य ईश्वर को प्राप्त करना है, परन्तु अभी मैं लौकिक सुखों (अभ्युदय-सुखों) को भोग कर नहीं देख पाया हूँ।

सर्वप्रथम ईश्वर की आज्ञा के अनुरूप चलते हुए, धर्म-पूर्वक आचरण करते हुए कुछ लौकिक योग्यताओं को प्राप्त करना चाहिए, जो ईश्वर को प्राप्त करने में परम सहयोगी हैं। यदि साधक ने कम विद्या पढ़ी हो, तो और विद्या को पढ़ लेना चाहिए। यदि पुण्यकर्म कम किया हो, जिनसे सीधा-सीधा जनता को लाभ मिलता हो, ऐसे परोपकारमय कार्यों को करना चाहिए। विद्या को पढ़कर, अन्यों को पढ़ाकर शिष्य-प्रशिष्य बना लेने चाहिए। इससे पुत्रैषणा की, वित्तैषणा की और लोकैषणा की पूर्ति होगी और उससे ईश्वरीय-सुख से तुलना करके एषणाओं से विरक्ति की भावना जगानी चाहिए, जो ईश्वर-एषणा को पुष्ट करती जायेगी। ऐसी स्थिति में अध्यात्म मार्ग में बिना बाधा के आगे बढ़ा जा सकता है। नहीं तो उधर साधक में ईश्वर-एषणा बन नहीं पाती, इधर लौकिक योग्यताओं के अभाव में एषणाओं की पूर्ति नहीं हो पाती। ऐसे में दोनों पाटों के बीच में साधक पिसता चला जायेगा।

इसलिए अध्यात्म मार्ग में चलने वाला साधक यदि कम योग्यता रखता हो, तो पहले छोटे-छोटे लक्ष्यों को पूरा करता जाये। जिससे मन में एक निश्चिन्तता होगी, आत्मविश्वास बढ़ेगा। उसे अपने सामर्थ्य का पता चल पायेगा। वह अपनी बुद्धि का उचित प्रयोग कर पायेगा, अपने ज्ञान-विज्ञान के स्तर को उन्नत कर पायेगा। तभी पाप कर्मों को त्यागते हुए पुण्य कर्मों को बहुतायत में बढ़ा पायेगा। एक समय ऐसा आयेगा, तब केवल बड़े लक्ष्य (=ईश्वर को प्राप्त करना रूप लक्ष्य) को लेकर आगे बढ़ पायेगा और उसे पूर्ण सफलता मिलेगी।

ऋषि उद्यान, अजमेर।

मनुष्यों को योग्य है कि शुद्ध-कर्म वा प्रज्ञा से वाणी वा बिजुली की विद्या को ग्रहण कर उमर को बढ़ा और विद्यादि उत्तम-उत्तम गुणों में अपने संतान और वीरों को संपादन करके सदा सुखी रहें।-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.२३।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

मृत्यु के बाद के अनुभव व पुनर्जन्म

-नरेन्द्र

पिछले परोपकारी 'फरवरी प्रथम' अङ्क को पढ़ा, जिसमें श्रीमान् महेन्द्र आर्य के लेख "मृत्यु के बाद क्या?" भी छपा था। इस लेख को पढ़कर कई भाव जागृत हुए, जिसमें सबसे ज्यादा सुख इस बात को जानकर मिला कि जो आधुनिक विज्ञान अब तक किसी प्राणी की जीवन से मृत्यु पर्यन्त की प्रक्रियाओं व घटनाओं को भौतिक विज्ञान के शब्दों से परिभाषित करता आ रहा था, उसे अब नये शब्दों के खोज की जरूरत आ पड़ी है। क्योंकि उसकी खोज का दायरा जन्म व मृत्यु की सीमाओं से बाहर जा रहा है, अत: ऐसे स्थान व अनुभवों के वर्णन के लिये उसके पास न तो कोई शब्द हैं, और ना ही कोई परिभाषा। और फिर आवश्यकता भी नहीं दिखी अब तक, क्योंकि सारी की सारी सत्य घटनाएँ तो इस भौतिक संसार तथा इसमें प्रत्यक्ष दिखने वाले प्राणी के शरीर में दिख रहीं थीं। फलस्वरूप इसी को अधिक से अधिक सुखद अनुभूतियाँ व सुविधाएँ देने का उद्देश्य ही नवीन अविष्कारों के उद्‌भव का कारण रहा है।

परन्तु धन्य है वह परमशक्तिमान् सत्ता, जिसकी कृपा से कर्मफल-सिद्धान्त पर आधारित ऐसी घटनाएँ इन आधुनिक चिकित्सकों व वैज्ञानिकों को प्रत्यक्ष हुई हैं, जिसमें चिकित्सा की अवधि में रोगी की चिकित्सकीय मृत्यु के पश्चात् पुनर्जीवित हो उठने की घटना को देखने पर उन्हें इस भौतिक शरीर के परे एक ऐसी चेतन सत्ता के अस्तित्व का भान हुआ, जिसे उन्होंने संसार की विभिन्न संस्कृतियों मुख्यत: पूर्वदेशीय संस्कृतियों के माध्यम से पूर्वकाल में मात्र सुन रखा था। परन्तु प्रत्यक्ष प्रमाणों के अभाव में ऐसी बातों पर अन्वेषण करना तो क्या, अधिक विचार करना व सुनना भी उन्हें आवश्यक नहीं लगा था। परन्तु रोगियों की चिकित्सकीय मृत्यु के पश्चात् पुनर्जीवित हो उठने की इस प्रक्रिया को प्रत्यक्ष करने तथा मृत्यु व पुनर्जीवन के मध्य हुए अनुभवों को रोगियों द्वारा चिकित्सकों को बताये जाने पर अब इन घटनाओं को खोजकर्ता व वैज्ञानिक किसी न किसी रूप में भौतिक विज्ञान से जोड़ने को उत्सुक होते दिख रहे हैं। जिसमें संसार के विभिन्न स्थानों पर व्यापक स्तर पर डॉ. सेन पर्निया जैसे खोजकर्ता इस विषय पर अनुसन्धान कर रहे हैं तथा अपने अन्वेषणों के आधार पर विभिन्न प्रकार की धारणाएँ व तर्क इस बात के समर्थन में दे रहे हैं कि इस शरीर में अनुभूतियाँ करने का सामर्थ्य नहीं है, बल्कि अनुभूतियाँ करने वाली तो इससे अलग ही कोई चेतना है, जो इस शरीर का साथ नहीं रहने पर भी विभिन्न स्तर की विभिन्न आनन्दादि अनुभूतियों को प्राप्त करती है। जिसका वर्णन परोपकारी के पूर्वाङ्क में हो चुका है। अत: अब यह सम्भव होता दिख रहा है कि इस भौतिक जगत् से हटकर कोई अन्य जगत् भी है, जो अब भी आधुनिक विज्ञान से अछूता है, जिसमें इस जीवन व मृत्यु के अनुभवों से हटकर सदा एक ही आनन्द का अनुभव होता है। एक ऐसा जगत्, जिसमें दु:ख का स्थान लेशमात्र भी नहीं है। परन्तु क्या वर्तमान विज्ञान भौतिक संसाधनों के माध्यम से ऐसे क्षेत्र में अनुसंधान कर पायेगा?

क्योंकि मनुष्य शरीर के प्रत्येक अणु-परमाणु, सूक्ष्म-स्थूल अङ्ग, क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं को विभिन्न वैज्ञानिक उपकरणों के माध्यम से जानने में सक्षम आज का विज्ञान उसी शरीर के अक्षम होने पर स्वयं भी मृत्यु के बाद की स्थिति को प्रत्यक्ष करने में अक्षम हो जाता है। ऐसे में N.D.E. (एन.डी.ई.) के अनुसंधान में वे किसी प्रकार के उपकरणों की सहायता लेंगे व लेनी चाहिये तथा अब तक के अनुसंधान में क्या-क्या त्रुटियाँ हुई हैं तथा कितनी सफलता उन्हें प्राप्त हुई है, इस पर संक्षिप्त विचार करते हैं।

जैसा कि पूर्वविदित है कि एन.डी.ई. अर्थात Near Death Experience का यह अनुभव तब किसी व्यक्ति को होता है, जब उसकी चिकित्सकीय मृत्यु हो चुकी होती है, अर्थात् हृदय-गति बन्द होकर मस्तिष्क को रक्त का संचार बन्द हो जाता है, जिससे रक्त में उपस्थित ऑक्सीजन के अभाव में मस्तिष्कीय कोशिकाएँ मृत हो जाती हैं। ऐसी स्थिति में तन्त्रिका तन्त्र में विद्युतीय संवेगों का आवागमन भी रुक जाता है, जिससे शरीर की सभी ज्ञानेन्द्रियों तथा कर्मेन्द्रियों तथा आन्तरिक व बाह्य शारीरिक अङ्ग-प्रत्यङ्गो से मस्तिष्क का सम्पर्क टूट जाता है तथा सम्पूर्ण शरीर निस्तेज व निश्चल हो जाता है। जिसके परिणामस्वरुप आँखों की पुतलियाँ फैली हुई होती हैं। यह वह काल होता है, जब एक नया अनुभव प्रारम्भ होता है। इस प्रक्रिया में सभी मनुष्यों को एक ही प्रकार का प्रारम्भिक अनुभव होता है, जिसमें प्रथम तो चारों तरफ अंधेरे का होना, पश्चात् किसी अन्धेरी सुरंग में स्वयं का अस्तित्व अनुभूत करना तथा स्वयं को भारहीन व स्वतन्त्र अनुभव करना, परन्तु इसके ठीक बाद के अनुभव भिन्न-भिन्न आते हैं। किसी को अंधेरी सुरंग के मुँहाने पर अत्यन्त तीव्र प्रकाश दिखता है, तो किसी को उसके सगे-सम्बन्धी वापस आने को कहते हैं, तो कोई अपने पूर्व-मृतक, सगे-सम्बन्धियों से बातचीत का अनुभव बताता है, कोई अपने-अपने सम्प्रदाय के गुरु, नबी, पैगम्बर आदि से भेंट दर्शाता है, तो कोई शैतान से मिलना या नर्क की आग का वर्णन करता है व कोई-कोई तो इस काल में स्वयं के मृत शरीर को

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

किसी विशेष दिशा से देख रहा होता है तथा अपने वातावरण का वर्णन करता है।

मस्तिष्क के पूर्णतः निष्क्रिय हो जाने की स्थिति में यह बात तो सुस्पष्ट है कि ये सभी अनुभव मस्तिष्क में नहीं बल्कि किसी अन्य चेतना में ही होते हैं। जिससे इस बात की भी पुष्टि होती है कि जीवनकाल में घटने वाली सभी प्रक्रियाओं की अनुभूतियाँ व ज्ञान कोई अन्य चेतनशक्ति ही करती है। मस्तिष्क तो केवल सूचनाओं के आदान-प्रदान में व शारीरिक गतिविधियों के संचालन में एक मध्यस्थ-अंग या पुल का कार्य करता है। तथा यदि मस्तिष्क मृत वा निष्क्रिय नहीं होता है, तब यदि इससे मिलते-जुलते अनुभव रोगी द्वारा बताए जाते हैं, तो ऐसे अनुभव मतिभ्रम या जिसे चिकित्सकीय भाषा में Hallucination कहते हैं, कहलाते हैं।

कई वैज्ञानिकों का मानना है कि जब मस्तिष्क मृत हो रहा होता है, तब वह इस प्रकार का मतिभ्रम उत्पन्न करता है, जो कि इस बात का परिचायक है कि मस्तिष्क रक्तावरोध के कारण अपनी कार्यविधि में अक्षम हो रहा है व कईयों का यह मानना है कि जिस प्रकार निद्रा आने पर जो स्वप्न मनुष्य को चलते दिखते हैं, उनका वास्तव में कुछ ही क्षण या मिनटों, समय तक का अस्तित्व होता है। उसी प्रकार मस्तिष्क के निष्क्रिय होने से पूर्व तथा सक्रिय होने के तुरन्त पश्चात् की अवधि में ही इस प्रकार के आभासित विचार उस मनुष्य को आते हों, जो कि बाद में एक संयुक्त शृंखला का रूप लेकर N.D.E. के अनुभव बन जाते हों। जबकि एक वैज्ञानिक की धारणा मस्तिष्क की योग्यता को लेकर और भी है। वह है आपातकाल में समय की चाल में कमी करने की। इसके उदाहरण के लिये एक घटना का वर्णन आवश्यक है।

बायोमिंग के लिटिल वीनस के जंगलों में बिजली कड़कने से लगी आग को काबू करने के लिये पहुँचे अग्निशमन के ६ सदस्यों का दल जब जंगल के मध्य में पहुँचकर रास्ता भटक गया, तब अचानक उनके वायरलैस पर आयी एक सूचना ने उन्हें आश्चर्य में डाल दिया। क्योंकि वे जंगल में जिस स्थान पर खड़े थे, वहाँ पर तेज हवा का तूफान आता देखा गया था, जो कि जंगल में लगी आग को भड़काने का काम करने वाला था, जिससे वे सभी इस आग की भेंट चढ़ जाते। तब तूफान की रफ्तार से बढ़ी गर्मी की तेज भभक के स्पर्श का अनुभव उस दल को हुआ, तो वे एक निश्चित दिशा में तेजी से भागते हुए अपनी जान बचाने के प्रयास में लग गये। अचानक उन्होंने आग का तेज व बहुत बड़ा गुब्बार अपनी ओर आते देखा, तो सबने अपने अलग-अलग जीवन-रक्षक कवच खोल दिये, जो कि उष्मारोधी थे। तथा बाद में अपना अनुभव बताते हुए उन्होंने कहा कि आग के गोले को इतना समीप देखकर उन्हें यह पूरा विश्वास हो गया था कि वे इसमें स्वाहा हो जायेंगे। परन्तु अचानक उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे समय बहुत धीमी गति से चल रहा हो तथा इसी कारण उन्हें अपना जीवनरक्षक कवच खोलने तथा स्वयं को ढँकने का अवसर मिल गया था।

यह घटना हमें केवल इतना ही बताने का प्रयास करती है कि मस्तिष्क में अब भी ऐसी कई योग्यताएँ हैं, जो सम्भव है कि वर्तमान विज्ञान से अदृष्ट हों, जिनका कि अन्वेषण करके पता लगाया जा सकता है। परन्तु ये सभी धारणाएँ तभी सार्थक व प्रभावी होती हैं कि जब मस्तिष्क तथा शरीर के सभी अङ्गो तक रक्त का संचार पूर्ण व अबाध गति से होता है। ऐसी स्थिति में मस्तिष्क अच्छी प्रकार विचार व्यवहार के कार्य कर-करवा सकता है, जबकि मृत्युशय्या पर पड़े मरीजों के लिए वर्तमान स्थिति पूर्वविदित स्थितियों से पूर्णरूपेण भिन्न होती है, जिसमें कि हृदय-गति के बन्द होने से मस्तिष्क में रक्त का प्रवाह पूर्णतः बन्द हो जाता है, तब भी ऐसे अनुभव सामने आते हैं कि जिनमें I.C.U. की गतिविधियों का ज्ञान भी उन्हें ऐसी परिस्थितियों व काल में होता है कि जब उनके शरीर की सारी गतिविधियाँ बन्द थीं, मस्तिष्क निष्क्रिय था व न्यूरान्स में कोई ऊर्जा शेष न थीं, इससे दो बातें सिद्ध होती हैं। **१.** शरीर से पृथक् कोई चेतन शक्ति है, जो शरीर के साथ रहने पर भी तथा साथ न रहने पर भी स्वेच्छा से ज्ञान व अनुभव ग्रहण करती है। **२.** यह चेतना शरीर का साथ रहने या साथ छोड़ने दोनों ही दशाओं में अपने पूर्वार्जित ज्ञान व संस्कारों के आधार पर अनुभव ग्रहण करती है। जिसमें साक्ष्य N.D.E. का अनुभव ले चुके विभिन्न स्थानों व संस्कृतियों के मनुष्य की घटना के वर्णन की विभिन्नता का है, जिसको पूर्व कह चुके हैं। इससे ये भी पता चलता है कि स्मृति की शक्ति मस्तिष्क में नहीं बल्कि चेतना में ही संरक्षित होती है।

एक और बात जो इस घटना से प्रत्यक्ष होती है, वह है N.D.E. का अनुभव करने वाले मनुष्यों की अनुभवकाल की भिन्नता अर्थात् चिकित्सकीय मृत्यु की अवधि की भिन्नता। जिसमें कोई ५ मिनट तो कोई १५ मिनट व कोई आधा से एक घण्टा इस प्रकार की मृत्यु को प्राप्त होकर ऐसे अनुभव लेता है। एक विश्वासपात्र सज्जन से जब मैंने इस बारे में विचार-विमर्श किया, तो उन्होंने मुझे कुछ ऐसे मनुष्यों के उदाहरण बताये, जिन्हें उनकी चिकित्सकीय मृत्यु होने के ५ से ६ घण्टे बाद जीवन अर्थात् चेतन प्राप्त हुई। यदि ऐसा है, तो वर्तमान विज्ञान मानवजाति के अस्तित्व के लिये एक संकट सिद्ध हो जायेगा, क्योंकि किसी मनुष्य की मृत्यु के पश्चात् यदि चिकित्सकों द्वारा नेत्रदान या शरीर के किसी अङ्गविशेष के दान की प्रक्रिया को पूर्ण किया जाता है, जिसके बाद यदि वह चेतन सत्ता यदि उस शरीर में पुनः आती है, तो वह शरीर उसे या तो विकलाङ्ग प्राप्त होगा, अन्यथा कोई विशेष अङ्ग यथा हृदय या लीवर आदि निकाल देने की अवस्था में चिकित्सकों द्वारा चेतना के पुनः शरीर धारण की सम्भावना को ही समाप्त कर दिया जायेगा। ऐसे

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

में वर्तमान विज्ञान के माध्यम से मृत्योपरान्त अङ्गदान देने की यह क्रिया मनुष्य के लिये एक अभिशाप बन जायेगी। ऐसे में वर्तमान कानून ऐसे विकलाङ्गो को किस प्रकार न्याय दिलवायेगा? क्या मृतक के अंङ्गो को निकालने वाले चिकित्सक अपराधी की संज्ञा प्राप्त करेंगे? व कौन सी चिकित्सकीय जाँच इस बात का निष्कर्ष न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करेगी? कौन सी वैज्ञानिक जाँच इस बात की पुष्टि करेगी कि अमुक शरीर में पुन: चेतना आयेगी या नहीं, ताकि उस शरीर का अंङ्ग-भंग करने का निर्णय सुनिश्चित किया जा सके? परन्तु अभी तक केवल शरीर से पृथक् चेतना के अस्तित्व को वैज्ञानिकों द्वारा स्वीकार किया गया है। तब क्या यह बात भौतिक विज्ञान को सम्भव होती नहीं दिखती है कि जब यह चेतना शरीर की मृत्यु के बाद भी अस्तित्व में रहती है, तो वह किसी अन्य नवनिर्मित शरीर में स्थानान्तरित हो सके? क्या यह अन्वेषण का कार्य हमें यहीं तक रोक देना चाहिये?

जिज्ञासा मनुष्य की सबसे बड़ी शिक्षिका रही है। इसी जिज्ञासा के बल पर मनुष्य वर्तमान संसार के विभिन्न प्रकार के पदार्थों को जानने तथा उनका उपयोग करने का सामर्थ्य बना पाया है। ऐसी ही जिज्ञासा सन् १९१८ में मोन्ट्रीयल केनेडा में जन्मे मेडीकल में M.D. की डिग्री प्राप्त करने वाले एक प्रसिद्ध मनोचिकित्सक तथा पुनर्जन्म विषय पर अनुसन्धान करने वाले डॉ. आयन स्टीवेन्सन के अन्त:करण में भी उठी थी, जिस कारण उन्होंने संसार में घटने वाली इन पुनर्जन्म की घटनाओं पर बड़ी बारीकी से शोध किया तथा अपने चिकित्सकीय जीवनकाल में उन्होंने अपने विभिन्न अनुभवों के आधार पर लगभग १४ शोध पुस्तकें पुनर्जन्म विषय पर ही प्रकाशित कीं, जिसमें उनकी वर्तमान विज्ञान को एक अतुलनीय भेंट रूप में २२६८ पृष्ठ की पुस्तक:-A Contribution to the etiology of birth marks and birth defects सन् १९९७ को प्राप्त हुई। इसके अलावा उनके शोध के सार रूप में भारतीय लेखक दीपक चोपड़ा की पुस्तक:-Life after death-the Burden of Proof के द्वारा डॉ. स्टीवेन्सन के इस शोध के निर्णय को बताया है कि डॉ. स्टीवेन्सन ने किस प्रकार अपने जीवन में लगभग ३००० बच्चों के पुनर्जन्म की घटनाओं पर गहन अन्वेषण किया। जिसमें उन्होंने लगभग २५०० घटनाओं को बिलकुल सत्य पाया तथा पश्चात् यह निष्कर्ष निकाला कि पुनर्जन्म की वास्तविकता अकाट्य है तथा पुनर्जन्म एक स्पष्ट व सम्भव विवरण है। इन बच्चों पर किये अपने चिकित्सकीय अन्वेषणों को उन्होंने निम्नलिखित तर्कों के आधार पर विज्ञान में सहमति दिलाई:-

१. ''बिना किसी प्रत्यक्ष प्रेरणा व अवसरों की उपलब्धता के तथा बहुत से साक्ष्यों की उपस्थिति में इन घटनाओं का चिकित्सकीय अन्वेषण किया गया था, जिसमें बच्चों द्वारा धोखा देने की परिकल्पना बिलकुल असम्भव थी।

२. अधिक से अधिक मात्रा में जो जानकारी उन बच्चों के द्वारा बतायी गई, वह केवल उनकी परिकल्पना नहीं थी। बल्कि वह जानकारी जांच करने पर सत्य पाई गई।

३. ये बच्चे उनके पूर्वजन्म के चरित्र के अनुसार विचार-व्यवहार का प्रदर्शन करते पाये गए, जिसे कि उन्हें वर्तमान जीवन में किसी के द्वारा नहीं सिखाया गया था। बिना किसी प्रेरणा तथा इतने अधिक समय तक अपनी पूर्व-जन्म के व्यवहार का संग्रहण व बोध किसी अतिसंवेगी अङ्ग से उसे होता हो, यह परिकल्पना असम्भव है।

४. जबकि उन बच्चों के जन्मजात शारीरिक-चिह्न तथा पूर्वजन्म के व्यक्ति के शारीरिक लक्षणों में समानता पायी जाती है, ऐसी घटनाएँ कल्पना हों, यह असम्भव है।''

अत: अब यह धारणा वर्तमान विज्ञान भी नहीं मानता है कि मृतक का वर्तमान परिवेश तथा सम्बन्धियों व समाज से सम्पर्क छूटने पर वह उन्हें कोई सूचना नहीं दे सकता है। क्योंकि पुनर्जन्म पर किये गये अनुसन्धान हमें ये बताते हैं कि अमुक व्यक्ति अपने वर्तमान जन्म में पूर्वजन्म की घटनाओं से सम्बन्धित पात्रों अर्थात् सम्बन्धी, मित्रगण आदि के पुन: सम्पर्क में आता है। इस प्रकार से इस भौतिक शरीर से पृथक् चेतन सत्ता के अध्ययन व विश्लेषण तथा अनुसंधान से निकले विज्ञान को आधुनिक विज्ञान एक नये विज्ञान के रूप में देखता है तथा इसे पारलौकिक विज्ञान या असाधारण विज्ञान की संज्ञा वा नाम देता है, परन्तु आधुनिक विज्ञान की मान्यताओं से परे भारतीय वैदिक-संस्कृति में पूर्वकाल ही से जो उन्नत विज्ञान अपने चरम पर चला आ रहा है, वह केवल भौतिकवादी नहीं, वरन् दो प्रकार के विज्ञान-१. आध्यात्मिक तथा २. भौतिक में बँटकर भी आपसी सामञ्जस्य के साथ सृष्टि के सभी प्राणियों को करोड़ों वर्षों से मातृभाव से पालता आ रहा है। जहाँ पर भौतिक विज्ञान पंचभूतों से निर्मित सृष्टि के विभिन्न पदार्थों का मनुष्य को यथावत् ज्ञान प्राप्त करा उसका पूर्ण तथा पवित्रतापूर्वक उपयोग करना सिखाता है, जिससे किसी पदार्थ का उपयोग करने के पश्चात् बचा अवशेष भी अन्य प्राणियों के उपयोग के तथा सृष्टि को प्रदूषण रहित बनाने के काम आ सके, वहीं आध्यात्मिक विज्ञान मनुष्य को तत्वबोध अर्थात् पंचभूतों से निर्मित इस शरीर के माध्यम से सृष्टिगत पदार्थों का उपयोग करने वाले जीव की पृथकता का तथा इन पदार्थों का सृजन करने वाली परमचेतना तथा कर्मफल-व्यवस्था की नित्यता व मनुष्य-जन्म के परमलक्ष्य मोक्ष-प्राप्ति आदि का ज्ञान करा जीव को पूर्ण तृप्ति का अनुभव कराता है।

आज के समय में मनुष्य अपनी मातृभूमि के प्रति उस

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अयोग्य संतान की तरह व्यवहार करता है, जो खाता-पीता व खेलता तो अपनी माँ की गोद में है, परन्तु जब उसे हठ व दुराग्रह होता है, तो उसकी पूर्ति के लिये अपनी माता को तिरस्कृत करके बिगड़े हुए असभ्य पड़ोसी की बात को बड़े गर्व तथा शोभा के साथ मानने में अपना भला समझता है। ऐसी सन्तान को स्वदेश में उत्पन्न हुए ऋषि-मुनि आदि भद्रपुरुषों के स्वानुभूत आत्मा-परमात्मा विषय, आध्यात्मिक शिक्षा तथा सत्यशास्त्रों पर सदा ही संदेह रहा है, क्योंकि वे ऐसे ज्ञान को प्राणीमात्र पर दया-दृष्टि व परोपकार के भाव से सेवा के रूप में बिना किसी भौतिक संसाधन की आकांक्षा के सुलभता से उपलब्ध करवा देते हैं। परन्तु पूर्वाग्रही विदेशी लोग यदि अनुसंधान के नाम पर करोड़ों-अरबों की मुद्रा तथा विश्व की सीमित तथा आवश्यक धन-सम्पदा को लुटाकर व तहस-नहस करके अधकचरे ज्ञान को प्रकाशित करता है, तो वह उसे सदैव सहर्ष ग्राह्य रहता है। तथा वह इसे स्वदेश में वर्तमान शिक्षा-पद्धति में लागू करने में अत्यन्त उतावला रहता है। और अब जबकि सम्पूर्ण विश्वपटल पर इस प्रकार के [(N.D.E.)सम्बन्धी] अनुसन्धानों को मान्यता मिल रही है तथा आधुनिक विज्ञान द्वारा इसी आर्यावर्त की भूमि पर सींचे गये वैदिक-आध्यात्मिक विज्ञान को, जिसे वह अब तक नहीं मानता था, अपने द्वारा बनाये गये नये प्रारूप अर्थात् Paranormal Science (असाधारण विज्ञान, पारलौकिक विज्ञान) के माध्यम से स्वीकार कर व करा रहा है, तब भी न केवल विदेशियों द्वारा बल्कि भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा भी वैदिक ऋषियों के इस ज्ञान के माध्यम से इस दिशा में आगे बढ़ने में एक संकोच सा नज़र आता है। यह कृत्य हमारे पूर्वजों के द्वारा अर्जित किये गये अनुभवों व ज्ञान के प्रति अविश्वास, उदासीनता व कृतघ्नता का भाव प्रदर्शित करता है, जो कि एक अमानवीय लक्षण है।

अन्त में मैं आचार्य श्री सत्यजित् जी, ऋषि उद्यान गुरुकुल, अजमेर को धन्यवाद अवश्य दूँगा कि जिन्होंने गताङ्क में छपे लेख (मृत्यु के बाद क्या) पर उठी कई जिज्ञासाओं को शान्त करने में मेरी सहायता की व मुझे प्रेरित किया कि इस लेख से सम्बन्धित मैं अपने विचार आप सभी पाठकों के समक्ष रख सकूं। इसी कारण मैं इस विषय पर कुछ प्रयास कर पाया हूँ। धन्यवाद।

-३४८/२२, हीरा मेन्शन, नवाब का बेड़ा, अजमेर-३०५००१, दूरभाष-०७७३७५४४४८१

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. आर्यसमाज की ध्यान पद्धति-ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर। ११ से १७ अप्रैल २०१३, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर। अधिकतम संख्या-५०। मात्र पूर्व पञ्जीकृत प्रतिभागियों के लिए। इसमें विद्वद् गोष्ठी द्वारा निर्धारित आर्यसमाज की ध्यान पद्धति का प्रशिक्षण दिया जायेगा व ध्यान करवाने का अभ्यास भी करवाया जायेगा। परीक्षा के बाद योग्य व्यक्तियों को परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षक-प्रमाण पत्र भी दिये जायेंगे। शिविर निःशुल्क है। **१० अप्रैल सायं ४ बजे तक पहुँचना अनिवार्य है। विलम्ब से आने वालों की शिविर में सहभागिता नहीं हो पायेगी**। शिविर का समापन १७ को सायं ५ बजे तक हो जायेगा। इच्छुक व्यक्ति, कृपया सम्पर्क करें-९४१४००६९६१, समय-रात्रि ८ से ८.३०। पता-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर, परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर, राज. ३०५००१। ईमेल-psabhaa@gmail.com

२. १७ से २६ मई-**संस्कृत संभाषण शिविर**, सम्पर्क : ९४१४७०९४९४

३. २८ मई से ४ जून-**आर्यवीर दल शिविर**, सम्पर्क : ९४१४४३६०३१

४. ६ से १३ जून-**आर्य वीरांगना शिविर**, सम्पर्क : ९४१४४३६०३१

५. १६ से २३ जून-**योग-शिविर**, सम्पर्क : ०१४५-२४६०१६४

६. विद्वद् गोष्ठी-'**आर्यसमाज की यज्ञपद्धति**' तृतीय, (मात्र आमन्त्रित विशेषज्ञों के लिए), २७ से ३० जून २०१३, आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, नर्मदापुरम् होशंगाबाद, मध्यप्रदेश।

७. २० से २७ अक्टूबर-**योग-शिविर**, सम्पर्क : ०१४५-२४६०१६४

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

॥ ओ३म्॥

योग-साधना शिविर

(दि. १६ से २३ जून २०१३। १६ जून को शाम ४ बजे तक पहुँचना है।)

आपके मन के किसी कोने में साधना करने की इच्छा बीज रूप में अंकुरित हो रही हो, अपने सर्वश्रेष्ठ जीवन को वेद एवं ऋषियों के आदर्शानुकूल ढालना चाहते हों, विधेयात्मक एवं सृजनात्मक जीवन चाहते हों, अपने मन को पवित्र बनाने की इच्छा रखते हों, वैदिक साधना-पद्धति को जानना समझना चाहते हों, वैदिक सिद्धांतों को समझना चाहते हों या अपने को वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में समर्पित करने की अभिलाषा रखते हों तो यह शिविर आपको आपके चिंतन के अनुरूप उचित दिशानिर्देश एवं उत्तम अवसर प्रदान करेगा।

शिविरार्थियों को पूर्ण लाभ मिल सके एतदर्थ अनुशासन में चलना नितांत आवश्यक होगा। शिविर के दिनों में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह का पालन एवं मौन के निर्धारित समय में मौन रहना अनिवार्य होगा। शिविर के पूरे काल में साधक को पत्र दूरभाष आदि किसी भी प्रकार से बाह्य संपर्क निषेध है। ऋषि उद्यान के अंदर ही निवास करना होगा। समाचार-पत्र पढ़ने, आकाशवाणी सुनने, दूरदर्शन देखने की अनुमति नहीं है। धूम्रपान, तम्बाकू या अन्य किसी भी प्रकार के मादक द्रव्य का सेवन निषिद्ध रहेगा।

जो साधक इन नियमों तथा शिविर की दिनचर्या को स्वीकार करें वे मंत्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क ५००-१००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था उपलब्धता व पूर्व सूचना के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बरतन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएं। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएं अन्यथा यहां भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुंचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएं साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जाता है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबंधी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अंतिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, शुभकामनाओं के साथ।

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

Web Site :- www.paropkarinisabha.com : मार्ग : **E.mail address:- psabhaa@gmail.com**

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

कुछ तड़प-कुछ झड़प

-राजेन्द्र जिज्ञासु

डॉ. धर्मवीर जी का सम्पादकीय-फरवरी प्रथम २०१३ का धर्मवीर जी का सम्पादकीय अत्यन्त बोधवर्द्धक, प्रेरक तथा विचारोत्तेजक था। सामान्य सम्पादकीय पाठकों तथा स्वाध्यायशील विद्वानों, सबने सर्वत्र इसकी प्रशंसा की। कुछ लोगों में इससे हलचल तो मची, परन्तु वे अंधविश्वास से मुक्त होने की इच्छा व क्षमता ही नहीं रखते। उनकी मन:स्थिति ठीक उस भँवरे सरीखी है जो अपने स्वजातीय बन्धुओ से बिछड़ कर गन्दगी के ढेर पर बैठी मक्खियों के समूह में मिलकर मल खाने लग गया। अब वाटिका की फुलवाड़ी में पुष्पों की सुगंधि का आनन्द व नहीं ले अब वाटिका की फुलवाड़ी में पुष्पों की सुगंधि का आनन्द वह नहीं ले पाता था और न ही खिले हुए फूलों का उसे कोई आकर्षण रहा।

हमारे संघी बन्धुओं की वैचारिक दशा इस समय बड़ी दयनीय है। संघ परिवार की एक पुस्तिका 'संघ और चिन्तन' तथा स्वर्गीय आप्टे जी लिखित डॉ. हेडगेवार जी की जीवनी में अवतारवाद विषयक उनके मामा की घटना संघियों को नहीं सुहाती। अब तो तोगड़िया जी हों अथवा महामना भागवता सब तिलकधारी अंधविश्वासों की रक्षा करना ही हिन्दुत्व सेवा समझते हैं। श्री आचार्य धर्मेन्द्र जी का कथन एक कठोर सत्य है कि डॉ. हेडगेवार के आदर्श समर्थ गुरु रामदास तथा छत्रपति शिवाजी संघ को नहीं सुहाते। अब गुरुजी के विवेकानन्द संघियों के प्रेरणास्रोत हैं। धर्मवीर जी ने विवेकानन्द जी की परस्पर विरोधी और हिन्दू घाती घटनायें तथा विचार कण देकर संघ का हिन्दुत्व का दर्पण उनके सामने रख दिया है। कई पाठक चाहते हैं कि इस सम्पादकीय को ट्रैक्ट रूप में छापकर लाखों की संख्या में जाति प्रेमी व्यक्ति व संस्थायें वितरित करें। मेरा सुझाव है कि इसकी पृष्ठ संख्या ३६ अथवा ४८ कर दी जावे। श्री आचार्य धर्मेन्द्र जी ने चलभाष पर अपनी उत्कट इच्छा यह जताई है कि डॉ. धर्मवीर जी इस विषय पर २०० से २५० पृष्ठों तक की एक सुन्दर पुस्तक लिखें। अब मेरा मत यह बना है कि दो पुस्तकें ही जावें। एक छोटी और दूसरी बड़ी। परोपकारी परिवार दबाव बनाकर यह कार्य शीघ्र करवा डाले।

स्वामी विवेकानन्द जी की दो घटनायें-स्वामी विवेकानन्द जी के जीवन की कई घटनायें तो अत्यन्त प्रेरणाप्रद तथा अनुकरणीय हैं। मैं भी उन्हें सुनाया करता हूँ परन्तु उनके जीवन के प्रेरक प्रसंग वेद, शास्त्र, धर्म संस्कृति विरोधी विचारों व घटनाओं की परतों के नीचे दब चुकी हैं। संघियों में आर्ष अनार्ष का भेद करने वाली ऊहा नहीं। करें तो क्या करें? केवल हिन्दू-हिन्दू कहने से तो देश, धर्म, संस्कृति व जाति की रक्षा तो हो नहीं सकती। स्वामी श्री विवेकानन्द जी के श्री सत्येन्द्र मूजमदार लिखित विवेकानन्द चरित के पृष्ठ ४१९ को हम आगे उद्धृत करते हैं। यह ग्रन्थ कई भाषाओं में रामकृष्ण मिशन ने प्रकाशित प्रचारित किया है।

लिखा है:-"होमाग्नि के सम्मुख योगासन पर बैठे हुए विवेकानन्द महामाया के ध्यान में मग्न होने वाले थे। उसी समय सामने के टूटे हुए मन्दिर को देखकर उनके मन में विचार हुआ कि लोग क्या अपने बाहुबल द्वारा उन्हें नहीं रोक सकते थे? यदि मैं उस समय उपस्थित होता तो प्राणों की बाज़ी लगाकर माता के मन्दिर की रक्षा करता, किसी भी तरह पवित्र मन्दिर का नाश न होने देता।"

"पर सहसा उन्होंने देववाणी सुनी अपने कान से सुना कि जगज्जननी सस्नेह भर्त्सना के साथ कह रही है **यदि मुसलमानों ने मेरा मन्दिर विध्वस्त कर प्रतिमा को अपवित्र कर भी दिया है, तो इससे तेरा क्या? तू मेरी रक्षा करता है या मैं तेरी रक्षा करती हूँ?"**

अब राम मन्दिर का प्रस्ताव पारित करवाने वाले श्री भागवत जी तथा सिंघल जी इस देववाणी की व्याख्या सब हिन्दुओं को न सही, अपने स्वयं सेवकों को तो समझा दें। फिर लिखा है कि अगले दिन स्वामी जी ने संकल्प किया कि मैं भीख माँगकर भी उस मन्दिर के संस्कार का संकल्प पूरा करूंगा, परन्तु फिर देववाणी हुई-"जननी ने कहा, यदि मेरी इच्छा हो तो क्या मैं सात मंजिल वाला सोने का मन्दिर इसी मुहूर्त में तैयार नहीं कर सकती हूँ? मेरी इच्छा से ही यह मन्दिर भग्न हो कर पड़ा हुआ है।" क्या इस प्रकार के विचारों से राष्ट्र का पतन नहीं होता? इस विवेकानन्द की देववाणी को सत्य मानें, तो फिर सब टूटे हुए मन्दिरों के लिये आक्रमणकारियों को दोष क्यों देना, यह तो इच्छा थी।

एक दूसरा प्रसंग देना भी लाभप्रद रहेगा। स्वामी श्री विवेकानन्द जी लाहौर पधारे। साथ में दो गोरे भक्त सेवा के लिये थे। तब स्वामी रामतीर्थ वहाँ कॉलेज में प्राध्यापक थे। आपने स्वामी विवेकानन्द जी को अपने गृह पर ठहराया। स्वामी रामतीर्थ का सम्पूर्ण परिवार तो दृढ़ शाकाहारी था। उनका अमेरीका से लौटा संन्यासी अतिथि न केवल मांसाहारी ही था, अपितु वह एक दिन के लिये भी बिना मांसभक्षण के नहीं रह सकता था। प्रो. राम बड़ी उलझन में फंस गये कि अब क्या करें? तब आपका एक भतीजा आपके पास रहता था। उसने स्वामी रामतीर्थ की जीवनी उर्दू में लिखी थी और 'ओ३म्' पत्रिका दिल्ली ने प्रकाशित की थी। उसमें स्वामी राम के भतीजे ने लिखा है कि जब संन्यासी अतिथि ने प्रतिदिन अपनी रुचि के सामिष भोजन की माँग रखी, तो प्रो. राम ने अपने भतीजे से

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

कहा कि घर में तो हम माँस बना नहीं सकते। तुम प्रतिदिन बाजार जाकर कहीं किसी होटल से इनके स्वाद के लिये इनकी रुचि का माँस ला दिया करो। वह लिखता है कि मैं यह सेवा करता रहा। क्या संघ परिवार की सन्तों की धर्मसंसद के सब सन्त किसी साधु द्वारा अपनी इच्छा के भोजन की माँग व हठ को हिन्दुत्व का आदर्श मानते हैं? पाठकवृन्द भी इस घटना पर विचार करें।

महर्षि के जीवन चरित-लेखन का यज्ञ-ऋषि भक्तों, इतिहास प्रेमियों तथा देश-धर्म प्रेमी जनता को यह सूचना देते हुए हमें अत्यन्त गौरव, हर्ष तथा सन्तोष होता है कि श्रद्धेय लक्ष्मण जी आर्योपदेशक द्वारा रचित मुकम्मिल जीवन चरित्र महर्षि दयानन्द का हमारे द्वारा अनूदित व सम्पादित कार्य अब पूर्णता की ओर अग्रसर है। एक भाग तो छप चुका है। ऋषि भक्त उसके विमोचन करने का कार्यक्रम बना चुके हैं। दूसरे भाग की मुद्रण प्रक्रिया आरम्भ हो चुकी है। इसका विमोचन ऋषि मेला पर अजमेर में होगा। इस भाग के शेष कार्य को धीमी गति से पूरा करने का एक विशेष प्रयोजन है। गत दो वर्षों से इस कार्य में प्रतिदिन आठ से दस घण्टे देते हुए हमें एक अलौकिक आनन्द की अनुभूति हो रही है। पत्र व्यवहार तो दो वर्ष से बन्द सा है। बस यही कार्य सर्वस्व बना हुआ है। ऋषि जीवन के लिये देश-भर में नित्यप्रति चलभाष से कई गुणी विद्वानों से विचार विमर्श, पूछताछ करनी पड़ती है। ग्यारह फरवरी को एक सर्वथा नई खोज के बारे में विद्वानों व कृपालुओं से चलभाष पर ही एक सौ रुपये व्यय हो गये। डॉ. वेदपाल जी, श्रीयुत सत्येन्द्र सिंह जी आर्य, श्री यशपाल जी आर्य मेरठ, डॉ. धर्मवीर जी, प्रिय अनिल आर्य तथा डॉ. अशोक आर्य जी आदि कई कृपालुओं से इसी संबन्ध में बातचीत करने में लगा रहा। इस ग्रन्थ के कार्य में चलभाष से कितना काम लिया, यह हर कोई अनुमान नहीं लगा सकता। ऋषिबोध पर्व पर इसी ग्रन्थ के आधार पर तथा इसकी सम्पादकीय टिप्पणियों की सहायता से परोपकारी के पाठकों को कुछ नई और विशेष सामग्री देते हैं।

सन् १८८० में ऋषिवर मुजफ्फरनगर से देहरादून जाते हुए सहारनपुर जंक्शन पर कुछ समय के लिये रुके थे। इस स्टेशन पर स्वल्प समय में कई भक्त आपके दर्शनार्थ आये और कई महत्त्वपूर्ण घटनायें घटीं। कुछ लेखकों ने इन घटनाओं का उल्लेख तो किया है, परन्तु घटनाओं का स्रोत नहीं लिखा। केवल पं. घासीराम जी ने पृथक् शीर्षक देकर सहारनपुर की दो घटनायें दी हैं। श्रद्धेय लक्ष्मण जी ने कुछ अधिक विस्तार से तीन घटनायें (पृथक् शीर्षक देकर) दी हैं। इन घटनाओं का स्रोत जानने के लिये हमने कई वर्ष लगा दिये। बिना स्रोत के कोई भी अपने पांडित्य की धौंस जमाकर घटनाओं पर प्रश्न चिह्न लगा सकता है कि इसका प्रमाण क्या है? यह कहाँ लिखा है। सर्वप्रथम सन् १९१२ में श्री महाशय कृष्ण जी के साप्ताहिक 'प्रकाश' उर्दू के दीपमाला वाले विशेषाङ्क में नगीना जनपद बिजनौर के नहर विभाग के जिलादार श्री हरबंसलाल जी गुप्त ने अपने संस्करणों को **प्रकाशित करवाते** हुए दो घटनाओं का अनावरण किया। **वह अपने दस-बारह मित्रों के संग** स्टेशन पर ऋषि के दर्शनार्थ गये थे। वह इन घटनाओं के प्रत्यक्षदर्शी साक्षी थे।

पं. लेखराम जी वाले जीवन-चरित्र में ये सामग्री नहीं है। पण्डित जी का हरबंसलाल जी से सम्पर्क ही न हुआ। लक्ष्मण जी ने घटनाओं के साथ स्रोत का उल्लेख नहीं किया। वैसे अपने प्राक्कथन में 'प्रकाश' के विशेषाङ्कों से लाभान्वित होने की बात तो लिखी है। प्रभु कृपा से हमने ये विशेषाङ्क सुरक्षित कर लिये। पूरा प्रमाण अब ग्रन्थ में दे दिया है। इन अङ्कों को अगली पीढ़ी तक सुरक्षित करने के लिये हम ये अलभ्य स्रोत परोपकारिणी सभा को सौंप देंगे।

हमारे कार्य में भी प्रूफ पढ़ने में कुछ असावधानी तथा अन्य कारणों से कुछ न्यूनतायें पाठक पायेंगे, यथा-पहले भाग में एक स्थान पर संवत् की बजाय 'सन्' शब्द छप गया है। प्रूफ पढ़ते समय यह चूक पकड़ी न जा सकी।

पं. लेखराम के ग्रन्थ की विशेषतायें हमने सन् १९५०-१९५१ में कॉलेज में पढ़ते समय आर्यसमाज के सबसे लोकप्रिय पत्र 'आर्य मुसाफिर' के सम्पादक शास्त्रार्थ महारथी महाशय चिरञ्जीलाल जी प्रेम से पूछी थीं। आपने कहा कि इस ग्रन्थरत्न की विशेषता यह है कि पं. लेखराम जी ने अपने ग्रन्थ में घटना की जानकारी देने वाले एक-एक स्रोत का उल्लेख किया है। यही बात एक बार आर्यसमाज नयाबांस में ठाकुर अमरसिंह जी के चचेरे भाई ठाकुर शिवराज सिंह ने मेरे साहित्य के बारे में ऐसे कही थी, "आपने पं. लेखराम जी की शैली अपनाकर जीवनियाँ लिखकर भारी उपकार किया है। आपने घटना बताने वाले एक-एक व्यक्ति का नाम साथ दिया है।"

कई लेखकों ने ऋषि जीवन लिखते हुए अपने-अपने पोथे के आरम्भ में पं. लेखराम जी के ग्रन्थ के दोष दर्शाने में अपनी विद्वत्ता तथा अंग्रेजी के ज्ञान का रोब जमाया है। पं. लेखराम जी ने मित्र विलास, भारत मित्र, हिन्दी प्रदीप, शोलाय तूर, नसीम, नीति प्रकाश, कोहेनूर, बरादरे हिन्द, आर्य दर्पण, आर्य समाचार, देशहितैषी, भारत सुदशा प्रवर्त्तक आदि पत्रों का संग्रह करके माथापच्ची न की होती, तो '**अहंकार पूजा**' करने वाला कोई भी लेखक महर्षि के जीवन पर एक भी पृष्ठ न लिख पाता।

इन महापुरुषों से तो स्वामी सत्यानन्द जी ही कहीं ऊंचे निकले जिन्होंने सन् १९५५ में दयानन्द मठ दीनानगर में पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के सामने श्री स्वामी सोमानन्द जी के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा, "मैंने तो पं. लेखराम जी के आधार पर अमुक घटना लिखी है।"

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

नये नये प्रमाण-'वैज्ञानिक शोध' के नाम पर नये-नये भ्रम उत्पन्न करने वालों के मिथ्या लेखों का प्रतिवाद करके सत्य इतिहास का प्रकाश करते हुए हमने 'प्रकाश' में ऋषि-दर्शन करने वाले कई सुयोग्य तथा प्रतिष्ठित महानुभावों यथा-शीतलप्रसाद जी जिला शाहजहाँपुर, श्री ज्योतिस्वरूप जी लीडर प्रधान आर्यसमाज देहरादून, रायसाहेब चन्द्रिकाप्रसाद त्रिपाठी मुम्बई के ऐतिहासिक लेख खोजकर उनके प्रकाश में भ्रम भञ्जन करते हुए नई-नई घटनाओं को इस ग्रन्थ में पिरो दिया है यथा-मैनपुरी के सदर-उल-सदूर का नाम '**मिर्जा आबिद अली बेग**' था। पं. लेखराम जी तथा लक्ष्मण जी ने यह नाम और उनसे जुड़ा प्रसंग सर्वथा ठीक-ठीक दिया है। अब कोई अपने वैज्ञानिक शोध के मिथ्या अभिमान में उन्हें '**मिर्ज़ा अहमद अल बेग**' बनाने का आग्रह करे, तो यहाँ इतिहास-शास्त्र क्या कर सकता है। श्री शीतल प्रसाद जी ने एक शताब्दी पूर्व अपने संस्मरण में लिख दिया था कि उ.प्र. सभा के एक पूर्व प्रधान बाबू सुन्दरलाल जी ने उन्हें मैनपुरी की घटनायें सुनाते हुए उसका नाम '**मिर्ज़ा आबिद अली बेग**' बताया था। इतने प्रत्यक्षदर्शियों की साक्षी पर कोई नया नाम गढ़कर इतिहास प्रदूषित करे, तो फिर सच्चाई तो माथा पकड़कर रोएगी और छाती पीटेगी।

अलीगढ़ की वह यात्रा-पं. लेखराम जी ने अलीगढ़ से लिखा गया ऋषि का एक पत्र अपने ग्रन्थ में दिया है। यह पत्र २१ नवम्बर १८८० को लिखा गया था। इससे स्पष्ट है कि ऋषि उस दिन अलीगढ़ में थे, परन्तु पं. लेखराम जी की पकड़ में भी यह तथ्य नहीं आया। इस पत्र का प्रकाश सर्वप्रथम पं. लेखराम जी ने ही किया। पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक ने इस ओर ध्यान दिया। मैं महर्षि की इस अलीगढ़ यात्रा की पुष्टि के अन्य प्रमाण खोजता रहा। ऋषिभक्तों को यह जानकर हर्ष होगा कि अभी-अभी तत्कालीन पत्रों के पृष्ठ उलटते-पुलटते एक पत्र में इसके प्रबल और कुछ-कुछ विस्तृत प्रमाण हमें मिल गये हैं। इस ग्रन्थ में अलीगढ़ की इस यात्रा को अलग तीर्थ के रूप में हमने दे दिया है। इसी पत्र में '**अलीगढ़ आदि नगरों**' शब्दों पर भी विचार करना होगा। हमारा विचार है कि ठाकुर मुकन्दसिंह जी, ठाकुर गोपाल सिंह जी ऋषिवर को छलेसर भी लेकर गये होंगे। उनके पास साधन थे। अनुरोध करके ले गये होंगे। मेरा इसके लिये कोई आग्रह नहीं, परन्तु '**आदि नगरों**' इन दो शब्दों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। विद्वान् मेरे मत पर जो प्रतिक्रिया देंगे, उसका स्वागत किया जावेगा।

एक और बात पर भी हम यहाँ विचार करना चाहेंगे। श्री पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक ने इस पत्र पर भी टिप्पणी चढ़ाते हुए यह लिखा है कि "**यहाँ कुछ शब्द बदले हुए हैं**"। पूज्य मीमांसक जी ने मूल-पत्र फर्रुखाबाद में देखकर उद्धृत किया है। अन्वेषक-गवेषक पूज्य मीमांसक जी की टिप्पणी का अर्थ यह न लेवें कि पं. लेखराम जी ने कुछ शब्द घटाये या बढ़ाये हैं। पं. लेखराम जी ने कोई प्रक्षेप नहीं किया। उनका ग्रन्थ उर्दू में था, सो पत्र की रंगत उर्दू हो गई या यह कहिये कि पत्र थोड़ा उर्दूमय बना दिया। हमने पं. लेखराम जी के दिये पाठ का पत्र-व्यवहार में दिये गये पाठ से शब्दश: मिलान किया है। टिप्पणी के कारण भ्रान्ति का चक्कर न चल पड़े, सो निवेदन कर दिया है।

ऋषि का व्यवहार-उनकी महानता-महापुरुषों के आचरण का, व्यवहार का अनुचरण करना सदाचार माना गया है। जीवन में सुख-शान्ति तथा उन्नति की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों तथा युवकों को अत्यन्त गम्भीरता से महापुरुषों के आचरण पर विचार करके उनका अनुचरण करना चाहिये। ऋषि के बोधपर्व पर हम यहाँ महर्षि दयानन्द जी के सद्व्यवहार की एक घटना देते हैं। प्राय: धर्माचार्य अपने आसन व सिंहासन के पास किसी को फटकने तक नहीं देते। हमने अपना आसन सिंहासन साथ लिये-लिये नगर-नगर, डगर-डगर घूमते धर्माचार्यों को देखा है। जिनकी चरणरज से घर और ग्राम पवित्र हो जाते हैं, वे दूसरे आसन व पीठ को अपवित्र मानकर उस पर बैठकर प्रवचन नहीं करते।

ऋषि दयानन्द जी १८८०-१८८१ में आगरा पधारे। आप वहाँ तख़्त पर बैठकर व्याख्यान दिया करते थे। व्याख्यान देने के पश्चात् तख़्त से उतरकर नीचे भूमि पर बैठ जाया करते थे। यदि उनके पश्चात् भी कोई बोलने का इच्छुक होता था, तो वह भी उसी तख़्त पर बैठकर अपने विचार दे सकता था। यह श्री स्वामी जी की विनम्रता तथा बड़प्पन का एक उदाहरण है।

हो पीड़ा किसी को तो तड़पा करूँ मैं-१६ मई १८८१ को अजमेर के गंज में नये द्वार के बाहर आग लग गई। २२ मई को द्वार के बाहर स्वामी जी महाराज का व्याख्यान था। आपने अपने श्रोताओं को प्रेरित करके धन संग्रह किया और पीड़ितों की सहायता करने का एक उदाहरण उपस्थित किया। इसी को कहते हैं-

हो पीड़ा किसी को तो तड़पा करूँ मैं।
लगन कोई ऐसी लगा दीजियेगा।।

प्रयाग के कुम्भ पर दुर्घटना-परोपकारी सदैव अदूरदर्शी देशवासी जनता को नदियों, नालों, कबरों, मन्दिरों व तीर्थों पर भारी भीड़ के कारण होने वाली दुर्घटनाओं से बचने की सीख देता रहता है। कौन सा मेला व कौन सा कुम्भ स्नान है, जिस पर हर बार हिन्दू यात्री नहीं मरते? आतंकवादियों को इन्हें मारने की क्या आवश्यकता? कृपालु जी महाराज के थाली वितरण में मरने वालों की संख्या का आज तक ठीक-ठीक पता नहीं चला। किसी शंकराचार्य, किसी हिन्दुत्ववादी संगठन के नेता ने इन मौतों पर चार अश्रुकण नहीं टपकाये। वोट बैंक की राजनीति करने वाले अंधविश्वास पर चोट क्यों करें? हिन्दुओं के मूर्ख नेता, सन्त, महन्त तो मुक्ति पाने की होड़, मन्नतें मांगने की होड़,

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

बिना सत्कर्म किये, बिना जप-तप, सेवा संयम, यम-नियम के पालन के बिना पुण्य प्राप्ति की लालसा तथा दुष्कर्म करके पाप क्षमा करवाने के लिए तीर्थ यात्राएं व नदी-स्नान की होड़ का श्रद्धा व आस्था का लहरें लेता सागर बताकर अंधविश्वास को और प्रोत्साहन देते रहते हैं।

कुम्भ पर मरने वालों पर अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए देश-जाति के लिये भाई परमानन्द सरीखा दर्दीला रखने वाले आचार्य धर्मेन्द्र जी ने प्रात: प्रभुभजन से निवृत्त होते ही इन मौतों पर अपनी वेदना प्रकट करते हुए कहा कि गीता, उपनिषद्, वेद, सन्त तुकाराम जी आदि सब यह उपदेश देते हैं कि सत्कर्मों के बिना मुक्ति नहीं मिल सकती। ये अखाड़ों वाले, धर्म संसद वाले सभी नदी स्नान से मुक्ति की प्राप्ति मानते हैं। कांवड़िये भी प्रतिवर्ष मरते हैं। यातायात में विघ्न पड़ता है।

मौनी अमावस्या की महिमा गाने-बताने वाले यह बतायें कि कौन सा दिन ईश्वर का बनाया नहीं। ज्योतिष (फलित) के महान् प्रचारक संरक्षक डॉ. मुरली मनोहर जोशी १५०० वर्ष पहले का पुरातत्त्व का कोई प्रमाण दें कि देश में किसी राजा, महाराजा, पंचायत, गुरुकुल, मन्दिर की आधार शिला अथवा निर्माण किसी शुभदिन अथवा मुहूर्त को देखकर सम्पन्न हुआ। यदि किसी नगर या नदी विशेष पर मरने से मोक्ष मिलता है, तो फिर यह भारतवर्ष पुण्यभूमि कैसे हुआ? क्या इन तीर्थों के अतिरिक्त ईश्वर ने सारी पापभूमि बनाई है? ऋषि दयानन्द की तीर्थ की परिभाषा का व्यापक प्रचार करने का अभियान छेड़ा जावे।

'प्रकाश' का जन्म-इन दिनों हमने एक से अधिक लेखों में यह पढ़ा है कि प्रसिद्ध आर्यनेता महाशय कृष्ण जी ने सन् १९०६ में 'प्रकाश' साप्ताहिक को जन्म दिया। हम जानते हैं कि यह भ्रान्ति किस ज्ञानी लेखक ने प्रसारित की है। अनुमान से, कल्पना से इतिहास लेखन नहीं किया जा सकता। हमने आर्य पत्रों पर तथा महाशय कृष्ण जी की चर्चा करते हुए अपनी कई पुस्तकों में लिखा है कि प्रकाश का जन्म सन् १९०५ में हुआ था। जिसको हमारे बार-बार लिखने पर भी कुछ सन्देह हो तो वह आकर हमारे पास प्रकाश के अंकों को देखकर सत्य का साक्षात कर ले। प्रकाश का जन्म आर्यसमाज के लिये एक ऐतिहासिक घटना है, इसलिये हमें इस विषय में लिखने पर विवश होना पड़ा। **''मैं न मानूँ''** की रट लगाने से कोई काले को गोरा तथा झूठ को सच नहीं बना सकता।

यह भूल कैसे हुई?-श्री आचार्य सोमदेव जी ऋषि उद्यान किसी अंक में शीघ्र ही डॉक्टर बालकृष्ण जी की पुस्तक 'ईश्वरीय ज्ञान' की समीक्षा करेंगे। इस पुस्तक में उन्हें एक-दो भूलें हुई लगी हैं। मूल पुस्तक में कुछ सामग्री छपने से रह गई लगती है, ऐसा इस पुस्तक के विद्वान् सम्पादक तथा प्रकाशक श्री अजय को लगा। पुराने पहले संस्करण की मैंने यथा सम्भव पूरी जाँच की, परन्तु सामग्री ही छपने से छूट गई, सो कहाँ मिलती। डॉ. वेदपाल जी तथा प्रकाशक वहाँ टिप्पणी देना भूल गये। हमने डॉ. बालकृष्ण के कई लेख तथा साहित्य पढ़ा है। उनके द्वारा कोल्हापुर से छपी Aryan ideals आदि कई उत्तम पुस्तकें पढ़ रखी हैं। वह जीव को अनादि ही मानते थे। जीव ईश्वर द्वारा रचा नहीं गया। इस पुस्तक के एक वाक्य से सिद्धान्त-विरुद्ध ऐसा आभास मिलता है। इस भूल का कारण हमने ऊपर दे दिया है।

आर्य साहित्य प्रकाशन की समस्यायें-श्री कुशलदेव जी ने अपने निधन से पूर्व मुझे बड़ी वेदना से कहा कि आर्यसमाज में लेखक को गम्भीर खोजपूर्ण ग्रन्थों के प्रूफ़ अपने आप ही पढ़ने पड़ते हैं, परिणाम यह है कि कोई न कोई अशुद्धि रह ही जाती है। परोपकारिणी सभा के कार्यों का विस्तार हो रहा है। सारे कार्य धर्मवीर जी, सत्यजित् जी पर तो लादे नहीं जा सकते। ऋषि के पत्र-व्यवहार के प्रूफ पढ़ने के लिये मान्य सत्येन्द्र सिंह ने अपनी स्वेच्छा से इस कार्य के लिये सेवायें देकर एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। मैंने कई गुरुकुलों को प्रेरणा दी कि अपने गुरुकुलों से कुशल कम्प्यूटरकार भी पैदा करो। किसी ने मेरी सुनी ही नहीं।

आज आर्यसमाज में प्रकाशन की ऐसी समस्यायें हैं कि कभी मन में यह विचार आता है कि यदि श्री महेन्द्र सिंह आर्य कम्प्यूटरकार तथा मान्य बन्धु रमेशकुमार जी सभाओं, संस्थाओं व विद्वानों के साहित्य प्रकाशन का बोझा न उठायें, तो फिर आर्यसमाज के प्रकाशन के सब कार्य चौपट हो जायें। आर्यसमाज के इतिहास में साहित्य प्रकाशन को एक आन्दोलन बनाने वालों में मुनिवर गुरुदत्त जी, पं. लेखराम जी, महात्मा मुंशीराम जी, स्वामी दर्शनानन्द जी, पं. तुलसीराम स्वामी, पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के नाम अविस्मरणीय रहेंगे। वीर राजपाल, ला. गोविन्दराम, श्री भारतेन्द्र नाथ तथा स्वामी ओमानन्द भी हमारे इतिहासपुरुष हैं। इन्होंने जो कार्य किया है वे सब जानते हैं।

इस समय जो सेवायें निष्काम भाव से श्री रमेश कुमार जी दे रहे हैं, उसका दूसरा उदाहरण मिलना कठिन ही नहीं, असम्भव है। आर्य साहित्य प्रकाशन की समस्यायें आज गिनायें तो कहाँ तक? कई नये-नये युवक बातें तो बहुत बनाते हैं, योजना बनाकर धीमी गति से ही सही, परन्तु निरन्तर कार्य करें। धुन के धनी बनकर समय दें तो बहुत ठोस कार्य हो सकता है। चाहियेवाद से ऊपर उठकर, सुझावों का उपहार देने की बजाय हम सब लक्ष्य निश्चित करके सहयोग देने का यश लूटें।

-वेद सदन, अबोहर।

मनुष्यों को जो अग्नि सोने, जागने, जीने तथा मरने का हेतु है, उसका युक्ति से सेवन करना चाहिये।-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.१४।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

जीवन की नींव

-डॉ. नरेश चेतन भम्भानी

पिताजी-पिताजी आँखें खोलो।
देखो सूरज आया लाली दिखलाया॥
कहता है मुझमें सब रोगों का सुख।
नहीं तो छोड़ दूंगा अपना रुख॥ १॥

फिर कहोगे सुस्ती आई।
बीमारी लाई परेशानी छाई॥
डॉ. देखो भली प्रकार।
फिर होता नहीं इलाज॥ २॥

वैद्य, हकीम सबने देखा।
पैसा खोया समय गवाया॥
जोर-जोर से जूते खाये।
दर-दर भटके फिर भी न हुआ इलाज॥ ३॥

फिर खुली जो आँखें।
प्रात: उठना बच्चों ने सिखलाया॥
एक, दो, तीन करके नाम जपाया।
फिर खुली हवा में टहलाने लाया॥ ४॥

चेहरे ने मुस्कान दिखलायी।
शरीर में रौनक आयी॥
बिन पैसे बिन भटके।
स्वास्थ्य पाया॥ ५॥

खोया उसे भी पाया।
बस जिसने देखा उसने पूछा।
जिसने चाहा उसने किया॥ ६॥

जब जवानी छायी।
सब भूल पड़ा॥
जवानी डूबी स्वास्थ्य गवाया॥ ७॥

अब क्या करूं समझ में आया ठोकर खाकर।
बच्चा भी बड़ा हो आया उसकी आदत बिगड़ गई॥
जीवन खोया दोस्त हाथ जोड़ धर भागे।
आधा हुआ फिर कोई न आया॥ ८॥

बड़ी परेशानी सबने सबक सिखाया।
फिर भगवान् को चिल्लाया॥
छटपटाया कुछ मुँह खोला अब क्या होगा?॥ ९॥

समझ में आया फिर बचपन की याद आई।
जीवन की नींव छाई डॉ. नरेश ने सुरक्षा सिखाई॥
बच्चे की कहानी याद आई॥ १०॥

सब मिल के बोले पिताजी-पिताजी आंखें खोलो।
मेरी भी आदतें सही हो पायीं।
फिर नहीं करूंगा ढिलाई।

-२० आदर्श नगर,अजमेर।
चलभाष-९२६१५१४८६८

सत्यार्थप्रकाश सम्बन्धी सुझाव विषयक विज्ञप्ति

परोपकारिणी सभा द्वारा सन् १९९२ में संशोधित सत्यार्थप्रकाश के रूप में जब ३७वां संस्करण प्रकाशित हुआ तो उससे पूर्व 'परोपकारी' पत्रिका के सन् १९८७ के अक्टूबर-नवम्बर अंक में एक सूचना प्रकाशित करके उसके लिए सभी आर्यजनों से सुझाव मांगे गये थे, किन्तु तब किसी भी व्यक्ति का कोई सुझाव प्राप्त नहीं हुआ था। उसके उपरान्त ही परोपकारिणी सभा ने औचित्य के आधार पर उस संस्करण का प्रकाशन करने का निर्णय लिया था।

परोपकारिणी सभा आगामी संस्करण के प्रकाशन से पूर्व विद्वानों से व स्वाध्यायी आर्यजनों से सत्यार्थप्रकाश के सम्पादन के विषय में पुन: लिखित सुझाव आमन्त्रित करती है। **सुझाव तर्क, प्रमाण और तथ्यों पर आधारित तथा संक्षिप्त होने चाहिएं।** परोपकारिणी सभा आवश्यकता होने पर विशेषज्ञ व्यक्तियों को संवाद हेतु भी सादर आमन्त्रित करेगी। उनकी दक्षिणा आदि का समस्त व्यय सभा वहन करेगी।

सभी आर्यजनों से अनुरोध है कि वे अपने सुझाव परोपकारिणी सभा को यथाशीघ्र प्रेषित करें।

डॉ. वेदपाल (संयोजक)
चलभाष-०९८३७३७७९३८

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अतिथि यज्ञ के होता
(१ से १५ मार्च २०१३ तक)

१. दीनदयाल गुप्त, कोलकाता, २.डॉ. प्रहलाद भाई ठक्कर, अहमदाबाद, ३. दयानन्द वर्मा, गुलाबपुरा, अजमेर, ४. यश गोयल, अजमेर, ५. धर्मवीर शास्त्री, भिवानी, हरियाणा, ६. सौरव पारीक व वीना पारीक, जयपुर, ७. सुभाष चन्द्र त्यागी, अहिबाबाद, गाजियाबाद, ८. अशोक यादव, नागपुर, ९. ब्रजेश कुमार आर्य, दिल्ली, १०. अमित माहेश्वरी व सुमन माहेश्वरी, गोरेगांव, मुम्बई, ११. देवमुनि, अजमेर, १२. डॉ. वेदप्रकाश नारंग, करनाल, हरियाणा, १३. एम.एल. गोयल, अजमेर, १४. अशोक कुमार आर्य, ब्यावर, अजमेर, १५. डॉ. वेद नारंग, करनाल, हरियाणा, १६. स्वास्तिकम चैरेटिबल ट्रस्ट, अमरावती, महाराष्ट्र, १७. रजनीश कपूर, पीतमपुरा, नई दिल्ली, १८. रंजन हांडा, पीतमपुरा, नई दिल्ली, १९. सत्यनारायण मजूमदार, राइचुग, कर्नाटक, २०. मुमुक्षु मुनि, अजमेर, २१. कौशल्या देवी, अजमेर, २२. बालेश्वर मुनि, अजमेर, २३. गोविन्द कुमार शर्मा, किशनगढ़, २४. कृष्ण गोपाल मलहोत्रा, उत्तराखण्ड, २५. जगमोहन कश्यप, उत्तराखण्ड, २६. सुशीला सोनी, गुलाबपुरा, २७. माता जी, अजमेर, २८. स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर, २९. देवदत्त तनेजा, अजमेर, ३०. टंकारा यात्री आर्य समाज, जनकपुरी, दिल्ली, ३१. सीतादेवी, अजमेर, ३२. मन्त्री आर्यसमाज, सोनीपत, हरियाणा, ३३. राजकुमार आर्य, रोहतक, हरियाणा।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला जो परमार्थ हेतु संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगत अतिथियों को निःशुल्क वितरित किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता
(१ से १५ मार्च २०१३ तक)

१. ब्रजभूषण गुप्ता, पंचकूला, २. बिरदीचन्द गुप्त, जयपुर, ३. प्रेमलता शर्मा, अजमेर, ४. रितिवज लाल, अहमदाबाद, ५. गगन आर्य, रोहतक, ६. कमला पंचोली, अजमेर, ७. उर्मिला उपाध्याय, अजमेर, ८. राधेश्याम, अजमेर, ९. कैप्टन चन्द्रप्रकाश त्यागी, रुड़की, हरिद्वार, १०. डॉ. वेदप्रकाश, करनाल, हरियाणा, ११. पण्डित राम चरण राव, हैदराबाद, १२. मुमुक्षु मुनि, अजमेर, १३. तुलसी बाई, अजमेर, १४. पुष्पा लोढा, अजमेर, १५. बलेश्वर मुनि, अजमेर, १६. चन्द्रदेव गुप्ता, नसीराबाद, अजमेर, १७. मयंक कुमार, अजमेर, १८. मदन गोपाल कथोरिया, दिल्ली, १९. बलजीत, पानीपत, २०. देवराज आर्य, पानीपत, २१. सावित्री व सुलोचना, अजमेर, २२. अनिल शर्मा, अजमेर, २३. श्रीनिवास बाहेती, अजमेर।

-परोपकारिणी सभा, अजमेर।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या - 091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

कासीत्प्रमा०-मन्त्र में मूर्तिपूजा नहीं

–डॉ. वेदपाल

किन्हीं सज्जन (राजीव शर्मा) ने फेसबुक पर अधोलिखित मन्त्र उद्धृत कर-"मूर्तिपूजा वेद विरुद्ध नहीं है" प्रतिपादित किया है। मन्त्र को अपने पक्ष का समर्थक सिद्ध करने के लिए मन्त्र का अर्थ (इसे अनर्थ कहना ही उचित होगा) प्रस्तुत करते हुए पुरजोर प्रयास किया है। इस प्रकार के मन्त्रार्थ कर्त्ताओं के लिए ही-"बिभेत्यल्पश्रुताद् वेदो मामयं प्रहरिष्यति" कहा गया। किसी भी भाषा का भाषान्तर करने के कुछ सामान्य नियम हैं। वेद का अर्थ/अनुवाद/भाषान्तर के लिए भी निश्चित नियम हैं। अन्य बहुत सारी योग्यताओं के साथ ही-प्रसंगानुकूल अर्थ किया जाना भी एक शर्त है। यहां अन्य मानकों को छोड़कर केवल प्रकरण को सामने रखने मात्र से ही इनका प्रतिज्ञा-वाक्य (मूर्तिपूजा वेद विरुद्ध नहीं है) पूर्णत: अप्रासंगिक तथा निस्सार सिद्ध हो जाता है।

ऋग्वेद दशम मण्डल के एक सौ उनतीस तथा एक सौ तीस दो सूक्त सृष्टि विषयक हैं। इन दोनों सूक्तों के चौदहों मन्त्रों का देवता 'भाववृत्तम्' है। प्रथम (एक सौ उनतीस) सूक्त नासदीय नाम से प्रसिद्ध भी है। इसमें सृष्टि-उत्पत्ति से पूर्ववर्ती अवस्था वर्णित है। सूक्त एक सौ तीस में भी सात मन्त्र हैं। इसी सूक्त का तृतीय मन्त्र विवेच्य है-

कासीत्प्रमा प्रतिमा किं निदानमाज्यंकिमासीत् परिधि: क आसीत्।
छन्द: किमासीत् प्रउगं किमुक्थं यद्देवा देवमयजन्त विश्वे।।

लेखक ने 'आज्यं' से पूर्ववर्ती 'किं निदानम्' इस प्रश्न के अनन्तरवर्ती पद 'आज्यं' को उत्तर रूप में व्याख्यात कर दिया है। जबकि 'आज्यं' के अनन्तर 'किमासीत्' प्रश्नवाचक पद है। इसी प्रकार 'छन्द:' को भी उत्तर बना दिया है। इनके इस अर्थ का सबसे बड़ा दोष है कि-आज्यं तथा छन्द: दोनों को उत्तर मानने से इनके अनन्तरवर्ती 'किमासीत्' पद साकांक्ष रह जाते हैं तथा लेखक ने सम्पूर्ण अर्थ में साकांक्ष पद को अव्याख्यात ही छोड़ दिया है। जबकि 'आज्यं किमासीत्' तथा 'छन्द: किमासीत्' इस रूप में यह व्याख्येय हैं। साथ ही 'आज्यम्' का अर्थ-"प्राकय्यम् (यै: प्रतिमा निर्माणं कर्तुं शक्यते तैरेव काष्ठ पाषाण मृदादिभि: कुर्यात्)" पूर्णत: कपोलकल्पनाश्रित है। इसी प्रकार-प्रउगं, परिधि: आदि पदों के अर्थ हैं। किसी भी भाषा के पारिभाषिक शब्दों के अर्थ उसी भाषा के व्याकरण आदि के सहारे किये जाते हैं।

लेखक क्या इसी स्वच्छन्द रीति से अन्य धार्मिक ग्रन्थ कुरआन, गुरुग्रन्थ साहिब, बाईबल आदि के अर्थ कर सकते हैं? सौ बार नहीं, लाख बार चाहकर भी ऐसी व्याख्या नहीं कर पाएंगे। बुद्धिमान् मनुष्य जहां पग धरते हुए भी डरते हैं, यदि कोई वहां स्वच्छन्द उछल-कूद मचाए, तो उसे क्या कहा जा सकता है? अस्तु, वस्तुत: सृष्टि-उत्पत्ति प्रसंग होने से यहां-सृष्टि विषयक ज्ञान प्रश्नोत्तर रूप में दिया गया है। प्रकृत मन्त्र में सात प्रश्न हैं-

१. **प्रमा**-यथार्थ ज्ञान क्या है?
२. **प्रतिमा**-प्रतिमीयन्ते सर्वे पदार्था यया सा-जिससे सब पदार्थ मापे जा सकें, ऐसा माप-तौल का साधन अथवा उसकी उपमा-उपमानभूत क्या है?
३. **निदान**-कारण क्या है?
४. **आज्य**-सारभूत क्या है?
५. **परिधि**-समग्रविश्व का पृष्ठावरण, जिस प्रकार कोई रेखा किसी पदार्थ को आवेष्टित करती है, उसी प्रकार सम्पूर्ण जगत् को घेरने का साधन क्या है?
६. **छन्द**-आच्छादक क्या है?
७. **प्रउगम्-उक्थ**-ग्रहोक्थ स्तोतव्य क्या है?

इन सभी प्रश्नों का उत्तर है-'यद्देवां देवमयजन्त विश्वे' अर्थात् विश्वेदेवा यत्-यं देवम् अयजन्त-सभी विद्वान् जिस देव-परमेश्वर का यजन-उपासना करते हैं, वही परमेश्वर इस जगत् की प्रमा आदि है।

अन्त में हम विनम्रता पूर्वक यही कहना चाहेंगे कि यदि लेखक ने यजुर्वेद ३२.३ (न तस्य प्रतिमाऽअस्ति०) मन्त्र के उव्वट एवं महीधर भाष्य देखे होते, तब उन्हें प्रतिमा का अर्थ मूर्ति करने का साहस नहीं होता। लेखक द्वारा उसके किए (मनघड़न्त) अर्थों को न मानने वालों को रावण, कंस, शिशुपालादि के समकक्ष कहना ("मानने वालों को तो इतने से ही मान लेना चाहिए, न मानने को तो साक्षात् भगवान् को भी मुश्किल होगी मनवाने में, प्रमाण रावण, कंस, शिशुपालादि को कहां मना पाये"।) स्यात्, अपने आपको राम-कृष्ण के तुल्य प्रतिपादित करना है-ऐसी आत्ममुग्धता इन्हीं को मुबारक।

सम्पर्क-३०/२, सै. ४, जागृति विहार, मेरठ, २५०००४, चलभाष-९८३७३७७९३८

मनुष्यों को योग्य है कि उत्तम विद्वानों के प्रसङ्ग से उत्तम-उत्तम विद्याओं का संपादन कर अपनी इच्छाओं को पूर्ण करके, इन विद्वानों का सङ्ग और सेवा सदा करना चाहिये।-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.५।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

''.....मेरे हृदय से आर्यसमाज नहीं निकलेगा''।

-रामनिवास 'गुणग्राहक'

राजेन्द्र 'जिज्ञासु' का साक्षात्कार-

श्रद्धेय 'जिज्ञासु' जी का अमृत महोत्सव मनाये जाने की भागदौड़ के चलते उनके साक्षात्कार का विचार मेरे मस्तिष्क में आया। उस ऐतिहासिक अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका में इसे देना चाहता था, लेकिन कार्याधिक्य के कारण ऐसा न हो सका। स्मारिका के सम्पादन के सम्पूर्ण उत्तरदायित्व के अतिरिक्त अमृत महोत्सव के कार्यक्रम की सैद्धान्तिक रूपरेखा बनाने जैसे जोखिम भरे कार्यों के अतिरिक्त कई छोटे-बड़े कामों में ऐसा उलझा कि साक्षात्कार की मूलप्रति कागजों के ढेर का अज्ञात अंश बन गई। अभी कुछ दिन पूर्व सौभाग्यवश मिल गई तो सोचा कि अब विलम्ब नहीं होना चाहिए। दि. १६.१०.२००७ को अबोहर 'जिज्ञासु' जी के घर पर लिये एक साक्षात्कार को शब्दश: परोपकारी के सुधी पाठकों की सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है।

गुणग्राहक-आर्यसमाज आज संगठन और सिद्धान्त दोनों स्तरों पर अभूतपूर्व संकट से जूझ रहा है। इसका स्वर्णिम युग आपके मानस-पटल पर है, वर्तमान दशा आपके सामने है। इस उत्थान-पतन पर आप क्या कहना चाहेंगे?

जिज्ञासु जी-उचित तो यह था कि आर्यसमाज की उत्तमता का प्रभाव समाज के जन-जीवन व राष्ट्र की राजनीति पर पड़ता, हुआ इससे उलटा। देश के जन-मानस की दुर्बलताएँ तथा राजनीति के दाँव-पेच लेकर आने वालों ने आर्यसमाज को इस पतन के पथ पर लाकर डाल दिया।

देखो, मुसलमानों ने अपने एक कथित उपासना-गृह (मस्जिद) के नष्ट होने पर भारत, पाकिस्तान व बांग्लादेश में कोहराम मचा दिया था, सैकड़ों मन्दिर तोड़ डाले थे, लेकिन हम आर्यों के उपासना गृहों (आर्यसमाज मन्दिरों) को तथाकथित आर्यों ने व्यापार-केन्द्र (विद्यालय) बनाकर नष्ट कर दिया। हमारा धर्मभाव बिल्कुल आहत नहीं हुआ। यह पतन की पराकाष्ठा नहीं तो क्या है? विद्यालय बन चुके आर्यसमाज के मन्दिरों में कहीं धार्मिकता दिखती है क्या? इतना ही नहीं, हमारे आज के संन्यासी गण भी पतन-पथ पर हैं। पहले के संन्यासी वेद-प्रचार के लिए जीते थे। आज के संन्यासी को मठ, मन्दिर व आश्रम बनाने से ही अवकाश नहीं मिलता। सच में इनका जीवन गृहस्थियों जैसा भी नहीं रहा। वे कमाकर तो खाते हैं, इनका तो सब कुछ माँगा हुआ है। जिस समाज (जनता) से माँग कर लाते, खाते, मौज उड़ाते हैं, उसके लिए देते क्या हैं, यह कौन सोचेगा?

गुणग्राहक-आर्यसमाज के संगठन व नेतृत्व के सम्बन्ध में आप क्या कहना चाहेंगे?

जिज्ञासु जी-आर्य नेताओं की अखण्ड निष्ठा केवल और केवल आर्यसमाज के प्रति ही हो, अन्यत्र नहीं। जैसे स्वामी वेदानन्द जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के बारे में कहा करते थे कि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी सिर से पैर तक आर्यसमाजी हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी कांग्रेस में रहे, हिन्दु महासभा में भी रहे, मगर सिद्धान्तों से कभी समझौता नहीं किया। समझौते की बात पर दोनों दल छोड़ दिये। एक बार महाशय कृष्ण जी के सामने 'ऑल इण्डिया न्यूज पेपर कॉन्फ्रेन्सज' के अध्यक्ष बनने का प्रस्ताव रखा। उन्होंने आर्यसमाजी होने के कारण कुछ दुविधाओं को देखते हुए अस्वीकार कर दिया। आज हमारे नेताओं में यह बात नहीं दिखती, वे बाहर की निष्ठाएँ लेकर आर्यसमाज में काम करते हैं।

गुणग्राहक-साहित्य को समाज का प्राण कहा जाता है। आर्यसमाज के सिर पर साहित्य के द्वारा भारतीय जन-मानस को सत्य-पथ, वैदिक मार्ग दिखलाने का महान् उत्तरदायित्व है। हमारा साहित्य क्या इस दिशा में सफल कहा जा सकता है?

जिज्ञासु जी-साहित्य की बड़ी दयनीय स्थिति है। पहले हमारे पास एक-एक विषय के कई-कई अधिकारी विद्वान् होते थे। यही नहीं, हमारे पास कई ऐसे विद्वान् थे जो कई विषयों के पण्डित थे। पण्डित उदयवीर जी दर्शन, वेद, व्याकरण व इतिहास के मर्मज्ञ थे। युधिष्ठिर जी मीमांसक दर्शन, वेद, व्याकरण, संस्कृत साहित्य व गृह्य-सूत्रों के प्रकाण्ड पण्डित थे। स्वामी वेदानन्द जी १४-१५ भाषाओं के विद्वान् थे। पं. चमूपति तीन भाषाओं के कवि, चार भाषाओं के लेखक थे। पं. त्रिलोकचन्द जी शास्त्री ७ (सात) भाषाओं के विद्वान् और तीन भाषाओं के कवि थे। उपाध्याय जी चार भाषाओं के लेखक थे।

इस्लाम के प्रसिद्ध विद्वान् मौलवी सनाउल्ला ने बद्दो मल्ही आर्यसमाज में बोलते हुए कहा था कि जब मैं आर्यसमाज में बोलता हूँ तो लगता है किसी विश्वविद्यालय में बोल रहा हूँ। हमारा साहित्य योग्य व प्रामाणिक विद्वानों द्वारा लिखा जाना चाहिए। युवकों के लिए रोचक, प्रेरक साहित्य लिखा जाए। विद्यालयों में शिविर लगाकर धर्मशील स्वभाव के निष्ठावान् युवक तैयार किये जाएँ। आज शिविरों के लिए विद्यालयों से बच्चों को बुलाकर कोई लाभ नहीं होना। विद्यालयों में जाकर प्रचार किया जाए, अधिकतम युवकों तक अपनी बात पहुँचाई जाए। उनमें से धर्म व परोपकार में रुचि रखने वाले युवकों को ढूँढकर लाएँ और उन्हें शिविरों में तैयार करें।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

गुणग्राहक–वर्तमान परिस्थितियों में अगर कोई कुछ करना चाहे तो प्राथमिकताएँ क्या होनी चाहिएँ?

जिज्ञासु जी–आर्यसमाज आज बौने दिमाग वालों के हाथों में आकर अपना लक्ष्य भटक गया है। पद–प्रतिष्ठा व सुख–सुविधा से आगे किसी को कुछ भी दिखाई नहीं देता। राष्ट्र की दुरवस्था चीख–चीखकर कह रही है कि देश को महर्षि दयानन्द के विचारों की व आर्यसमाज की जितनी आवश्यकता आज है, उतनी पहले कभी न थी। आज के चतुर्दिक पतन में केवल महर्षि के मन्तव्य ही किनारे लगा सकेंगे। अधूरे चिन्तन से काम बनने वाला नहीं है, आज विज्ञान का जितना बोलबाला है–पाखण्ड उससे चार कदम आगे बढ़ा हुआ है। ऐसे में धर्म की पाखण्ड रहित, विज्ञान–सम्मत व्याख्या देना केवल आर्यसमाज के लिए ही सम्भव है। स्थिति तो इतनी दयनीय हो गई है कि विज्ञान व धर्म दोनों ही मानव–मस्तिष्क की संवेदनाओं को कुचल रहे हैं। हृदय के सद्भाव सूखते जा रहे हैं, कौन है जो मानव के विचारों व भावनाओं को सही दिशा दे सके?

आर्यसमाज की बात करें तो यहाँ भवन ऊँचे उठ रहे हैं, भावनाएँ नीचे गिर रही हैं। हमें आर्यों की भावनाओं को ऊँचा उठाने का काम प्राथमिकता से करना चाहिए। ऊँची भावनाएँ कैसी होती हैं, एक उदाहरण देखिए–हैदराबाद के एक आर्य को मुसलमानों ने पीट–पीटकर अधमरा कर दिया। वे उसे मुसलमान बनाना चाहते थे और उसके रोम–रोम में आर्यसमाज रचा–बसा था। मतान्ध मुसलमानों ने उसके मुँह में बलात् गाय का माँस ठूँस दिया। बलपूर्वक उसके मुँह में गौ–माँस ठूँस कर कहा कि अब तू मुसलमान हो गया। पाठकवृन्द! विचार करके देखें कि बलात् गौ–माँस ठूँसकर ये लोग उसे धर्म–भ्रष्ट कर रहे थे या धार्मिक बना रहे थे। वे उसे बार–बार कहते कि अब तो मुसलमान हो गया। वह धर्मशील पुरुष उनकी पैशाचिक प्रताड़ना से पागल हो गया और पागलपन में वह कहता फिरता था–'अरे तुम मुझे कुछ भी खिलादो, मेरे अन्दर से आर्यसमाज नहीं निकलेगा''।

है कोई माई का लाल ऐसे धर्म दिवानों के हृदय से आर्यसमाज को निकालने वाला। ऐसी लगन और तड़प वाले आर्यसमाजी कहीं नहीं मिलते। संन्यासियों की बात करें तो उन्हें भी ऊँचे आदर्श स्थापित करने चाहिएं। संग्रह की वृत्ति छोड़कर त्याग भावना से काम करना चाहिए। स्वामी अभेदानन्द जी, जो सार्वदेशिक सभा के प्रधान भी रह चुके हैं, (वे एक आर्य चपरासी को संध्या करते हुए देखकर आर्य बने थे) कहा करते थे कि भारत भर में मेरे नाम जमीन का एक टुकड़ा भी नहीं है। ऐसे अनेक उदाहरण पुराने संन्यासियों के हैं। यदि ऐसे संन्यासी व धर्म के धुनी आर्यजन पैदा किये जाएँ, तो क्या कुछ नहीं किया जा सकता। **गांव–सूरौता, पत्रालय अवार,**

जनपद–भरतपुर, चलभाष–९९७११७१७९७

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल–दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत–अस्वीकृत होने की सूचना चल–दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **–संपादक**

मनुष्यों को उचित है कि जिस वेद के जानने वा पालन करने वाले परमेश्वर ने वेदविद्या, पृथिवी, जल, वायु और सूर्य्य आदि शुद्धि करने वाले पदार्थ प्रकाशित किये हैं, उसकी उपासना तथा पवित्र कर्मों के अनुष्ठान से मनुष्यों को पूर्ण कामना और पवित्रता को संपादन अवश्य करना चाहिये।–**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ–४.४।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

वरिष्ठ भजनोपदेशक पं. ओम्प्रकाश वर्मा के रोचक व प्रेरक संस्मरण

उनकी बोलती बन्द हो गई

–इन्द्रजित् देव

मुझे कई बार पीपाड़ नगर (जोधपुर) के आर्यसमाज द्वारा आमन्त्रित किया गया है। वहाँ की जिस घटना का वर्णन मैं करने लगा हूँ, वह सन् १९७१ अथवा १९७२ की है। तब वहाँ जो उत्सव मनाया गया था, उसमें आर्यसमाज के तत्कालीन सुविख्यात विद्वान् व संन्यासी पधारे हुए थे, जिनमें श्री आनन्द स्वामी जी, श्री आचार्य कृष्णा जी (=स्वामी दीक्षानन्द जी) तथा श्री डॉ. भवानीलाल भारतीय के नाम मुझे स्मरण आ रहे हैं। प्रतिदिन वहाँ हवन, उपदेश तथा भजन होते थे।

वह कार्यक्रम सात दिनों तक चला था। इसमें भिन्न-भिन्न मतों-सम्प्रदायों के असत्य सिद्धान्तों का खण्डन तथा वैदिक मान्यताओं का डटकर मण्डन किया जाता रहा। अन्तिम दिन अपने कार्यक्रम में मैंने जैनमत द्वारा सच्चे ईश्वर को न मानने व अपने २४ तीर्थंकरों को ही ईश्वर मान लेने की चर्चा की। मैंने शास्त्रार्थ महारथी श्री पं. रामचन्द्र देहलवी जी व जैनाचार्य स्वामी कर्मानन्द जी के मध्य पानीपत में हुए एक रोचक शास्त्रार्थ का पूरा विवरण सुनाते हुए कहा-स्वामी कर्मानन्द पहले आर्यसमाज में थे, परन्तु दूषित आचरण के कारण उन्हें आर्यसमाज से निकाल दिया गया था। कालान्तर में वे जैनमत में चले गए थे। पानीपत के उक्त शास्त्रार्थ में एक प्रसंग में उन्होंने पं. रामचन्द्र देहलवी से पूछा-"आप स्वामी दयानन्द को प्रमाण मानते हो, परन्तु उन्होंने तो सृष्टि-नियम के विरुद्ध "सत्यार्थप्रकाश" के द्वितीय समुल्लास में यह लिखा है कि 'छः दिन तक नवजात बालक को प्रसूता का दूध पिलावें। पश्चात् धायी पिलाया करे, परन्तु धायी को उत्तम पदार्थों का खान-पान, माता-पिता करावें। जो कोई दरिद्र हों, धायी को न रख सकें, तो वे गाय वा **बकरे** के दूध में उत्तम औषधि, जो कि बुद्धि, पराक्रम, आरोग्य करने हारी हों, उनको शुद्ध जल में भिजा (=भिगा कर) ओटा, छान के दूध के समान जल मिलाके बालक को पिलावें।" "सत्यार्थप्रकाश" के किसी संस्करण में भूल से यह प्रकाशित हुआ था कि नवजात को 'बकरे' का दूध प्रसव के छठे दिन के पश्चात् पिलाया जाए। वस्तुत: 'बकरी' का दूध ही महर्षि ने लिखा है। पं. जी ! कृपया बताइए कि बकरे भी कभी दूध देते हैं?"

शास्त्रार्थ सुनने-देखने वालों में पानीपत के निकटस्थ ग्राम कुञ्जपुरा का एक मुस्लिम ग्वाला भी बैठा था। उसका एक बकरा (अपवाद रूप में) दूध देता था। पं. रामचन्द्र देहलवी ने उस बकरे को आगामी दिन शास्त्रार्थ-सभा में उपस्थित कर देने का वचन देकर शास्त्रार्थ स्थगित करा लिया। आगामी दिन कुञ्जपुरा के उक्त बकरे को उपस्थित कर तथा भरी सभा में बकरे का दूध निकालकर स्वामी कर्मानन्द जी को दिखा दिया। इस प्रकार आर्यसमाज ने शास्त्रार्थ जीत लिया तथा जैनमत पराजित हो गया था। यह शास्त्रार्थ पानीपत में लाला सोहनलाल जी के संयोजकत्व में आयोजित हुआ था, जो तत्कालीन आर्यसमाज के मन्त्री थे।

मैं "सत्यार्थप्रकाश" के आधार पर जैनमत के कुछ सिद्धान्तों की चर्चा करके बोला-जैनी कहते हैं कि जीव ही ईश्वर बन जाता है। वे अपने तीर्थंकरों को ही केवल मुक्ति प्राप्त और परमेश्वर मानते हैं। वे यह भी कहते हैं कि अनादि व अन्य परमेश्वर कोई नहीं है। मैंने प्रश्न किया कि सभी तीर्थंकर देहधारी थे तथा कोई भी देहधारी बिना माता-पिता के जन्म ले नहीं सकता। तीर्थंकरों के माता-पिता को किसने जन्म दिया? फिर उनके भी माता-पिता किनसे उत्पन्न हुए? इत्यादि अनवस्था आवेगी।

पूर्वोक्त शास्त्रार्थ का वर्णन तथा अन्य बातें नगर में फैल गईं। तत्रस्थ जैनियों ने भी सुना तथा कार्यक्रमोपरान्त मेरे अपने घर में चले आने पर उन्होंने श्री रामगोपाल शॉलवाले, मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा श्री वर्मा (जिनका पूरा नाम मैं भूल गया हूँ) मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान को मेरे विरुद्ध शिकायत पत्र लिखा "आप भी ओम्प्रकाश वर्मा से सीधा पत्र-व्यवहार करें।" इसके बाद जैनियों ने मुझे शिकायत-पत्र भेजा, जिसमें यह धमकी दी गई थी कि हम आपके विरुद्ध न्यायालय में अभियोग दायर करेंगे।

उत्तर में मैंने लिखा-"मैंने जो भी कहा था, वह तथ्यों पर आधारित है तथा आप "सत्यार्थप्रकाश" का द्वादश समुल्लास पहले पढ़ लें। फिर भी यदि आपकी शिकायत रहेगी, तो आप किसी भी न्यायालय में मुझ पर अभियोग दायर कर दें। मैं अपने कथन पर स्थिर हूँ तथा यदि आपने मुझ पर अभियोग चलाया, तो मैं न्यायालय में "सत्यार्थप्रकाश" प्रस्तुत करके आपके मत की पीपाड़ में न कही गई मान्यताओं को भी रख दूँगा।"

तदोपरान्त जैनियों का कोई पत्र आज तक मुझे नहीं मिला, न ही मुझ पर किसी भी प्रकार का अभियोग ही चलाया गया है।

-चूना भट्ठियाँ, सिटी सेन्टर के निकट,
यमुनानगर, हरियाणा।

मनुष्यों को जो अग्नि सोने, जागने, जीने तथा मरने का हेतु है, उसका युक्ति से सेवन करना चाहिये।-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.१४।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

गोमांस का बढ़ता निर्यात और दूध संकट

-मनमोहन शर्मा

भारत से गोमांस का निर्यात जिस तरह से बेतहाशा बढ़ रहा है उसको समक्ष रखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ कृषि विभाग ने अपनी ताजा रिपोर्ट में चेतावनी दी है कि अगर निर्यात की यही गति रही तो अगले पांच वर्षों में भारत में दूध का भीषण संकट पैदा हो जाएगा। बच्चे एक-एक बूंद दूध के लिये तरसेंगे और देश को विदेशों से भारी मात्रा में मिल्क पाउडर एवं अन्य उत्पाद आयात करने होंगे। राष्ट्रीय मीडिया भले ही इस आने वाले संकट के बारे में मूक बना हुआ है मगर क्षेत्रीय समाचार-पत्रों ने इस गंभीर समस्या की चर्चा जरूर शुरू कर दी है। देश के प्रमुख गोमांस उत्पादक क्षेत्र उत्तरप्रदेश में किसानों ने इस आने वाले खतरे का अहसास होने के बाद से देश से गोमांस के निर्यात को रोकने की मांग शुरू कर दी है। खास बात यह है कि मांग करने वाले संगठन 'गोमांस निर्यात रोको' के अधिकांश सदस्य मुसलमान किसान एवं कसाई हैं। इस संगठन की ओर से पश्चिमी उत्तर प्रदेश के दस जिलों में गत तीन महीने में जोरदार प्रदर्शन किए गए हैं और सरकार को गोमांस के निर्यात पर तुरंत रोक लगाने के समर्थन में ज्ञापन भी दिए गए हैं। सहारनपुर जिला के इस संगठन के संयोजक मोहम्मद इरफान का कहना है कि यदि गौवंश और भैंसों के मांस का निर्यात सरकार ने तुरन्त नहीं रोका तो देश के लोगों को न खाने को गोश्त मिलेगा और न ही बच्चों को पीने के लिए दूध। गोमांस के अंधाधुध निर्यात से आने वाले कुछ वर्षों में देश में दुग्ध उत्पादन में भीषण संकट आने की संभावना है।

बड़ी अजीब बात है कि सरकार इस संकट के बारे में बेखबर बनी हुई है। योजना आयोग ने बारहवीं पंचवर्षीय योजना में २७ हजार करोड़ की लागत से देश में अति आधुनिक पशु वधशालाएं स्थापित करने का सुझाव दिया है। सरकारी सूत्रों के अनुसार भारत में डेढ़ सौ से अधिक मार्डन पशु वधशालाएं स्थापित करने के लिए बैंक २७ हजार करोड़ का ऋण देने के लिए तैयार हैं। बड़ी अजीब बात है कि विदेशी मुद्रा कमाने के लोभ में भारत सरकार संविधान की धज्जियाँ उड़ाते हुए गौवंश और भैंसों के मांस के निर्यात को बढ़ावा देने में पूरे जोर से जुटी हुई है। भारतीय संविधान के मार्गदर्शक निर्देशों में सरकार का यह कर्त्तव्य बताया गया है कि वह दुधारू पशुओं की नस्ल का संवर्द्धन करने का प्रयास करे। हाल में अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय की ओर से एक पुस्तिका प्रकाशित की गई जिसमें स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए गोमांस के भक्षण की खुलेआम वकालत की गई है।

जहां तक गौवंश और भैंसों के गोश्त के निर्यात का संबंध है उसके आंकड़े काफी चौंकाने वाले हैं। २००९ में भारत ने ६ लाख टन गोमांस का निर्यात किया था जो कि २०१० में बढ़कर सवा सात लाख, २०११ में १२ लाख और २०१२ में १५ लाख टन तक पहुंच गया। चालू वर्ष में इसके २१ लाख टन पहुंच जाने की संभावना है। गोमांस के निर्यातक देशों में २००७ में भारत का स्थान १५ वें नम्बर पर था जो कि २००९ में बढ़कर ५ वें स्थान पर पहुंच गया। २०१२ में भारत का स्थान दूसरा था और २०१३ में भारत विश्व भर में सबसे ज्यादा गोमांस निर्यातक देश बन गया है। परंपरागत रूप से आस्ट्रेलिया, ब्राजील और अमरीका कभी गोमांस के मुख्य निर्यातक देश हुआ करते थे मगर उन्होंने पशुओं की घटती हुई संख्या को देखते हुए गोमांस का निर्यात करना कम कर दिया है। भारत से गोमांस के निर्यात में जो भारी वृद्धि हुई है उसका एक कारण यह भी है हलाल ढंग से पशुओं को वध करने वाला भारत विश्व का एकमात्र देश है। यही कारण है कि विश्व भर के मुस्लिम देशों में भारतीय गोमांस की मांग में बड़ी तेजी से वृद्धि हो रही है। इसके अतिरिक्त दक्षिणी एशियाई देशों में भी भारत गोमांस का मुख्य निर्यातक देश बन गया है। उदाहरण के लिए मलेशिया में २०११ में जो गोमांस का आयात हुआ उसमें भारत का हिस्सा ८२ प्रतिशत था जबकि आस्ट्रेलिया का हिस्सा मात्र १३ प्रतिशत ही रह गया।

सरकारी सूत्रों के अनुसार देश में डेढ़ लाख से अधिक पशु वध शालाएं हैं जिनमें हर वर्ष १५ से २० करोड़ बड़े पशु जैसे भैंस, भैंसे और कटड़े के अतिरिक्त गाय, बैल, बछड़े, बछड़ियां वध किए जाते हैं। इनमें से डेढ़ सौ के लगभग बड़ी पशु वध शालाएं भी हैं जिनकी क्षमता प्रतिदिन सात हजार पशुओं का वध करने से लेकर २५ हजार पशु वध करने की है। देश में गोमांस का कारोबार दस हजार करोड़ से लेकर पंद्रह हजार करोड़ रुपए के बीच आंका गया है। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि आजादी के बाद बड़े पशुओं के वध में तेजी से वृद्धि हुई है। महात्मा गांधी ने एक बार कहा था कि यदि देश आजाद हुआ तो वे सबसे पहले गोवध पर पूर्ण प्रतिबंध लगाएंगे। आचार्य विनोबा ने गोवंश पर सम्पूर्ण प्रतिबंध लगाने के लिए आमरण अनशन तक किया था। खास बात यह है कि मुगल सम्राट बाबर ने अपने पुत्र हुमायूं को यह निर्देश दिया था कि हिन्दुओं की भावनाओं को देखते हुए देश भर में गोवध पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाए। इस बात की पुष्टि बाबरनामा से की जा सकती है। अकबर महान ने भी गोवंश के वध पर प्रतिबंध को जारी रखा।

अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर का एक फरमान

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आज भी लाल किला के संग्रहालय में देखा जा सकता है जिसमें उन्होंने सारे देश में गोवध पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने का हुक्म जारी किया था और यह घोषणा की थी कि गो का वध करने वाले को वही सजा दी जाएगी जो किसी इंसान के वध करने वाले को दी जाती है। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि इस देश के ८५ प्रतिशत हिन्दू गौ को माता का दर्जा देते हैं और उसके वध के खिलाफ हैं। पाठकों को याद होगा कि संत महात्माओं ने देश में गोवध पर प्रतिबंध लगाने के लिए तीन वर्ष तक निरंतर दिल्ली में सत्याग्रह किया था और ४५ हजार लोग जेल गए थे। मगर इसके बावजूद राष्ट्रीय स्तर पर सरकार गोवध पर प्रतिबंध लगाने को तैयार नहीं है। इस समय देश के केवल दस राज्य ऐसे हैं जिनमें गोवध पर प्रतिबंध है। हालांकि गैर दुधारू गायों, बैलों और बछड़ों के वध की अनुमति है। यह कड़वी सच्चाई है कि गोवंश पर जिन राज्यों में प्रतिबंध है वहां पर भी खुलेआम गोवंश का वध होता है। जहां तक भैंस की नस्ल का संबंध है, उसके वध पर देश के किसी भी राज्य में प्रतिबंध नहीं है। देश के एक प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. दस्तूर ने एक बार बड़ी कड़वी टिप्पणी की थी। उनका कहना था कि जो हिन्दू गोरक्षक होने का दावा करते हैं वही चंद सिक्के कमाने के लिए अपनी गोमाता को कसाईयों को बेच देते हैं। देश में गोशालाओं की हालत बेहद सोचनीय है। इनके लिए न तो सरकार के पास धन है और न ही बड़े-बड़े धनवान ही इस पुण्य कार्य के लिए दान देते हैं। नतीजा यह है कि इन गोशालाओं में जो वृद्ध गायें एवं बैल आदि भेजे जाते हैं उनमें से अधिकांश भूख-प्यास से तड़प-तड़पकर मर जाते हैं। देश में पशुओं के वध पर प्रतिबंध लगाना धार्मिक दृष्टि से तो जरूरी है आर्थिक कारणों से भी यह कम आवश्यक नहीं है। इस संबंध में जब भी देश में मांग उठती है तो छद्म सेकुलरवादी इसे नजर अंदाज कर देते हैं।

गोमांस के निर्यात का एक पक्ष बेहद महत्वपूर्ण है। कभी इस देश के किसान गायें और भैंसों को इसलिए पालते थे कि बैल और भैंसे हल चलाएंगे और बच्चों के लिए दूध भी प्राप्त होगा मगर जब से विश्व बाजार में इन पशुओं के मांस के दाम में भारी वृद्धि हुई है किसानों का सारा जोर अपने पशु धन को कसाईयों के हाथ बेचने पर है। इसका नतीजा यह हुआ है कि गाएं और भैंस की देशी नस्लों का नामोनिशान मिटता जा रहा है। कभी मुर्रा भैंस की नस्ल हरियाणा की शान हुआ करती थी। इस नस्ल की भैंसें ३५ से ४० किलो तक दूध दिया करती थी। रोहतक इन भैंसों के व्यापार का मुख्य केन्द्र होता था। अन्य प्रदेशों के व्यापारी इन भैंसो को भारी दामों पर खरीदकर ले जाते थे मगर जब ये भैंसे दूध देना बंद कर देती तो इन्हें कसाईयों के हाथ बेच देते थे। आज हरियाणा में मुर्रा नस्ल की भैंस ढूंढने से भी नहीं मिलती। यही स्थिति देशी गायों की नस्लों की भी है। शाहीवाल, लाल सिंधी, गीर, राठी, थारपारकर, कंगरेज एवं हरियाणा नस्ल की गायें दूध और मजबूत बैलों के लिए विश्वविख्यात थीं। धीरे-धीरे ये नस्लें कसाईयों की छुरियों की भेंट चढ़ती जा रही हैं। भारतीय कृषि वैज्ञानिकों ने अपनी देशी नस्लों को सुधारने का आज तक कोई प्रयास नहीं किया। उनका सारा जोर विदेशों से होलिस्टन और जर्सी नस्ल की गाय मंगवाने पर रहा है। इस नस्ल की गाएं दूध तो जरूर ज्यादा देती हैं, मगर वह भारतीय जलवायु को सहन नहीं कर पाती और एक-डेढ़ वर्ष के भीतर ही मर जाती हैं। इन विदेशी नस्लों का एक दोष यह भी है कि इनके बैल हलों में नहीं जोते जा सकते। विदेशी नस्लों के बैल के वीर्य से देशी नस्लों की गायों के कृत्रिम गर्भाधान का जो कार्यक्रम चलाया गया था वह पूर्णत: विफल रहा है। हमारा पशुधन नेस्तनाबूद हो रहा है मगर इसकी चिंता किसी को नहीं है।

सौजन्य-पंजाब केसरी, ११ मार्च, २०१३

आवश्यकता

१. आर्ष कन्या गुरुकुल के लिये-व्याकरणाचार्य एवं अन्य विषयों हेतु अध्यापिकाओं की आवश्यकता है। ब्रह्मचारिणी अथवा वानप्रस्थी स्त्रियों को प्राथमिकता।

२. आर्ष गुरुकुल के लिए आचार्य की एवं अन्य विषयों को पढ़ाने हेतु आवश्यकता है। ब्रह्मचारी अथवा वानप्रस्थी पुरुषों को प्राथमिकता। सभी प्रकार के उचित सुविधाओं का प्रबन्ध गुरुकुल की ओर से किया जाएगा।

३. दोनों गुरुकुलों में पाँचवी व छठी कक्षा के छात्र-छात्राओं के लिये प्रवेश मई से प्रारम्भ होगा।

सम्पर्क-आचार्य कृष्ण प्रसाद कौटिल्य, आर्यसमाज मन्दिर नवाबगंज, हजारीबाग, झारखण्ड (८२५३०१) ६५४६२६३७०६, ९४३०३०९५२५

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

महाघोटाला

-इन्द्रजित् देव

गंगा नदी जहाँ से आरम्भ होती है, वहां शुद्ध रूप में है। वह स्थान गंगोत्री है। लोग कहते हैं कि वह छोटा-सा स्थान है, जिसे छलांग लगाकर पार किया जा सकता है। ज्यों-ज्यों वह आगे बढ़ती है, वह फैलती व गहरी होती है, क्योंकि कई ग्रामों, कई नालों व कई नदियों का जल इसमें आकर मिल जाता है। हरिद्वार तक पहुँचकर यह विशाल रूप होता है। इन सबके जल में मल-मूत्र, पशुओं का गोबर, कारखानों का कचरा, मृतकों की अस्थियाँ, पशु-पक्षियों का मांस तथा न जाने और क्या-क्या अशुद्ध व प्रदुषित वस्तुएं आ मिलती हैं। इलाहाबाद में गंगा व यमुना भी मिलती हैं तथा उसका भी यही विवरण है। दोनों का मिलन महाप्रदुषण व महाविनाश का संगम है। बंगाल के हुगली नगर तक पहुँचकर तो इसका स्वरूप अतिप्रदूषित, अग्राह्य तथा उपेक्षणीय हो जाता है, परन्तु वहाँ के हिन्दू, वहाँ की गंगा में डुबकी लगाकर ''जय गंगा मैया की'' का नारा लगाकर स्वयं को धन्य मान लेता है। यह उसकी विवशता है। जल की गंगा की तरह वैदिक-धर्म व वैदिक मान्यताओं का भी यही इतिहास है। इनका आरम्भ एक अरब, छियानवें करोड़, आठ लाख, त्रेपन हजार वर्ष पहले हुआ। कालान्तर में अनेक ग्रन्थ, अनेक घटनाएं, अनेक श्लोक, अनेक दोहे, अनेक ग्रन्थ व पद लिखे गये व मूल ईश्वरीय विश्वासों, मान्यताओं व सिद्धान्तों में मिलते गए। आज हम इतिहास की हुगली के किनारे पर खड़े हैं, जहाँ यह निर्णय करना कठिन है कि शुद्ध वैदिक मान्यताएं कौन सी हैं, अशुद्ध मान्यताएं कौन सी हैं। गंगा के जल को शुद्ध करने की मांग उठ रही हैं व अरबों रु. का व्यय हो भी चुका है, परन्तु अभी तक एक प्रतिशत भी यह शुद्धि नहीं हुई। परिणामत: शुद्ध जल की इच्छुक प्रजा अशुद्ध जल को पीकर निर्वाह कर लेने को विवश है।

ज्ञान-गंगा में मिलावट के विषय में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ''उपदेश मञ्जरी'' के अष्टम प्रवचन में मनुस्मृति में प्रक्षेप को इन शब्दों में स्वीकार किया है-''जैसे ग्वाले लोग दूध में पानी डालते हैं, दूध को बढ़ाते हैं और मोल लेने वालों को फंसाते हैं, उसी प्रकार मानव धर्म-शास्त्र की अवस्था हुई है। उसमें बहुत से दुष्ट क्षेपक श्लोक हैं। वे वस्तुत: भगवान् मनु के नहीं हैं। यदि कोई कहे कि यह कैसे? प्रमाण यह है कि इन श्लोकों को मनुस्मृति की पद्धति से मिलाकर देखने से वे श्लोक अयुक्त दीखते हैं। मनु सदृश श्रेष्ठ पुरुष के ग्रन्थ में अपने स्वार्थ-साधन के लिए चाहे जैसे वचनों का डालना बिलकुल नीचता दिखाना है।''

१९३२ ईस्वी में जापान व चीन के मध्य हुए युद्ध में चीन की दीवार तोड़ी गई थी, तो उसमें से एक पेटी मिली थी, जिसमें चीनी भाषा में लिखी कई पाण्डुलिपियाँ मिली थीं, जो आज भी ब्रिटिश म्यूजियम में रखी हैं। उनमें एक पाण्डुलिपि में यह लिखा है कि भारत में 'मानव धर्म शास्त्र' (=मनुस्मृति) १२ सहस्र वर्ष पुराना ग्रन्थ है, जिसमें ६८० श्लोक हैं।'' इस लेख के विपरीत जो मनुस्मृति आज उपलब है, उसमें २६८५ श्लोक हैं। मनुस्मृति के समीक्षक श्री डॉ. सुरेन्द्र कुमार (गुड़गांव) के, अन्वेषण के अनुसार इनमें से केवल १२१४ श्लोक ही मनु ही के हैं, जबकि शेष १४७१ श्लोक मनु के पश्चात् के कई रचनाकारों ने विभिन्न अवसरों पर मिलाए हैं। इसका एक प्रमाण यह है कि मनुस्मृति में पर्दा-प्रथा का वर्णन है, परन्तु जब यह लिखी गई थी, तब वैदिक समाज व वैदिक मान्यताओं का साम्राज्य था। तब पर्दा-प्रथा का प्रचलन न था। सीता, सावित्री, पार्वती, द्रौपदी व शकुन्तला इसके प्रमाण हैं। मनु महाराज को वर्तमान जन्मना वर्ण-व्यवस्था का अपराधी मानकर स्वार्थी नेता उनकी निन्दा करते हैं व मनुस्मृति को सार्वजनिक रूप में फाड़ने अथवा जलाने का उपक्रम भी करते रहे हैं। इस ग्रन्थ में वर्ण-व्यवस्था का प्रतिपादन कर्मों के आधार पर उपलब्ध है। यही प्रतिपादन मूल ग्रंथ का अंश है, जबकि स्वार्थी व अज्ञानी लोग इसके प्रक्षिप्त अंशों के आधार पर मनु के विरोधी बने बैठे हैं। परिणामत: समाज में द्वेष व दूरियाँ व्याप्त हैं। समरसता का अभाव है। ''मनु का विरोध क्यों?'' शीर्षक से आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित व डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी द्वारा लिखित लघु पुस्तक ऐसे तथा कुछ अन्य, प्रक्षिप्त अंशों का परिचय कराती है।

सुकवि कालिदास के साहित्य में भी प्रक्षेप हुआ है। उनका एक ग्रन्थ है-''कुमार सम्भव'' जिसका अर्थ है-कुमार का जन्म। इसमें १७ सर्ग उपलब्ध हैं, परन्तु इनमें कालिदास विरचित सर्ग आरम्भिक केवल ८ ही माने जाते हैं। मल्लिनाथ की टीका उन ८ सर्गों तक ही है। 'विवरण' टीका के प्रणेता नारायण पाण्डेय के अनुसार कालिदास का लक्ष्य इस महाकाव्य द्वारा पार्वती द्वारा शिव के चित्त का आकर्षण प्रकट करना था, जो कार्तिकेय के जन्म का कारण बना। अत: अष्टम सर्ग में समागम के वर्णन के साथ ही महाकाव्य की समाप्ति मान लेना उचित है। अब अवशिष्ट ९ सर्ग किसी परवर्ती कवि ने जोड़े हैं। इन सर्गों में कालिदास की लेखनी का वैशिष्ट्य नहीं मिलता। इनकी भाषा शैली प्रथम ८ सर्गों की तुलना में हीन हैं। वस्तु निरुपण कालिदास जैसे महाकवि की विशेषता के अनुरूप नहीं तथा पुनरुक्तियां व अश्लीलता भी इनमें मिलती है। यह तथ्य प्रो. माधव वल्लभ त्रिपाठी ने अपनी पुस्तक ''संस्कृत

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

साहित्य का अभिनव इतिहास'' के पृष्ठ ९५, प्रथम संस्करण, २००५ में स्वीकार किया है। इससे सिद्ध है कि केवल धार्मिक व ऐतिहासिक ग्रन्थों में ही नहीं, अपितु साहित्यिक ग्रंथों में भी मिलावट हुई है।

पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी ने सन् १८७९ ईस्वी में एक आरती लिखी जो आज लगभग समूचे भारत में प्रचलित हो गई है। इसकी अन्तिम पंक्ति इस प्रकार है-''श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।'' आप उदयपुर के दुर्ग के बाहर स्थित जय जगदीश हरे मन्दिर में पत्थरों पर अंकित इसी रूप में पढ़ सकते हैं, परन्तु आज इस आरती की दो पंक्तियाँ अधिक मिलती हैं। आज कहीं अन्तिम पंक्ति इस प्रकार मिलती है-''कहत हरिहर स्वामी सब कुछ है तेरा'' तो कहीं यह दूसरी प्रकार से गाई जाती है-''कहत शिवानन्द स्वामी सब कुछ है तेरा।'' श्रद्धाराम फिल्लौरी की रचना में हरिहर स्वामी के शिष्यों ने अपने गुरु का नाम घुसेड़कर तथ्य के साथ खिलवाड़ किया, तो शिवानन्द स्वामी अथवा उनके शिष्यों ने तथ्य को बदलने का दुस्साहस किया। लोकैषणा के कारण २ व्यक्तियों द्वारा मूल आरती में मिलावट करने का यह ज्वलन्त उदाहरण है। किसी आर्यसमाजी सुकवि ने एक सुन्दर गीत लिखा था-

देखा न कोई देवता प्यारे ऋषि की शान का,
सिर पर सहीं मुसीबतें सोचा भला जहान का।

विस्तारभय से इसे पूरा न उद्धृत करके इसकी अन्तिम पंक्तियाँ हम उद्धृत करते हैं जो इस प्रकार हैं-

ब्रह्मा से लेकर जैमिनि तक करते रहे जिस काम को,
शैदा बनाया देश की वेदों के उस फ़रमान का।

मेरे नगर के एक दानी आर्य ने दान देकर सन्ध्या व हवन के मन्त्रों तथा कुछ भजनों को एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित व वितरित किया, तो मेरा ध्यान पुस्तक के उस पृष्ठ पर अटक गया, जिस पर उपरोक्त गीत पूरा छपा था। इस गीत के उपरोक्त ''ब्रह्मा से जैमिनि तक....'' शब्दों के स्थान पर मुझे ''बर्मा से जर्मनी तक करते रहे जिस काम को'' शब्द पढ़ने को मिले। जिस किसी ने इस पुस्तक के प्रूफ़ देखे व पढ़े होंगे, उसे वैदिक इतिहास व वैदिक मान्यताओं का तनिक भी ज्ञान न रहा होगा तथा उसने वर्तमान सृष्टि के प्रथम पूर्ण ऋषि ब्रह्मा जी तथा म.द. से पूर्व में अन्तिम हुए ऋषि जैमिनि के विषय में कुछ भी सुना-पढ़ा व जाना न होगा, परन्तु फिर भी उसे प्रूफ़ रीडिंग का कार्य दिया। यदि अज्ञान से किए इस बौद्धिक प्रदूषण को न रोका गया, तो इसका भयंकर परिणाम यह निकलेगा कि ऋषि ब्रह्मा व ऋषि जैमिनि के नाम गुम हो जाएंगे व महर्षि दयानन्द को बर्मा व जर्मनी का अनुयायी धीरे-धीरे कुछ लोग मानने लगेंगे।

शुद्ध वेदवाणी की सुरक्षा हेतु प्राचीन ऋषियों ने एक दुर्ग का निर्माण किया था, जिसका नाम रखा था-वेद चर्चन दुर्ग। इस विधि में वेद मन्त्रों के विकृत पाठ की आठ रक्षा-पंक्तियों की नियुक्ति की गई। इन्हीं पाठों ने वेद मन्त्रों में प्रक्षिप्त अंशों की मिलावट करने वालों से वेदमन्त्रों की पवित्रता को सुरक्षित रखा है। इस पर भी स्वार्थी व अज्ञानी पौराणिकों ने यजुर्वेद के (३२/३) मन्त्र को विकृत करने का प्रयत्न किया। उन्होंने 'न तस्य प्रतिमा अस्ति' को 'नतस्य प्रतिमा अस्ति' कर दिया जिसका अर्थ यह किया-नम्र रूप धारण करने वाले, उस ईश्वर की प्रतिमा है।'' इस प्रक्षेप पर मैसूर में एक एतिहासिक शास्त्रार्थ हुआ था, जिसमें क्रान्तिकारी आर्य संन्यासी स्वामी काव्यानन्द जी ने इस मन्त्रांश को 'न तस्य प्रतिमा अस्ति' के शुद्ध रूप में ही रखा। उन्होंने पूर्वोक्त पाठों के द्वारा मन्त्र को प्रस्तुत करके यह सिद्ध किया कि 'न' उदात्त है, 'तस्य' स्वरित है तथा उदात्त व स्वरित की सन्धि नहीं होती। उदात्त व उदात्त की, अनुदात्त व अनुदात्त की एवं स्वरित व स्वरित की सन्धि हो सकती है। सवर्णी होने पर तो उदात्त व अनुदात्त की सन्धि हो सकती है। इसलिए यह पाठ 'नतस्य' न होकर 'न तस्य' ही है।

पूरे देश में सामान्यत: परन्तु बंगाल में विशेषत: सती दाह प्रथा का ताण्डव भयंकर रूप में छाया हुआ था। इससे मातृशक्ति अपमानित ही नहीं, विनाश के कगार पर खड़ी थी। यह १९वीं शती की घटना है। राजाराम मोहन राय का हृदय चीत्कार कर उठा। उन्होंने तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड विलियम बैंटिक के समय में कोलकाता उच्च न्यायालय में एक याचिका दायर की। इसका पौराणिक पण्डितों ने तीव्र विरोध किया व सती दाह प्रथा को वेदानुकूल घोषित करते हुए यह वेदमन्त्र प्रस्तुत किया-

इमा नारीरविधवा: सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा सं विशंतु।
अनश्रवोऽनमीवा: सुरत्ना आरोहन्तु जनयो योनिमग्रे।।
ऋ. १०-१८-७

अर्थात ये पति से युक्त स्त्रियाँ पतिव्रता बनकर घृतादि गन्धयुक्त पदार्थ से शोभित हो स्वगृह में प्रवेश करें। वे अश्रुरहित, रोगरहित, सुन्दररत्न एवं रम्य गुणों वाली सन्तानों को जन्म देने में समर्थ स्त्रियां आदर सहित पहले गृह में प्रवेश करें (=घर में आएं)।

बंगाल के अज्ञानी व अन्धविश्वासी पण्डितों ने इस मन्त्र को थोड़ा बदलकर न्यायालय में रखा। मन्त्र के 'नारीरविधवा:' शब्द का पद बनता है-नारी: अविधवा:। इसे बदलकर 'नारी विधवा:' कर दिया। पदच्छेद के समय 'र' का 'अ' बना परन्तु उन्होंने 'र' को हटा ही दिया। आगे के अर्थ वही रखे-''पतिव्रता, घृतादि सुगन्धित पदार्थ से शोभित व अश्रुरहित होकर''। मन्त्र के अन्त में आए शब्द 'योनिमग्रे' का अर्थ है आदरपूर्वक गृह में प्रवेश करे। इसे भी परिवर्तित करके उन्होंने इसे 'योनिमग्ने' कर दिया। जिसका अर्थ यह हो जाएगा-अग्नि में प्रवेश करे। राम मोहनराय स्वयं तो वेदों के विद्वान् न थे। अत: उन्होंने इधर-उधर सम्पर्क किया, तो पता चला कि दक्षिण भारत में कुछ पण्डित हैं, जो जटा-पाठ विधि से बोलकर इस मन्त्र का शुद्ध रूप

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

प्रस्तुत कर सकते हैं। उन्हें बुलाया गया व उन्होंने इस मन्त्र को प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा–'नारीरविधवा:' का पदच्छेद 'नारी: अविधवा:' ही बनेगा एवं 'योनिमग्रे' ही मन्त्र में है, 'योनिमग्ने' नहीं है। इस आधार पर याचिका स्वीकार की गई तथा सतीदाह कर्म पर प्रतिबन्ध लगाया गया। मिलावट पर विजय पाने की यह प्रेरक घटना है।

भवभूति नामक एक संस्कृत कवि हुए हैं। उन्होंने 'उत्तर रामचरित' नामक एक फ़सादी ग्रन्थ लिखा व आज वाल्मीकि रामायण का भाग बनकर प्रचलित है। इसके अनुसार श्री राम ने राज्याभिषेक के पश्चात् सीता भगवती का परित्याग किया व शम्बूक नामक एक शूद्र का वध किया। इसमें यह भी लिखा मिलता है कि तब ऋषियों के यहाँ मांसाहार का प्रयोग होता था। शम्बूक का वध इस लिए किया, क्योंकि कुछ ब्राह्मण राजा राम के पास जाकर बोले–''तुम्हारे राज्य में एक शूद्र तपस्या कर रहा है तथा उस तपस्या का दुष्परिणाम यह हो रहा है कि हमारे जीते हुए ही हमारे पुत्रों की मृत्यु हो रही है।'' यह शिकायत सुनते ही राम ने वन में जाकर शम्बूक का वध कर दिया। आज के दलित नेता राम का नाम लेकर आर्यों को कोसते हैं कि आर्यों ने हमारे पूर्वजों पर अत्याचार किए हैं। द्रोणाचार्य द्वारा एकलव्य का अंगूठा मांगने का प्रमाण भी वे देते हैं। हमारा विनम्र निवेदन है कि पूर्वोक्त घटना का वर्णन वाल्मीकि ने किया, यह असत्य है, क्योंकि वाल्मीकि ने रामायण का लेखन राम के राज्यभिषेक तक ही किया। वहाँ तक ६ ही काण्ड हैं व ''उत्तर रामचरित'' शीर्षक का शाब्दिक अर्थ ही यह है कि यह सातवां काण्ड बाद में मिलाया गया है। प्रक्षेप न मानने वालों से हमारा अनुरोध है कि वे वाल्मीकि द्वारा रामराज्य का वर्णन करते हुए लिखे छठे काण्ड के ये शब्द पढ़ें–'न च स्म वृद्धा बालानां प्रेतकार्याणि कुर्वते' अर्थात् रामराज्य में किसी वृद्ध ने किसी बालक का दाह कर्म नहीं किया अर्थात् बालमृत्यु नहीं होती थी। इस स्पष्ट घोषणा के बाद यदि भवभूति ने यह लिख दिया कि ब्राह्मणों के पुत्र शम्बूक की तपस्या से मरने लगे थे, तो इस पर कौन सत्याग्रही विश्वास करेगा? आज के दलित नेताओं से हमारा निवेदन यह है कि किसी की तपस्या से दूसरे व्यक्ति की मृत्यु हो जाएगी, यह पूर्णत: विज्ञान व सृष्टि-नियम के विपरीत है तथा अभी भी उन्हें विश्वास नहीं है तो वे आज स्वयं तपस्या करने हेतु बैठें तथा उनके विश्वासानुसार आज के ब्राह्मणों की अगली पीढ़ी स्वत: ही मर जाएगी तथा उनका आक्रोश भी समाप्त हो जाएगा।

राम-राज्य में सीता-परित्याग व ऋषियों द्वारा मांसाहार के प्रयोग का आरोप भी मूल ग्रन्थ रामायण के मूल स्वरूप के विपरीत है। भवभूति ने अपने परवर्ती ग्रन्थ द्वारा रामकथा में प्रक्षेप किया व श्रीराम को अपयश का भागीदार बनाने का प्रयास किया।

वर्तमान (वाल्मीकि) रामायण में लगभग २४,००० श्लोक उपलब्ध हैं, परन्तु सबके-सब महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित नहीं माने जा सकते। वडोदरा विश्वविद्यालय के ओरियन्टल इन्स्टीट्यूट के शोधार्थियों के अनुसन्धान का निष्कर्ष यह है कि केवल १८,७१९ श्लोक ऐसे हैं, जिनकी उपस्थिति लगभग वर्तमान में उपलब्ध सभी पाण्डुलिपियों के समान है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि रामायण में लगभग ३३ प्रतिशत मिलावट है। महाभारत में प्रक्षेप रामायण की अपेक्षा कम नहीं है। ''सत्यार्थप्रकाश' के ग्यारहवें समुल्लास के अनुसार मूल ग्रन्थ (=जय) के चार सहस्र चार सौ श्लोकों को व्यास जी ने लिखा परन्तु 'भारत' नाम देकर वैशम्पायन आदि ने इसे दश सहस्र श्लोकों का बना दिया। ''महाभारत'' नाम बाद में सौति ने रखा व कुछ और श्लोक जोड़े। महाराजा विक्रमादित्य के समय में बीस सहस्र, महाराजा भोज के पिता के शासनकाल मे इसके श्लोकों की संख्या पच्चीस सहस्र व भोज की आधी उम्र में तीस सहस्र तक यह संख्या पहुँच गई थी, जबकि आज के महाभारत का पोथा लगभग एक लाख श्लोक लिए हुए है। इस ग्रन्थ पर लगभग ६० वर्षों तक निरन्तर ५० अनुसन्धानकर्ता प्रोफैसरों ने शोध कार्य भण्डारकर ओरियन्टर रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूणे के तत्वावधान में किया है। उन्होंने लगभग १,००० पाण्डुलिपियां देश-विदेश से एकत्रित कीं व यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि आरम्भ में 'जय' में ८,८०० श्लोक थे, जबकि आज महाभारत में लगभग एक लाख श्लोक उपलब्ध हैं। यह प्रक्षेप विभिन्न व्यक्तियों द्वारा विभिन्न अवसरों पर किया गया। पूरे ग्रन्थ में घटनाएँ व संवाद समाहित हैं। गीता को भले ही एक पृथक् ग्रन्थ बनाकर आज प्रकाशक बेच रहे हैं, परन्तु वास्तव में यह महाभारत का ही भाग है। महाभारत में प्रक्षेप हुआ है, तो कैसे सम्भव है कि गीता में प्रक्षेप न हुआ हो। गीता (७/२४) में कृष्ण जी स्वयं को निराकार घोषित करते हैं, तो गीता (४/७) में ही स्वयं को साकार रूप में प्रकट (=अवतार) होने की घोषणा भी करते हैं।

प्रक्षेप केवल ग्रन्थों में उपरोक्त रूप में तो हुआ है, वैदिक सिद्धान्तों, मान्यताओं व तथ्यों में मिलावट की अन्य विधियां भी हैं। मूल ग्रन्थ के विपरीत अपना ग्रन्थ लिखना अन्य विधि है। उदाहरण स्वरूप 'रामचरित मानस' को लिया जा सकता है। राम के समकालीन वाल्मीकि ने राम को एक महापुरुष के रूप में प्रस्तुत किया, परन्तु तुलसीदास ने सम्वत् १६३१ वि. में राम को महापुरुष नहीं रहने दिया, अपितु ईश्वर बनाकर हमसे परे कर दिया। हम जीव ईश्वर बन नहीं सकते, अत: तुलसीदास के ग्रन्थ में वर्णित राम के कार्य हम कर नहीं सकेंगे। दूसरा प्रमाण पुराणों का है। महाभारत में जिस कृष्ण का तेजस्वी, योगेश्वर व आप्त पुरुष का चरित्र प्रस्तुत है, उसे ब्रह्मवैवर्तपुराण व भागवत पुराण ने विकृत कर दिया। जिस राधा का महाभारत में एक बार भी नाम उपलब्ध नहीं है, उन पुराणकारों ने कृष्ण का उसके

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

साथ अश्लील, अनैतिक व चरित्रहीनता का सम्बन्ध जोड़कर आने वाली पीढ़ियों के लिए सदाचारी धर्मपालक व राष्ट्ररक्षक कृष्ण का आदर्श ही छीन लिया व कृष्ण को लम्पट, छलिया व भोगी बना दिया।

प्रक्षेप की एक तीसरी विधि है-सच्चे अर्थों को बदलकर मनचाहे हानिकारक अर्थ कर देना। प्रमाण के तौर पर हम वाल्मीकि रामायण का यह श्लोक प्रस्तुत करते हैं-

एतत्तु दृश्यते तीर्थं सेतुबन्ध इति ख्यातम्।
अत्र पूर्वं महादेवः प्रसादमकरोद्विभुः।।

वा.राम., युद्ध काण्ड, ६९वां सर्ग।

अर्थः-विभीषण के राज्याभिषेक के पश्चात् श्री राम पुष्पक विमान में भगवती सीता, भाई लक्ष्मण, विभीषण, सुग्रीव व हनुमान संग बैठकर जब अयोध्या लौट रहे थे, तो श्री राम ने सीता को विमान से नीचे व दाएं-बाएं के उन स्थानों का परिचय देते हुए कहा (जहां-जहां सीता की अनुपस्थिति में महत्वपूर्ण कार्य किए थे)-"हे वैदेहि! यह समुद्र का दूसरा तट=उत्तर तट दिखाई दे रहा है, जो सेतुबन्ध के नाम से प्रसिद्ध है। यह वह स्थान है, जहां पर सर्वव्यापक देवों के देव महादेव परमात्मा ने हमारे ऊपर कृपा की थी (जिसके सहायता से समुद्र पर पुल बनाकर हम तुम्हें ले आए)"

इस श्लोक में पौराणिक शिव देवता का तनिक भी संकेत व अर्थ नहीं है, परन्तु पौराणिक कथित विद्वानों, लेखकों व प्रचारकों ने इस श्लोक में प्रयुक्त महादेव शब्द का अर्थ 'शिव' प्रस्तुत करने का दुष्कार्य करके यह मान्यता स्थापित कर दी है कि राम तो शिव के भक्त थे। इससे मिलता-जुलता एक अन्य प्रसङ्ग हमारे कथन का प्रमाण है-

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च।
नम शङ्कराय च मयस्कराय च।
नमः शिवाय च शिवतराय च। -य. १६/४१

इसमें आए शंकर व शिव शब्द परमपिता परमात्मा के शान्ति व कल्याणकारक अर्थों में आए हैं, परन्तु पौराणिक पण्डितों ने पूर्वोक्त शिव बाबा के अर्थ में प्रचलित कर दिए। 'ओं नमः शिवाय' का अर्थ रहित जप करते हुए शिवरात्रि के दिन आप पौराणिकों को देख सकते हैं।

गंगाजल में यत्र-तत्र प्रदूषण हुआ व हो रहा है, हुगली के किनारे पर खड़े व्यक्ति को शुद्ध जल दो तरीकों से मिल सकता है। प्रथम वह गंगा के आदि स्रोत पर जाए, जहाँ हर समय शुद्ध जल उपलब्ध है। दूसरा तरीका यह है कि वह अपने नगर की गंगा के जल को फिल्टर, छलनी या एक वस्त्र से छानकर शुद्ध रूप में ग्रहण करे, अन्यथा अशुद्ध जल से वह अस्वस्थ है व रहेगा ही। वैदिक-ज्ञान की मान्यताओं व इतिहास के तथ्यों के प्रक्षिप्त तट पर खड़े हमें ज्ञान के आदि स्रोत अर्थात् वेदों की ओर वापस मुड़ना चाहिए या जिस रूप में आज ग्रंथ हमें मिल रहे हैं, उन्हें तर्क, प्रमाण, ऊहा व युक्ति की छलनी से छानकर ही ग्रहण करें, क्योंकि ये ग्रन्थ विष संपृक्तान्न तुल्य हेय एवं त्याज्य हैं। राजनैतिक व आर्थिक घोटालेबाज आज दनदना रहे हैं। धार्मिक व ऐतिहासिक घोटालेबाजों ने विगत् छः सहस्र वर्षों से हमारे समाज के मन, मस्तिष्क को पंगु बना रखा है। ये ज्ञान-घोटाले अन्य सब प्रकार के घोटालों के जन्मदाता हैं। शुद्ध ज्ञान से शुद्ध आचरण का जन्म होता है। अतः ज्ञान गंगा में पड़े प्रदुषण को दूर करना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है। -**चूना भट्ठियाँ, सिटी सैंटर के निकट, यमुनानगर, हरियाणा।**

कृपया "परोपकारी" पाक्षिक शुल्क, अन्य दान व वैदिक-पुस्तकालय के भुगतान इलेक्ट्रोनिक मनीऑर्डर से ना भेजें

निवेदन है कि ई.एम.ओ. द्वारा "परोपकारी" शुल्क, अन्य दान व वैदिक पुस्तकालय के पुस्तकों के भुगतान भेजने का कष्ट न करें, क्योंकि इस फार्म में न तो ग्राहक संख्या का उल्लेख होता है और न ही पैसे भेजने के उद्देश्य का। सभा कर्मचारी उचित खाता शीर्ष में राशि नहीं जमा कर पाते हैं क्योंकि पैसे भिजवाने का उद्देश्य ज्ञात नहीं हो पाता है। इस मनीऑर्डर फार्म में संदेश का स्थान रिक्त रहता है। कृपया साधारण एम.ओ. द्वारा ही राशि भिजवाने का कष्ट करें तथा फार्म में संलग्न समाचार वाली स्लिप पर ग्राहक संख्या, दान सम्बन्धी सूचना व पुस्तकों के विवरण का अवश्य उल्लेख करें। **यदि ई.एम.ओ. से भेजना है तो संपूर्ण स्पष्ट विवरण लिखा पत्र भी अलग से अवश्य प्रेषित करें।** **-व्यवस्थापक**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

पुस्तक-परिचय

५. नाम-पर्यावरण, प्रदुषण एवं समाधान (अजिल्द), **आकार**-पृष्ठ सं. ४६, (टाईटल कवर सहित), **लेखक**-डॉ. बृहस्पति मिश्र, **संस्करण**-प्रथम, विजय दशमी पर्व, सन् २०१२, **मूल्य**-रुपये १२/- मात्र, **प्रकाशकीय सौजन्य**-रामबाबू आर्य, मंत्री आर्यसमाज, हिण्डौन सिटी(३२२२००, मो.-०९४१३०३५५०१), ईश्वर दयाल माथुर, 'सिद्धान्त भास्कर' १५७, सन्तोष नगर, न्यू सांगानेर रोड़, जयपुर-३०२०१९, मो-०९३५१२१९३४८

समीक्षात्मक दृष्टिपात-जिज्ञासु मानवबुद्धि आज विज्ञानोन्मुखी है। मानव-मस्तिष्क प्रकृति के गूढ़ रहस्यों पर से पर्दा उठाने की दिशा में समस्त भूण्डल तो खंगाल ही चुका है, अब वह अन्य लोक-लोकान्तरों की जानकारी जुटाने के लिए भी कटिबद्ध है। लम्बी छलाँग लगाने की होड़ में वह पर्यावरण-रक्षण के दायित्व की अनदेखी ही कर रहा है, अत: दुष्परिणाम मुँह बाए सामने है। पर्यावरणीय प्रदूषण और 'ग्लोबल वार्मिंग' के रूप में प्रतिवर्ष ऊर्जा उत्सर्जन कम करके ओजोन-परत की रक्षा व ग्लेशियरों की पिघलन को रोकने की दिशा में संसार के सभी उन्नत-राष्ट्राध्यक्ष और वैज्ञानिक समाधान खोजने के लिए जुटते हैं, पर अनुकूल सहमति बन ही नहीं पाती।

पुस्तक में जिन तत्वों पर विवेचन प्रस्तुत किया गया है, वे हैं वायव्य प्रदूषण, जलीय प्रदूषण, पार्थिव, आकाशीय-प्रदूषण, अन्तरिक्ष, आग्नेय व जनसंख्या प्रदूषण। प्रबुद्ध लेखक ने प्रदूषण के कारक-कारण एवं समाधान विज्ञान एवं वेदोक्त उद्धरणों के साथ प्रस्तुत किए हैं। सरल व सुग्राह्य शैली के लिये लेखक का साधुवाद। प्रकाशक श्री रामबाबू आर्य का अभिमत है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों को भी पर्यावरण-रक्षण के प्रति जागरुक बनाने में सक्षम है।

उपसंहार में कहा जाएगा कि पुस्तक "पर्यावरण, प्रदूषण एवं समाधान" सभी आर्यसमाजों, पुस्तकालयों-वाचनालयों एवं शिक्षणालयों में संग्रह योग्य है। पुस्तक प्राप्ति के लिए सीधे ही मंत्री, आर्यसमाज हिण्डौन सिटी, राजस्थान से सम्पर्क साधा जा सकता है। **-ईश्वर दयाल माथुर।**

३. नाम-गीता तत्त्व-दर्शन, **भाष्यकार**-स्वामी ओमानन्द 'योगतीर्थ', **सम्पादक**-डॉ. मोक्षराज, **प्रकाशक**-अलंकार प्रकाशन, ७४-ए, तनेजा ब्लॉक, आदर्श नगर, जयपुर-३०२००४, **प्राप्ति स्थान**-श्री अनीश शर्मा, राजपुताना म्यूजिक हाउस, मदार गेट, अजमेर-३०५००१, चलभाष-०९४१४००८६२४, **संस्करण**-प्रथम (दिसम्बर २०१२)

यह पुस्तक, बाली द्वीप में उपलब्ध हुई ७० श्लोकी गीता को एक प्रामाणिक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर मानकर लिखी गई है। इसकी प्रामाणिकता में सम्पादक ने अपने सम्पादकीय में अनेक तर्क दिए हैं तथा भाष्यकार ने ७० श्लोकी गीता का ऐतिहासिक परिचय व महत्त्व अपनी भूमिका में दिया है। अनेक विषयों से सम्बन्धित ७० श्लोकों की यह पुस्तक वास्तविक तत्त्व दर्शन के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत की गई है। भाष्यकार ने अपनी आध्यात्मिक, व्यावहारिक व तात्त्विक-दर्शन की भावनाओं को शब्दों में बांधने का सफल प्रयास किया है। पुस्तक के अन्त में ७० श्लोकी गीता का मूल तथा वर्तमान में प्रचलित गीता में उपलब्ध इन ७० श्लाकों का विवरण दिया गया है। पुस्तक का मुद्रण व प्रकाशन सुन्दर अक्षरों में व स्पष्ट है। आवरण के पृष्ठ-भाग पर सम्पादक का परिचय भी दिया गया है। आवरण भी सुन्दर व आकर्षक है।

-वेदपति, ऋषि उद्यान, अजमेर।

१. नाम-मातृभूमि वैभवम् (पृथिवी सूक्त विमर्श), **लेखक**-प्रो. उमाकान्त उपाध्याय, **प्रकाशक**-आर्यसमाज कोलकाता, १९, विधान सरणी, कोलकाता-७००००६, **संस्करण**-प्रथम (अगस्त २०१२), **मूल्य**-१२५ रुपये मात्र, **पृष्ठ सं**-१८१

प्रस्तुत पुस्तक में अथर्ववेद के द्वादश-काण्ड के पृथिवी सूक्त नाम से प्रसिद्ध प्रथम-सूक्त पर विमर्श है। लेखक ने ६३ मन्त्रों के एक-एक पद के अनेकानेक पर्यायवाची व अनेक अर्थ लिखकर एक विस्तृत ज्ञान प्रवाह प्रस्तुत किया है और सरलता से समझने योग्य बना दिया है तथा प्रत्येक मन्त्र पर विमर्श के द्वारा अनेक व्यावहारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय तथ्यों में समन्वय, सामञ्जस्य किया। पुस्तक में लेखक की मातृभूमि-भक्ति, राष्ट्रभक्ति, स्वराज्य-भक्ति व मानवमात्र के कल्याण के आत्मीय-भाव उद्धृत हो रहे हैं। यह पुस्तक जन-जागरण के लिए राष्ट्रगान का कार्य करेगी।

पुस्तक का मुद्रण सुन्दर व सरलतया पठनीय है। आवरण व बन्धन भी सुदृढ़ है। पुस्तक के अन्त में लेखक का परिचय व उनकी अन्य अनेक कृतियों का भी संक्षिप्त वर्णन है।

-वेदपति, ऋषि उद्यान, अजमेर।

३. नाम-भाषा का इतिहास, **लेखक**-स्व. पं. भगवद्दत, **प्रकाशक**-विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली, **मूल्य**-१५०.०० रु., **पृष्ठ संख्या**-२८१

भाष से मानवता की पहचान है। भाषा परिवर्धित तथा परिष्कृत होती है। भाषा का उद्भव मानव के जन्म से ही होता है। मानव जिस देश, राष्ट्र में जन्म लेगा, उसकी भाषा वहीं के

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

अनुकूल होगी। वह अपना कार्य उसी भाषा में चलाता है। भाषा की उत्पत्ति के लिए अनेक मत हैं, जो मुख्यत:-१. परम्परागत मत, २. रहस्यवादी मत, ३. अर्द्धवैज्ञानिक मत, ४. मनोवैज्ञानिक मत।

भाषा में चार प्रकार से परिवर्तन होता है-१. पदों की बनावट में परिवर्तन, २. पदों के अर्थों का भेद, ३. शब्द भंडार में न्यूनाधिकता, ४. वाक्य रचना में परिवर्तन।

आज देश-विदेश में अनेक भाषाएं प्रचलित हैं-इण्डो-योरोपियन, ईरानी, हित्ती, ग्रीक, द्राविड़, अपभंश, हिन्दी, अंग्रेजी आदि। केवल भारत में पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण में प्रान्तवार, प्रान्तीय भाषाएं हैं। उनमें सर्वोपरि हिन्दी भाषा का प्रभुत्व है, जो सर्वग्राह्य है। बोलना, सुनना, लिखना आदि में कोई अन्तर नहीं, किन्तु अन्य भाषा में यह चमत्कार नहीं। भाषा का इतिहास हमें भाषा की गहराई में ले जाता है, शब्द, वाक्य-रचना, मुहावरे, लोकोक्ति, शब्दों की विशिष्टता भाषा में सामन्जस्य स्थापित करती है। हम बुद्धि व तर्क से कसौटी पर खरे उतरते हैं।

संस्कृत सर्वभाषाओं की जननी है। योगदर्शन व्यास के विभूतिपाद में १७ वें भाष्य सूत्र में शब्द, ज्ञान, अर्थ आदि को स्पष्टता से समझाया है। ''शब्दार्थ प्रत्ययानामितरेतराध्या-सात्संकरस्तत्प्रविभागसंयमात्सर्वभूतरूपज्ञानम्'' (योग. ३/१७) शब्द में अर्थ का, अर्थ में शब्द का, शब्द में ज्ञान का, ज्ञान में शब्द का, अर्थ में ज्ञान का और ज्ञान में अर्थ का अध्यास-एकाकार करके लोक में व्यवहार होता है। विद्वान् लेखक ने भाषा की उत्पत्ति, वृद्धि व ह्रास, परिवर्तन, सादृश्य पद और उसका स्वरूप, अन्य भाषाओं को लेकर परिभाषाओं के साथ अपनी लेखनी से सरल रूप से समझाने का प्रयास किया है। लेखक ने सभी भाषाओं की उत्पत्ति, पद आदि की सुन्दर व्याख्या की है। भाषा का इतिहास विद्यार्थियों, शोध कर्त्ताओं, बुद्धि जीवियों के लिए मार्गद्रष्टा है। प्रकाशक गोविन्दराम हासानन्द ने इस अमूल्यकृति को पाठकों के लिए उपहार रूप दिया है, वे साधुवाद के पात्र हैं। पुस्तक का आद्योपान्त अध्ययन सार्थक एवं मर्मज्ञा के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

-देवमुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर।

४. नाम-ईश्वरीय ज्ञान वेद, **लेखक**-प्रो. बालकृष्ण, एम.ए., **सम्पादक**-डॉ. वेदपाल, **प्रकाशक**-विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, **पृष्ठ**-३२०, **मूल्य**-२०० रू. मात्र।

वेद के विषय में कुछ विद्वानों को भ्रान्ति हुई कि वेद ईश्वरीय ज्ञान नहीं है। कारण रहा वेद के कुछ ऐसे स्थल, जिनमें अनित्य इतिहास प्रतीत होता है। वस्तुत: वेद में अनित्य इतिहास है ही नहीं, नित्य इतिहास अवश्य है। आदि सृष्टि से महाभारत पर्यन्त वेद के सार्वभौम ज्ञान को सभी मनुष्य ईश्वरीय ज्ञान मानकर चलते थे। महाभारत के पश्चात् कालान्तर में वेद के विषय में भ्रान्तियां हुई वेद ईश्वरीय ज्ञान है या नहीं? वेद का काल आदिसृष्टि रहा या कुछ सहस्र पूर्व का काल रहा? वेद किन ग्रन्थों का नाम है? वेद नित्य है या अनित्य? आदि-आदि। इन सभी भ्रान्तियों का निवारण महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में बड़ी ही युक्ति से किया है। सत्यार्थप्रकाश में प्रश्न उठाया कि 'वेद ईश्वरकृत है अन्य कृत नहीं इसमें क्या प्रमाण है'? इसका उत्तर महर्षि देते हैं 'जैसा ईश्वर पवित्र, सर्वविद्यावित्, शुद्धगुण कर्म स्वभाव, न्यायकारी, दयालु आदि गुण वाला है, वैसे जिस पुस्तक में ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकूल कथन हो वह ईश्वरकृत अन्य नहीं और जिसमें सृष्टिक्रम, प्रत्यक्षादि प्रमाण, आप्तो के और पवित्रात्मा के व्यवहार के विरुद्ध कथन न हो वह ईश्वरोक्त। जैसा परमेश्वर है और जैसा सृष्टिक्रम रखा है वैसा ही ईश्वर, सृष्टि कार्य, कारण और जीव का प्रतिपादन जिसमें होने, वह परमेश्वरोक्त पुस्तक होता है और जो प्रत्यक्षादि प्रमाण विषयों से अविरुद्ध, शुद्धात्मा के स्वभाव के विरुद्ध न हो, इस प्रकार के वेद हैं (स.प्र. ७)। लगता है इन्हीं भावों को लेकर प्रो. बालकृष्ण एम.ए. ने ''ईश्वरीय ज्ञान वेद'' पुस्तक लिखी। लेखक ने अपने समय के उच्च कोटि के विद्वान् रहे हैं, इतना होते हुए भी लेखक स्वयं वेद के विषय में भ्रान्त थे। वे लिखते हैं-'आज से तीन वर्ष पूर्व वेदभाष्यों के पाठ से मेरा मन भ्रमों, शंकाओं और सन्देहों का घर बना हुआ था। सन्देह कैसे दूर हुए, लेखक ने लिखा 'तीन वर्षों में कोई ४०० ग्रन्थ पढ़े। निदान मेरी संदिग्ध, अशान्त, भ्रान्त आत्मा को अचिन्त्य सन्तोष मिला। उन भावों को मैंने पुस्तकाकार कर दिया है।

पुस्तक 'ईश्वरीय ज्ञान वेद' ४०० ग्रन्थों का सार है। इस पुस्तक को दो भागों में बांटा है। प्रथम भाग में लेखक ने आठ विषय रखे हैं-१. ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता, २. ईश्वरीय ज्ञान की परीक्षाएँ, ३. वेदों में अनित्य इतिहास का अभाव, ४. वैदिक ऋषि कौन थे, ५. वेद और युरोपियन, ६. वेदार्थ, ७. वेदचतुष्टय का शाखा भेद, ८. वेदों के मन्त्र क्रम की नित्यता। ये आगे विषय लेखक ने बड़े ही युक्ति-तर्क और खोजपूर्वक लिखे हैं। ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता विषय में लिखते हैं ''पहली शताब्दी से पूर्व ही हमारे सैकड़ों जहाज लंका, चीन, जापान, फारस, मिस्र, अमरीका में जाते थे। हमारे शिल्प के सामान सारी रोमन दुनिया में प्रयुक्त होते थे। हम ही थे जो ऐसी मलमल बनाते थे, जिनका एक थान एक छोटी-सी अंगूठी में से गुजर जाता था। अब पाठक आप ही विचार कीजिये कि एक ओर तो इलहाम को मानने वाले ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता पर युक्ति देते हैं कि उसके बिना मनुष्य उन्नति नहीं कर सकता, दूसरी ओर हम देखते हैं कि ईसाई और मुसलमानी इलहाम से शताब्दियों पूर्व भारतीयों ने एक अद्‌भुत सभ्यता प्राप्त कर ली थी।...............अत: स्वयं सिद्ध है कि वेदों के अतिरिक्त अन्य कोई इलहाम नहीं और वेदों का ज्ञान ही पूर्ण है।''

पुस्तक का द्वितीय भाग ९ विषयों से युक्त है। १. वेदों की

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आन्तरिक साक्षी, २. ब्राह्मण ग्रन्थों की साक्षी, ३. परिशिष्ट-१ अथर्ववेद का विषय, ४. परिशिष्ट-२ पुरोहित अथर्ववदी ही हो सकता है, ५. उपनिषदों में वेदों की महिमा, ६. दर्शनों के विचार, ७. स्मृति प्रमाण, ८. विविध प्रमाण, ९. सर्वविद्यानिधान वेद। लेखक ने सभी विषयों को बड़े ही परिश्रम पूर्वक लिखा है। पुस्तक में लगभग २२९ ग्रन्थों के सन्दर्भ दिये हैं। इतने सारे ग्रन्थों के सन्दर्भों से युक्त पुस्तक का सम्पादन योग्य विद्वान् श्रौत और स्मृति ग्रन्थों में विशेष योग्यता रखने वाले डॉ. वेदपाल जी (मेरठ) ने किया है।

यह पुस्तक लगभग ९६ वर्ष पूर्व छपी थी, वर्तमान में अप्राप्य थी। इसका पुन: प्रकाशन आर्यसमाज के इतिहासज्ञ प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी की प्रेरणा से श्री अजय कुमार ने गोविन्दराम-हासानन्द प्रकाशन से किया। पुस्तक में जिज्ञासु जी ने प्रो. बालकृष्ण जी का जीवन परिचय भी दिया है। पुस्तक कहीं-कहीं सम्पादक की विशेष टिप्पणियों की अपेक्षा रखती है।

वेद के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक पाठक के लिए यह पुस्तक पठनीय है। वेद के विषय में शोध करने वाले, शोध ग्रन्थ व पत्र लिखने वालों के लिए बहुत लाभकारी है। इस पुस्तक को पढ़कर 'वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है अन्य मतवादियों के ग्रन्थ नहीं' ऐसा दृढ़ निश्चय पाठकों को होगा, ऐसा विश्वास है।

-सोमदेव, ऋषि उद्यान, अजमेर।
दूरभाष-९०२४६६९५५५

ई-मेल द्वारा परोपकारी नि:शुल्क

परोपकारी के पाठकों को प्रसन्नता होगी कि अब परोपकारी ई-मेल द्वारा भी भेजी जा रही है। परोपकारिणी सभा की वेब-साइट पर तो परोपकारी पहले से ही नि:शुल्क उपलब्ध है। विश्व में कहीं भी कोई भी इसे वेब-साइट पर पढ़ सकता है। इसके साथ ही अब यह सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है कि परोपकारी आपके पास ई-मेल द्वारा पहुँच जाये। इससे यह पत्रिका शीघ्र व अधिक सुन्दर रूप में आप तक पहुँच सकेगी। आप जहां भी रहें, कभी भी पढ़ना चाहें, यह आपके पास रहेगी। डाक की अव्यवस्था से छुटकारा मिल सकेगा। यह आपको नियमित मिलती रहेगी। इससे रासायनिक रंगों व कागज का उपयोग भी कम होगा, खर्च भी घटेगा। अत: पाठकों से अनुरोध है कि **कृपया अपना ई-मेल पता सभा को ई-मेल से भिजवा देवें।** आप जिन इष्ट-मित्रों, परिजनों व संस्थाओं को परोपकारी भिजवाना चाहते हैं, उनके ई-मेल पते भी भिजवा देवें, उन्हें भी यह नि:शुल्क भेज दी जायेगी। ई-मेल-psabhaa@gmail.com

-व्यवस्थापक

नये संस्करण बिक्री हेतु उपलब्ध

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

पुस्तक का नाम	मूल्य
१. दयानन्द ग्रन्थमाला-३ भागों का १ सैट	५५०.००
२. ऋग्वेद भाष्य भाग-५	२५०.००
३. यजुर्वेद भाष्य भाग-२	३५०.००
४. यजुर्वेद भाष्य भाग-३	२५०.००

उपरोक्त पुस्तकें नई छपकर बिक्री हेतु आ गई हैं, जो पाठकगण पुस्तकें मंगाना चाहें तो कृपया वैदिक पुस्तकालय, केसरगंज, अजमेर से सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, दूरभाष: ०१४५-२४६०१२०

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

पाठकों के विचार

१. महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्यसमाज की स्थापना करके महान् उपकार का कार्य किया था। उन्होंने आर्यसमाज का उद्देश्य निश्चित करते समय उदारता का परिचय दिया और जो एक ऋषि को करना चाहिए, वही उन्होंने किया। हम आर्यों के लिए ऋषि जी ने जो आदेश दिए, उनका अक्षरश: अधिकांश आर्य पालन नहीं कर रहे हैं। संगठन-सूक्त, मनसा परिक्रमा और शांतिपाठ के मन्त्रों का पाठ करते-करते जीवन व्यतीत हो गए, लेकिन न तो संगठन मजबूत हुआ, न ही ईर्ष्या द्वेष खत्म हुआ और न ही शांति प्राप्त हुई। इसमें गलती न तो वेद मन्त्रों की है और न ही ऋषि दयानन्द की, कहीं गलती या भूल हुई है तो हम आर्यों से अथवा आर्यसमाज के नेतृत्व से हुई है। आपस में ईर्ष्या, द्वेष, घृणा और बदले की भावना आर्यों का सत्यानाश करके रहेगी। आश्चर्य तो यह है कि वेद के प्रकांड विद्वानों, संन्यासियों, आचार्यों, उपदेशकों, भजनोपदेशकों व कार्यकर्ताओं तक ईर्ष्या-द्वेष की आग पहुँच चुकी है।

आपस में लड़ना आर्यों का काम नहीं था, हमारा काम तो ''कृणवन्तो विश्वमार्यम्'' के जयघोष को सार्थक करना था। कौन करेगा ऋषि दयानन्द जी सरस्वती के सपनों को साकार? गाय का मांस खाने वाले, शराब पीने वाले, या प्रतिमा-पूजन करने वाले? नहीं-नहीं, ऋषि के सपनों को साकार करने की जिम्मेदारी आप सब आर्यों की है। महर्षि का सपना ऐसे साकार नहीं होगा, वह होगा ईर्ष्या-द्वेष को त्यागने से और एक-एक आर्य को संगठित करने से। बिना संगठन के कुछ होने वाला नहीं है और अपनी ढपली अपना-अपना राग वाले संगठनों से भी कुछ नहीं होता दिख रहा। बहुत हानि हो चुकी, कार्यकर्ता निराश हो रहे हैं, आम आदमी का विश्वास आर्यसमाज से उठ रहा है। उत्सवों व यज्ञों की उपस्थिति इसका प्रमाण है।

हमारा समय राष्ट्रोत्थान के लिए योजना बनाने में लगना चाहिए, वह लग रहा है एक-दूसरे के खिलाफ योजना बनाने में। जो धन वेदप्रचार में पर व्यय होना चाहिए था, वह खर्च हो रहा है मुकदमे बाजी में। युवा आर्यसमाज से दूर भाग रहे हैं, पुरानी पीढ़ी के लोग परस्पर लड़ रहे हैं। कैसे होगा वेदप्रचार? आर्यों की परस्पर फूट के कारण अनाड़ी लोग आर्यसमाज व सभाओं के पदाधिकारी बन रहे हैं। सभाओं के विवादों के कारण एक-एक प्रान्त में कई-कई सभाएं बन रही हैं। कौन रोकेगा इस विघटन को? महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द तो इसे रोकने के लिए आयेंगे नहीं। यह पुनीत कार्य तो आपको ही करना है। अनावश्यक विवादों पर विराम लगाओ। अब आर्य कार्यकर्ता सत्यार्थप्रकाश के कौन से संस्करण को प्रामाणिक और कौन से को अप्रामाणिक मानें? इसका उत्तर कौन देगा? सार्वदेशिक स्तर पर तीन गुट बने हुए हैं, इनको एक करना आपका कर्त्तव्य है। क्या अदालत यह तय करेगी कि कौन असली है और कौन नकली। इससे बड़ा दुर्भाग्य और नहीं हो सकता। यह आपको तय करना है कि हम सब आर्य हैं, छोटी-छोटी बातों पर हम अलग-अलग हो गए हैं। आर्यों का काम लड़ना है, पर आपस में नहीं। आओ हम सब मिलकर लड़ें धार्मिक-पाखण्ड, भ्रष्टाचार, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, नारी उत्पीड़न, अश्लीलता, नशाखोरी, गौहत्या, शोषण आदि से।

मैं एक सामान्य कार्यकर्ता हूँ, आर्यसमाज से प्रेम करता हूँ, यथाशक्ति व यथासामर्थ्य आर्यसमाज का कार्य भी करता हूँ, परन्तु यह अच्छी तरह से जानता हूँ कि आपस की लड़ाई से बेहद हानि होती है। जैसा मैंने देखा-सुना व अनुभव किया वह इस पत्र में लिखा है। मैं आपसे अपील करता हूँ कि आर्यसमाज व ऋषि दयानन्द के मिशन की बहुत हानि हो चुकी है। भविष्य में और हानि न हो इसके लिए सभी संगठनों को येन-केन प्रकारेण संगठित करो, ये समय की पुकार है। आर्यसमाज सभी रोगों की औषधि है। जब औषधि ही आपस की कलह से रोगी हो जाए, तो रोगों का क्या निदान करेगी? एक होने का मार्ग प्रशस्त करो, अन्यथा कुछ हाथ नहीं लगेगा। मुझे पूर्ण विश्वास और भरोसा है कि मेरे जैसे लाखों कार्यकर्ताओं की भावनाओं को समझते हुए आप आज से ही आर्यों के अलग-अलग संगठनों को संगठित करने के लिए अवश्य प्रयास करेंगे। धन्यवाद सहित।

भवदीय-स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती,१२६ आर्यसदन हाऊसिंग बोर्ड, सेक्टर २, पलवल (हरियाणा), दूरभाष-९४१६२६७४८२।

२. कार्य-कारण-कार्य-कारण का गहरा सम्बन्ध है। कार्य होगा तो उसका कारण भी अवश्य होगा। देश में अराजकता, अनीति, अव्यवस्था है। राजनीति बहुत ही निकृष्ट स्तर की हो गई है। प्रात:काल की दिनचर्या समाचार-पत्रों से होती है। ये समाचार-पत्र मुख्य पृष्ठ से अन्तिम तक अनाचार और आपराधिक घटनाओं से भरे मिलते हैं। सब ओर लूट मची है। पैसे के लिए उपद्रव हो रहे हैं, कहीं चोरियां हो रही हैं, राह चलती स्त्रियों के गलों की जंजीरें झपटी जा रही हैं, बलात्कार हो रहे हैं, बेटियां न गर्भ में, न ही सड़क पर सुरक्षित हैं। प्राय: राजनेता भी भ्रष्टाचार में आकंठ डूबे हैं, तो धार्मिक संस्थाएं भी अछूती नहीं रहीं हैं। शिक्षा, चिकित्सा, न्याय जैसे प्रतिष्ठित माने जाने वाले व्यवसाय भी भ्रष्टाचार की लपेट में हैं। अभी पिछले दिनों पूरे देश को शर्मसार करने वाली गैंगरेप की घटना, जिसने पूरे विश्व को हिला दिया। युवावर्ग ने आक्रोश में आकर सड़कों पर प्रदर्शन व आन्दोलन किये, मीडिया ने भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

निभाई। सारी राजधानी के हिलने के साथ-साथ राजनेता भी हिल उठे और युवावर्ग व पीड़िता के परिवार के साथ सहानुभूति दिखाने प्रधानमन्त्री मनमोहन सिंह और कांग्रेस अध्यक्षा सोनिया गांधी आधी रात को पीड़िता के शव को लेने एयरपोर्ट पहुंचे। समाचार तो यह भी आया है कि सोनिया गांधी और राहुल गाँधी पीड़िता के परिवार को मिलने उनके घर गये और एक घंटा वहीं रुके। बलात्कार जैसे कुकर्म तो रोज़ हो ही रहे हैं, इन परिवारों की सहानुभूति के लिए क्या हो रहा है, कोई नहीं जानता।

अत्यन्त ही निन्दित कार्य और कुकर्मो से समाज के सभी वर्ग भयभीत, परेशान व अशान्त हो रहे हैं। सरकार सांत्वना दे रही है कि सुरक्षा के कड़े से कड़े कानून बनाये जायेंगे, परन्तु नैतिक मूल्यों की कोई बात नहीं हो रही है। हम ऋषि दयानन्द जी के सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय समुल्लास को नहीं पढ़ते, पढ़ते भी हैं, तो भूल जाते हैं। उन्होंने तो स्पष्ट शब्दों में लिखा कि जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता, तीसरा आचार्य हो, तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है। वह कुल धन्य और सन्तान भाग्यशाली होती है, जिसके माता-पिता धार्मिक विद्वान् होते हैं। आचार्य-जो श्रेष्ठ आचार को ग्रहण कराके सब विद्याओं को पढ़ावे और आचार्य स्वयं आचार युक्त हो। प्रश्न उठता है कि क्या हमारा कुल धन्य है और हमारी सन्तान भाग्यशाली है? यदि नहीं, तो भूल का सुधार करें। आज माता-पिता स्वयं महत्वाकांक्षी है और सन्तान को भी महत्वाकांक्षी बना रहे हैं। अपने बच्चों को डॉक्टर, इंजीनियर बनाना चाहते हैं और जैसे-तैसे बना भी रहे हैं। चाहते हैं कि बच्चे उच्च शिक्षा के लिए व अधिक पैसा कमाने के लिए विदेश जाएँ, तो बच्चे जा भी रहे हैं।

आज हमें बेटियों पर गर्व है। हर क्षेत्र में ऊंचाइयों को छू रहीं हैं। सिद्ध कर रही हैं कि यदि उन्हें भी अवसर मिले तो वे भी लड़कों से कम नहीं हैं। परन्तु नादान बेटियां यह नहीं जानतीं कि जीवन का वह क्षेत्र, जिसमें उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है, वह उपेक्षित हो रहा है। **''माँ सबका स्थान ले सकती है, पर उसका स्थान कोई नहीं ले सकता''** जितना माता से संतानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है, उतना किसी और से नहीं। माता के गर्भ में ही बालक के अंगों के विकास के साथ-साथ संस्कार भी विकसित हो रहे होते हैं। माता-पिता अपने मन में यह दृढ़ विश्वास बना लें कि बालक को पैसे की अपेक्षा समय की आवश्यकता है। अपने बच्चों को पैसे नहीं दोगे, तो कुछ पल के लिए रो सकता है, परन्तु समय नहीं दोगे, तो आप जिन्दगी भर के लिए रो सकते हो। कहा भी जाता है कि **''योग्य माता-पिता जब सही लालन-पालन करते हैं, तभी सन्तान योग्य बनती है। अन्यथा अरबोंपति और सम्राटों की सन्तान तक बिगड़ी रहती है''** माता-पिता के वात्सल्य से वंचित बालक जब बड़े हो जाते हैं, तो वे भी माता-पिता को अर्थ की तुला पर तोलने लगते हैं। अर्थ का पलड़ा भारी लगता है, तो माता-पिता की उपेक्षा करने लगते हैं। माता-पिता को अपने जीवन की संध्या वेला को वृद्ध आश्रमों में गुजारने की विवश होना पड़ता है, दूसरी ओर अध्यापक वर्ग अब आचार्य नहीं रहे। स्वयं आचार का पालन नहीं करते, तो बालकों से उनके आचार की क्या अपेक्षा रख सकते हैं। इन अध्यापकों को केवल वेतनभोगी ही कहा जाए, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

तीसरी ओर बालक के भटकाव में समाज भी अपना योगदान दे रहा है। पारिवारिक और सामाजिक सम्बन्ध बिखर रहे हैं। आज सबसे घनिष्ठ सम्बन्ध दूरदर्शन से हैं। दूरदर्शन हर परिवार का अभिन्न अंग बनता जा रहा है। दूरदर्शन से होने वाले लाभों से इंकार नहीं किया जा सकता, परन्तु कुछ चैनलों द्वारा व्यापार जगत् अपना सामान अश्लील विज्ञापनों के द्वारा बेच रहा है। यह मनुष्य की वासनाओं और भावनाओं को भड़काने का काम कर रहे हैं। फिल्मों में भी अश्लीलता, हिंसा, क्रूरता व बर्बरता के दृश्य चित्त पर अपने संस्कारों की छाप छोड़ रहे हैं, जिससे व्यक्ति स्वार्थी, संकीर्ण और संवेदना शून्य होते जा रहे हैं। कई चैनलों पर कुछ स्वार्थी लोग भ्रमजाल में लोगों को फंसा रहे हैं, जिससे यह लोग अन्धविश्वासी, भाग्यवादी बनकर समाज को हानि पहुंचा रहे हैं।

यह एक बहुत बड़ी विड़म्बना है कि जलती अग्नि पर डालें तो घृत और चाहें कि अग्नि शान्त हो जाए। पेड़ तो बोयें बबूल का और चाहें कि इस पर लगे आम। यह सृष्टि के अटल नियम के विरुद्ध है। आम के मीठे और स्वादिष्ट फल के लिए आम ही का पेड़ लगायें। अपने बच्चों को सुसंस्कार दें। आम के फलों का स्वाद लें और इसकी घनी छाया में अपने जीवन की सन्ध्या वेला को सुख-शान्ति से व्यतीत करें। वृद्ध आश्रमों का सहारा न लेना पड़े। माता-पिता, आचार्य और समाज अपने-अपने उत्तरदायित्व को समझें और सब अपने-अपने कर्तव्य का पालन करें। मुख्य भूमिका तो माता को ही निभानी होती है। माता ही निर्माता कही जाती है। एक माता ने प्रश्न किया कि कौन माता चाहती है कि उसकी सन्तान अपराध करे। माता चाहती तो नहीं है, परन्तु बालक को समझाती भी तो नहीं है।

एक दृष्टान्त याद आ रहा है। बालक स्कूल से अपने साथियों का छोटो-मोटा सामान चुराकर घर लाने लगा। माँ जानकर भी अनजान बनी रही और बालक का हौंसला बढ़ता गया, छोटी चोरियां, बड़ी चोरियां बनती गईं तथा बड़ी चोरियों ने उसे एक बहुत बड़ा अपराधी बना दिया। एक दिन पकड़ा गया, न्यायाधीश ने उसके अपराध की गम्भीरता को देखते हुए फांसी की सजा सुनाई। फांसी से पूर्व अपराधी ने माँ से मिलने की इच्छा व्यक्त की। माँ को कोर्ट में लाया गया तो अपराधी बोला कि जज साहिब फासी मेरे स्थान पर मेरी माँ को दीजिये। जज साहिब चौकन्ने होकर बोले-क्यों? तो अपराधी ने जवाब दिया कि जिस दिन मैंने पहले चोरी की थी, यदि उस दिन ताड़ना

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

की होती, तो आज मेरी यह दुर्दशा न होती।

कार्य-कारण के सम्बन्ध को समझें, कारण का निवारण करने से कार्य का भी निवारण हो जाता है। अपने बच्चों को बाल्यकाल से ही चरित्र-निर्माण की व नैतिक मूल्यों की शिक्षा दें। जो व्यवहार हम दूसरों से चाहते हैं, वही व्यवहार हम दूसरों के साथ करें। सरकार की ओर से भी दण्ड का भय अपराधों को कम करता है। सरकार अपराधियों को कठोर दण्ड देने के जो कड़े-कड़े कानून बनाती है, उनका पालन भी बड़ी सख्ती से होना चाहिए। अन्यथा कानून केवल कागजों पर ही धरे के धरे रह जायेंगे और अपराधी स्वछन्द भाव से अपराध करते रहेंगे। समाज को अपराध मुक्त करना आसान काम नहीं है। फिर भी अपराधियों की संख्या कारण को हटा देने से कम हो ही जायेगी। आइये हम सब मिलकर प्रयास करें।

-राज कुकरेजा,
७८६/८, अर्बन एस्टेट, करनाल, हरियाणा,
मो-०९४१६८०१७५७

आवासिकं संस्कृत-भाषा-शिक्षण-प्रशिक्षण-शिविरम्

लोक-भाषा-प्रचार-समिति-राजस्थानशाखाया: परोपकारिणीसभायाश्च मिलितोद्यमेन अजमेरनगरे आवासिकं संस्कृतभाषाशिक्षण-प्रशिक्षण-शिविरम् आयोज्यते।

अवधि: - १७-०५-२०१३ त: २६-०५-२०१३ (दश दिनात्मकम्)
(१६-०५-२०१३ दिनांकस्य सायंकालपर्यन्तं शिविरस्थलम् ऋषि-उद्यानं प्राप्तव्यमेव भविष्यति।)

स्थानम् - ऋषि-उद्यानम्, पुष्करमार्ग:, अजमेर-३०५००१, दूरभाष:- ०१४५-२६२१२७०

योग्यता - संस्कृते रुचिमन्त: संस्कृत-आचार्या:, अध्यापका:, संस्कृतछात्रा:, उच्च माध्यमिक-वरिष्ठोपाध्याय-बी.ए./एम.ए./शास्त्रिकक्षा/आचार्यकक्षाछात्राश्च।

शुल्कम् - ३०० रुप्यकाणि।

व्यवस्था - एतद् शिविरम् आवासिकमस्ति, प्रशिक्षणार्थिनां भोजनावास व्यवस्था शिविरस्थाने भविष्यति
- बालिकानां, नारीणां कृते च पृथक् निवास व्यवस्था वर्त्तते, शिविरार्थिन: नित्योपयोगिनि वस्तूनि, शय्यावस्त्राणि लेखनसामग्री: च आनयेयु:।

स्वरूपम्- शिविरे अहोरात्रम् अखण्डं संस्कृतमयवातावरणम्,
- संस्कृतेन धाराप्रवाहं सम्भाषणस्य अभ्यास:,

विशेष - **संस्कृत-सम्भाषण सीखने का इच्छुक कोई भी व्यक्ति या विद्यार्थी सुबह ९ से ११ बजे तक शिविर में भाग ले सकता है।**

डॉ. धर्मवीर:	**डॉ. बद्रीप्रसाद पंचौली**	**डॉ. निरञ्जन साहु:**
अध्यक्ष:	कोषाध्यक्ष:	सचिव:
	०१४५-२४२५६६४	०९५१४७०९४९४

संपर्क- **१.** श्री जितेन्द्र थदानी, प्रध्यापक (संस्कृतम्), राजकीय महाविद्यालय, अजमेर, मो. ९२१४५२३५०५ **२.** डॉ. कृष्णराम महिया, प्राध्यापक:, सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर, मो. ८१०४८४६४३४ **३.** डॉ. आशुतोष पारीक:, प्राध्यापक:, मो. ९४६०३५५१७२।

मनुष्यों को योग्य है कि जो वह अच्छे प्रकार सेवन किया हुआ जठराग्नि सब की रक्षा करता और जो उपासना किया हुआ जगदीश्वर पापरूप कर्मों से अलग कर धर्म में प्रवृत्त कर वार-वार मनुष्यजन्म को प्राप्त कराकर दुष्टाचार वा दु:खों से पृथक् करके इस लोक वा परलोक के सुखों को प्राप्त कराता है, वह क्यों न उपयुक्त और उपास्य होना चाहिये।-**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ-४.१५।**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

पाठकों की प्रतिक्रिया

परोपकारी पत्रिका के **सम्पादकीय** में आपके लेख ज्ञानवर्द्धक एवं पाठकों को झकझोरने वाले होते हैं। जो भी विषय आप लेते हैं, उसे पाठकों के हृदय की गहराई पर उतारने में पूर्णत: सफल होते हैं। इन विषयों पर पाठक चिंतन-मनन करने के लिए विवश हो जाता है। परोपकारी पत्रिका फरवरी (द्वितीय) अंक में लेख "सर्वखाप पंचायत का विचार अनुचित, अवैधानिक व निन्दनीय" का विषय अपना विशेष स्थान रखता है। इसको पढ़ने पर इच्छा होती है कि काश! इन सब तथ्यों को जन-साधारण सर्वखाप की पंचायत और उनकी ओर से प्रसारित करने वाले उनके वक्तव्य की सच्चाई को समझ सकते कि क्या सच है और क्या झूठ है? यह तभी सम्भव है, जब इसे सभी समाचार पत्रों और उनसे सम्बन्धित पत्रिकाओं में छापा जाए और इंग्लिश पेपर में भी इसका अनुवाद छापा जाए। विड़म्बना तो यह है कि होना तो प्रचार सत्य का चाहिए था और आज मीडिया द्वारा ही असत्य का प्रचार अधिक हो रहा है। कारण कई हो सकते हैं, परन्तु मुख्य कारण आर्यसमाज को ही न समझना है। कई स्वार्थी तत्व विष उगल रहे हैं और आर्यसमाज की छवि को धूमिल करने पर तुले हुए हैं। जन-साधारण को तथ्यों से अवगत न कराकर मिथ्या भ्रांतियां फैलाई जा रही हैं कि जो मूर्ति-पूजा नहीं करता वह आर्यसमाजी और जहाँ प्रेम विवाह कराए जाते हैं, वह आर्यसमाज। दोष थोड़ा हमारा भी है कि हमने भी आर्यसमाज के उद्देश्यों को सर्वसाधारण तक पहुँचाने में जो हमारा मुख्य कर्तव्य बनता था, अपने दायित्व से भटक गये हैं। अब हम सबका यही कर्त्तव्य बनता है कि जन-जन तक विशेषत: युवा वर्ग को अवगत कराएं कि किस प्रकार ऋषि दयानन्द सरस्वती जी उनके परमहितैषी थे। वे समाज में फैली कुरीतियों को दूर करना चाहते थे। विवाह बाल अवस्था में नहीं होना चाहिए। विवाह गुण-कर्म-स्वभाव के अनुरुप हों और लड़के-लड़की की पसंद के अनुसार हो। इस अवस्था में ही युवक-युवती आर्थिक रूप से स्वयं पर निर्भर और मानसिक रूप से पूर्ण परिपक्व होकर गृहस्थधर्म के पालन के दायित्व को निभाने में सक्षम हो सकते हैं। वे अन्तर्जातीय विवाह के समर्थक थे, यह उनकी वैज्ञानिक सोच है। लड़के व लड़की के प्रति समान दृष्टिकोण रखना केवल आर्यसमाज सिखाता है। यहाँ नारी का सम्मान किया जाता है, उसे स्वयं को अबला समझने व कुकर्मियों के पैरों में गिरकर गिड़गिड़ाने का उपदेश नहीं दिया जाता। एक वर्ग विशेष के साथ पुरुष मानसिकता की सोच के कारण पक्षपात नहीं किया जाता। आपने सच ही लिखा है कि आर्यसमाज की ऐसी कोई मान्यता नहीं, जिससे समाज या देश की हानि होती हो। हमारा जागृत समाज सोच समझकर निर्णय ले सकने में स्वयं की बुद्धि को विकसित करे और विचारे कि कौन इनका हितैषी है-आर्यसमाज या स्वयं को ठेकेदार समझने वाले ये नादान लोग? आपने अपनी बात अति उत्तम ढंग से प्रस्तुत की है। हम सबकी ओर से हार्दिक बधाई।

साथी ही आपका व आपके सभी सहयोगियों का हृदय से धन्यवाद करते हैं कि आपने **परोपकारिणी सभा की वेबसाइट** पर **आर्ष ग्रन्थों के प्रवचन** अपलोड कर दिये हैं। अब जब हम (पति-पत्नी) घर बैठे उपनिषदों व दर्शनों के तथा योग शिविर सम्बन्धी प्रवचनों का रसस्वादन करते हैं, तो भाव-विभोर हो उठते हैं। मन में यही चिर इच्छा थी कि किसी योग्य विद्वान् से उपनिषदों व दर्शनों को पढें। यह तो कभी सोचा भी नहीं था कि हमें आचार्य सत्यजित् जैसे विद्वान् से उपनिषदों और दर्शनों को सुनने का अवसर भी मिलेगा। इन प्रवचनों को बार-बार सुनने की व मनन करने की इच्छा सदा बनी रहती है। आचार्य जी अति उत्तम शैली से समझाते हैं। कई शंकाएं जो हमने पाल रखी होती हैं, स्वत: ही उनके प्रवचन से ही शंका-समाधान भी हो जाता है। ऐसा लगने लगता है कि हमारा घर अब ऋषियों का घर बन गया है। आपने इन ऋषियों को हमारी पहुंच के लिए सहज और सुलभ करवा दिया है। अब इनको सुनने के लिए काल और स्थान बाधा नहीं बनते। इच्छानुसार व समयानुसार सुनते रहते हैं। अब तो बाहर जाने की इच्छा नहीं होती और जो आनन्द प्राप्त होता है, वह तो अवर्णनीय है। मेरा सभी से अनुरोध भी है कि यदि घर में कम्प्यूटर की सुविधा है, तो अवश्य ही लाभ उठायें और औरों को भी प्रेरित करें। पुन: आप सबका धन्यवाद।

-राज कुकरेजा, ७८६/८ अर्बन एस्टेट करनाल, हरियाणा, मो-०९४१६८०१७५७
ईमेल-raj.kukreja.om@gmail.com

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

संस्था-समाचार

–१ से १५ मार्च तक

स्वामी रामदेव जी का आगमन–समाज में जो व्यक्ति चर्चा का विषय होते हैं, प्रसिद्ध होते हैं, उनमें कुछ अपने नाम से, कुछ धन से, कुछ पद से और कुछ अपने कार्यों से जाने जाते हैं। **स्वामी रामदेव** जी भी ऐसे ही एक व्यक्ति हैं, जो अपने सामाजिक कार्यों से पहचाने जाते हैं। दिनांक ८ मार्च को स्वामी जी अपनी राजस्थान यात्रा के अन्तर्गत सायं ४.०० बजे पुष्कर पधारने वाले थे। पुष्कर के पश्चात् किशनगढ़ में कार्यक्रम था। महर्षि दयानन्द की उद्यान स्थली में आकर ऋषि के प्रति आभार व्यक्त करना आपको अपरिहार्य लगा अत: अपने व्यस्त कार्यक्रम में से समय निकालकर आपने सायं ५.०० से ६.०० बजे के मध्य ऋषि उद्यान आने का संकेत दिया। पूर्व कार्यक्रम में श्रोताओं व दर्शकों के आग्रह–व्यस्तता के कारण आप सायं ७.४० ही ऋषि उद्यान पधार सके। सर्वप्रथम आर्यवीर दल ने स्वामी जी का स्वागत किया व सभा (व्याख्यान) स्थल नारों के साथ स्वामी जी को लाया गया। सभा स्थल (सरस्वती भवन) में स्वामी जी का एक संक्षिप्त व सारगर्भित उद्बोधन सुनने को मिला। आचार्य सत्यजित् जी ने ओ३म् के उच्चारण के साथ सभा का आरम्भ किया। स्वामी रामदेव जी ने अपने उद्बोधन में महर्षि दयानन्द के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा कि मैं यहाँ (ऋषि उद्यान) इसलिये अया हूँ, क्योंकि ये ऋषि दयानन्द की भूमि है। ब्रह्मचारियों को सम्बोधित करते हुए रामदेव जी ने कहा कि आधुनिक शिक्षा पद्धति से पढ़े हुए डॉक्टर, इन्जीनियर, प्रशासनिक अधिकारी समाज का नेतृत्व करने में असफल रहे हैं। समाज का नेतृत्व केवल गुरुकुल का ब्रह्मचारी ही कर सकता है।

स्वामी जी ने ऋषि उद्यान में भोजन ग्रहण किया व ब्रह्मचारियों से उनकी पढ़ाई से सम्बन्धित चर्चा की, स्वामी जी ने बताया कि अष्टाध्यायी मानव मस्तिष्क की सर्वोत्तम रचना है, उसको पढ़ने के पश्चात् विद्यार्थी की प्रतिभायें जागती हैं, मस्ष्कि का सर्वांगीण विकास होता है। भोजन के बाद स्वामी जी के साथ ब्रह्मचारियों व आचार्यों का चित्र लिया गया। स्वामी जी का ऋषि उद्यान में आगमन महर्षि दयानन्द के प्रति उनकी भावनाओं को व्यक्त करता है।

ऋषि बोध दिवस–एक सार्थक कार्यक्रम–परोपकारिणी सभा के तत्त्वावधान में दिनांक १०.०३.१३ को **ऋषि बोध दिवस** का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम अजमेर की सभी आर्यसमाजों ने मिलकर ऋषि उद्यान में मनाया। इस कार्यक्रम की सार्थकता इस बात में थी कि इसमें युवकों की विशेष सक्रियता व सहभागिता रही।

सबसे पहले ब्रह्मचारी सुरेश जी ने ऋषि दयानन्द की महिमा के भजन के माध्यम से श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध किया। उसके बाद पांच व्याख्यान क्रमश: सुश्री सुमेधा, श्रद्धानन्द शास्त्री, आचार्य सत्येन्द्र, डॉ. मोक्षराज व डॉ. दिनेशचन्द्र जी के हुए। प्रत्येक व्याख्यान से पांच प्रश्न श्रोताओं से पूछे गये। कुछ बच्चे विद्यालयों से आये थे, उन्हें व अन्य बच्चों–युवाओं को प्राथमिकता दी गयी। जिन प्रश्नों का उत्तर बच्चे–युवा, श्रोता नहीं दे पाये, उन्हें वरिष्ठ श्रोताओं व ब्रह्मचारियों से पूछा गया। सही उत्तर देने वाले श्रोता को स्मृति चिह्न व पुस्तकों से पुरस्कृत किया। चूंकि प्रश्न व्याख्यान में से ही पूछे जाते थे, इसलिये प्रत्येक छात्र/व्यक्ति व्याख्यान को ध्यान से सुन रहा था।

इस रोचक–ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रम के पश्चात् प्रोजेक्टर के माध्यम से **चलचित्र (फिल्म)** दिखाया गया। चलचित्र (फिल्म) का नाम था–"**सच्चे शिव की खोज**" फिल्म ऋषि दयानन्द द्वारा बचपन में शिव रात्रि का व्रत करने (बोध रात्रि) की घटना को केन्द्रित करके बनायी गई है।

विद्वत् गोष्ठी (ध्यान–पद्धति)–परोपकारिणी सभा विभिन्न महत्वपूर्ण कार्यों का संचालन कर रही है। आर्यसमाज की ध्यान पद्धति एक हो व निर्दुष्ट हो, इसके लिये सभा दो विद्वत् गोष्ठियों का आयोजन कर चुकी है। तीसरी गोष्ठी दिनांक १३, १४, १५ मार्च को ऋषि उद्यान में आयोजित की गयी। गोष्ठी में लगभग १६ वैदिक विद्वानों व ध्यान के विशेषज्ञों ने भाग लिया। गोष्ठी में आये विद्वानों का मार्गदर्शन ब्रह्मचारियों व आश्रम वासियों को भी मिला।

सभा के कार्यकारी प्रधान डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार–प्रसार कार्यक्रम–पिछले दिनों डॉ. धर्मवीर जी ने निम्न स्थलों पर वैदिक धर्म का प्रचार किया–**१६ फरवरी**–गोदावरी कन्या विश्वविद्यालय के शतवर्षीय समारोह में भाग लिया। **१८, १९, २० फरवरी**–ग्वालियर के निकट एक गांव बरखड़ी में आर्यसमाज के त्रिदिवसीय कार्यक्रम में व्याख्यान हुए। कार्यक्रम के संयोजक वानप्रस्थी सुदामा जी थे। डॉ. जयनारायण जी प्रतिवर्ष इसका आयोजन करते हैं। यहां पर ब्रह्मवेश जी के उद्बोधन व भजनोपदेशिका अंजली जी के भजन भी हुए। **२१, २२ फरवरी**–परली में महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच.) द्वारा प्रदत्त २० लाख रु. की राशि से निर्मित वानप्रस्थ आश्रम के उद्घाटन समारोह में भाग लिया। **२५ फरवरी से ३ मार्च तक**–आर्यसमाज सुभाष गंज, रुड़की (महर्षि दयानन्द द्वारा

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

स्थापित) में वेद-प्रचार कार्यक्रम। इसमें भजनोपदेशक कुलदीप जी साथ में थे। इस बीच ३ मार्च को आचार्य प्रद्युम्न जी के आग्रह पर 'योग ग्राम' में जाकर वहां के विद्यार्थियों को उद्बोधन दिया। **५-६ मार्च**-पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ के संस्कृत विभाग होशियारपुर में दो व्याख्यान हुए। पहला व्याख्यान "स्वामी दयानन्द की वेदार्थ शैली" विषय पर व दूसरा "निरुक्त में वर्णित वेदार्थ पद्धतियाँ" विषय पर हुआ। **७-१० मार्च**-आर्यसमाज कैथल के वार्षिकोत्सव में भाग लिया, जिसमें भजनोपदेशक ज्ञानेन्द्र तेवतिया भी साथ थे। **१३, १४, १५ मार्च**-ध्यान गोष्ठी (ऋषि उद्यान) में भाग लिया।

आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्य-३ मार्च-आचार्य जी आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, रोहतक के मासिक सत्संग में मुख्य वक्ता के रूप में सम्मिलित हुये। **४, ५, ६ मार्च**-जगराणा, अलवर आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव में व्याख्यान। इसके अन्तर्गत ६ मार्च को **पं. लेखराम जन्म दिवस** पर विशेष चर्चा हुई। कार्यक्रम में लगभग दो हजार श्रोता उपस्थित थे। **७, ८, ९ मार्च**-ग्राम मडलाणा आर्यसमाज की ओर से सत्यार्थप्रकाश की अध्यापन गोष्ठी में व्याख्यान, जिसमें सत्यार्थप्रकाश की भूमिका, दूसरे व नौवें समुल्लास पर विशेष चर्चा हुई, साथ में जिज्ञासा-समाधान भी हुआ। **१० मार्च**-गुरुकुल झज्झर के वार्षिकोत्सव में व्याख्यान। **१३-१५ मार्च**-ध्यान गोष्ठी (ऋषि उद्यान) में भाग लिया। **-ब्र. प्रभाकर।**

न्याय-दर्शन अध्ययन का अवसर

महर्षि गौतम प्रणीत **न्याय-दर्शन** और उस पर लिखा **वात्स्यायन-भाष्य** प्रमाण व अर्थतत्त्व को समझने की प्रक्रियाओं का सर्वाङ्गपूर्ण विवरण प्रस्तुत करता है। सभी वैदिक-अवैदिक दर्शनों को अपने मान्य सिद्धान्त प्रस्तुत करते समय इस पद्धति का प्रयोग करना अपेक्षित होता है। न्याय-दर्शन का मुख्य प्रतिपाद्य विषय 'प्रमाण' है। 'प्रमाण' को ठीक प्रकार जानने से ही तत्त्वनिश्चय ठीक हो पाता है, तभी मुक्ति का मार्ग भी प्रशस्त हो पाता है। प्रमाण ज्ञान से चिंतन-विचार की प्रक्रिया ठीक हो पाती है, नहीं तो अनजाने में मिथ्या सिद्धान्त गले पड़ जाते हैं। न्याय-दर्शन के अध्ययन से किसी भी बात की परीक्षा-समीक्षा की सामर्थ्य बढ़ती है और उचित-अनुचित का निर्णय सरलता-शीघ्रता-शुद्धता से हो पाता है। इस प्रकार यह शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति में अत्यन्त सहायक होता है।

वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़, गुजरात में **आचार्य सत्यजित् जी** (ऋषि उद्यान, अजमेर) द्वारा कृष्ण जन्माष्टमी (भाद्रपद कृष्णपक्ष अष्टमी २०७०, २८ अगस्त २०१३) से इसका विधिवत् नियमित संपूर्ण अध्यापन कराया जायेगा। यह दर्शन १०-११ महीनों में जून-जुलाई २०१४ तक पूर्ण होगा। इस बीच प्रत्येक अध्याय की लिखित परीक्षा भी ली जायेगी। कुल ५ परीक्षाएँ होंगी। इनमें ७५ प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वालों को '**न्यायाचार्य**', ६१ से ७५ प्रतिशत तक अङ्क वालों को '**न्याय-विशारद**' व ५१ से ६० प्रतिशत तक अङ्क वालों को '**न्याय-प्राज्ञ**' की उपाधि दी जायेगी। इस कक्षा में संस्कृत से परिचित साधक प्रकृति के ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थी, संन्यासी पुरुष व महिलाएँ भाग ले सकते हैं। इसमें बुद्धिमान्, स्वस्थ, अपने कार्यों को स्वयं करने में समर्थ, सेवाभावी, अनुशासन में रह सकने वाले अधिकतम २० पूर्णकालिक व्यक्तियों का स्थान है।

इस काल में समय-समय पर स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक का उपदेश-आशीर्वाद व सान्निध्य भी प्राप्त होता रहेगा। बीच-बीच में विभिन्न विद्वानों द्वारा अन्य विविध विषयों पर भी कक्षा एवं उपदेश होते रहेंगे। ब्रह्मचारियों संन्यासियों व अन्य असमर्थों हेतु निवास व भोजन व्यवस्था निःशुल्क है। समर्थ प्रतिभागी इच्छानुसार सहयोग कर सकते हैं। माताओं-बहनों के लिए निवास की पृथक् व्यवस्था रहेगी। इच्छुक व्यक्ति कृपया अपने परिचय-योग्यता विवरण व चित्र को पत्र या ईमेल से भिजवा देवें। प्राप्त आवेदनों में से योग्य व पहले आये आवेदनों को वरीयता दी जायेगी। आवेदन पहुँचने की **अन्तिम तिथि-३१ मई २०१३** है। **सम्पर्क**-९४१४००६९६१ (आचार्य सत्यजित्) **रात्रि ८.०० से ८.३०**। **पता**-वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, पत्रालय-सागपुर, जिला-साबरकांठा, गुजरात-३८३३०७, ईमेल-vaanaprastharojad@gmail.com, styajita@yahoo.com ❋

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आर्यजगत् के समाचार

१. जयपुर: गोपालपुरा बाईपास स्थित हिण्डौन हाउस में **सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् (राजस्थान)** के तत्त्वावधान में गत २३ जनवरी को महान् बलिदानी-स्वाधीनता सेनानी **सुभाष चन्द्र बोस** की जयन्ती मनाई गई। सभी उपस्थित जनों ने स्वाधीनता की रक्षा और सुराज्य की स्थापना का व्रत लिया।

२. आर्यसमाज मानसरोवर, जयपुर के सभी सदस्यों (महिला एवं पुरुष) ने दिनांक ०२.०३.०१३ को स्थानीय 'आशीर्वाद बाल आश्रम' में पहुँचकर अनाथ बच्चों की सहायतार्थ योगदान किया।

३. मातृ सेवा सदन बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय, रामपुरा, कोटा-०७ मार्च २०१३ को **आर्यसमाज रामपुरा** द्वारा संचालित मातृसेवा सदन बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय में स्वामी दयानन्द की जयंती अत्यन्त उत्साहपूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री राजेन्द्र सक्सेना, विशिष्ट अतिथि श्री इन्द्रकुमार आर्य तथा अध्यक्षता हाड़ौती किसान यूनियन के महामंत्री दशरथ सिंह जी ने की।

४. सप्तर्षि योगाश्रम गोपालपुर, बरगड़ (उड़ीसा) में २२, २३, २४ फरवरी को ऋग्वेद पारायण महायज्ञ स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमें सहस्राधिकों श्रद्धालुओं ने बड़ी भक्ति से यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान कीं। एक विशाल शोभायात्रा द्वारा रथों से सुसज्जित होकर नगरवासियों को वेदों का सन्देश सुनाया। इस अवसर पर दयानन्द मठ की स्थापना की गई। स्वामी सदानन्द जी आचार्य, स्वामी सत्यवेश जी, डॉ. वेदप्रकाश जी आदि का लाभ मिला।

५. दिनांक २२ जनवरी २०१३ को **आर्यसमाज संभाजीनगर (औरंगाबाद)** की ओर से २०१३ की आर्य दिनदर्शिका का विश्व हिन्दु परिषद् के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. प्रवीण भाई तोगड़िया द्वारा विमोचन किया गया। इस समय श्री दयाराम राजाराम बसैये (उपप्रधान, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा) तथा डॉ. जोगेन्द्रसिंह, नरेन्द्रसिंह चौहान ने डॉ. प्रवीण भाई तोगड़िया को शाल व पुष्पमाला तथा टंकारा वैदिक दैनन्दिनी २०१३, वैदिक राष्ट्रीय ऋचा व वैदिक विनय (मराठी भाषा में अनुवादित ग्रंथ) आदि वैदिक साहित्य भेंट दिया गया और पूर्व सांसद तथा मानव संसाधन राज्यमंत्री श्री जयसिंगराव गायकवाड़, पूर्व महापौर डॉ. भागवत कराड़, मा. श्री प्रवीण जी धुगे (संगठन मंत्री, भा.ज.पा.) श्री समीर राजुरकर (नगरसेवक) श्री पराग तेली (कल्याण मुंबई) संदीप चांडक, गोविंदा भट, श्री सुधीर नाईक, संतोष तम्मल, मनोज खोजे पाटिल, श्री जगन्नाथ बसैये, श्री दिनेश बसैये, श्री ऋषिकेश प्रदीप जैसवाल, प्रवीण बसैये, राजेश जैन (वि.हि.प. जिला मंत्री) ने पुष्पमाला द्वारा सम्मान किया।

इस अवसर पर प्रवचन करते हुए डॉ. तोगड़िया जी ने कहा कि आर्यसमाज के संस्थापक युगपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती ही सबसे स्पष्ट एवं प्रखर इस्लाम व ईसाईयत पर बोलने वाले, सत्यार्थप्रकाश ग्रंथ में समालोचना करने वाले महापुरुष रहे। आर्ष वैदिक गुरुकुलों की शिक्षा प्रणाली की शुरुआत महर्षि जी के विचारों से महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) ने अपना सर्वस्व अर्पण करके गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करके की। तब से लेकर आज तक यह संस्था हजारों प्रचारकों का निर्माण कर रही है। आर्यसमाज ने स्थापना से आज तक संवर्धन करने का काम किया व वर्तमान में भी हिन्दु धर्म के जागृत प्रहरी सैनिक सिपाही की तरह कार्यरत है।

६. आर्यसमाज, आर्य धर्मशाला न्यास तथा **महर्षि दयानन्द शिक्षण समिति** द्वारा ०१.०३.२०१३ को प्रात: ७.३० से १०.०० बजे व अपराह्न ३.३० से ६.०० बजे तक वैदिक प्रवचन का आयोजन श्री देवकीनन्दन दीक्षित सभाभवन, लालबहादुर शास्त्री विद्यालय बिलासपुर में किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रवक्ता आचार्य डॉ. वागीश जी का स्वागत आर्यसमाज के प्रधान सुभाष बत्रा व अन्य पदाधिकारियों ने किया। शालिनी बग्गा ने सुमधुर भक्ति गीत प्रस्तुत किये।

कार्यक्रम के विषय-"दु:ख, तनाव और भय पर विजय का मार्ग" विषय पर विद्वान् व ओजस्वी वक्ता, डॉ. वागीश ने रोचक, मार्मिक तथा जीवनोपयोगी तथ्यों का वर्णन शास्त्रों के आधार पर करते हुए दु:ख, तनाव और भय पर विजय के सरल उपाय बताये। उन्होंने कहा-६ प्रकार के अवगुणों से युक्त व्यक्ति कभी सुखी नहीं हो सकता-**१.** ईर्ष्यालु-जो दूसरों की उन्नति देखकर ईर्ष्या करे। **२.** घृणा करने वाला **३.** असंतोषी-उपलब्ध पदार्थों का समुचित उपयोग न कर अनुपलब्ध को बिना पुरुषार्थ के पाने के लिये दौड़ते रहना। **४.** शंकालु-सदैव अनिष्ट का भय मानकर दु:खी व पुरुषार्थहीन रहना। **५.** क्रोधी **६.** भाग्यवादी-पुरुषार्थ न कर भाग्य के भरोसे बैठे रहने वाला। समस्त सुखों का मूल पुरुषार्थ तथा समस्त दु:खों का मूल आलस्य है। जिज्ञासाओं द्वारा पूछे गये प्रश्नों के समाधान कारक उत्तर भी डॉ. वागीश द्वारा दिये गये।

७. आर्यसमाज एवं आर्य शिक्षण समिति बूढ़ा द्वारा संचालित आर्य बाल मन्दिर उ.मा.वि. में आयोजित **महर्षि**

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

दयानन्द जन्मोत्सव श्री रतनलाल जी आर्य की अध्यक्षता में मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अर्जुनलाल नरेला प्रधान आर्यसमाज नीमच, विशेष अतिथि श्री बंशीलाल जी आर्य अन्तरंग सदस्य मध्य भारतीय आर्यप्रतिनिधि सभा व श्री सत्येन्द्र आर्य संस्कार विशेषज्ञ ने अपने ओजस्वी उद्‌बोधन में महर्षि दयानन्द के बताये मार्ग पर चलते हुए वेदों की ओर लौटकर जीवन को संस्कारवान् बनाने का संकल्प लेने की शिक्षा दी। महर्षि दयानन्द के जन्मोत्सव पर विद्यालय स्तर पर विभिन्न प्रतियोगिता जैसे-मंत्रपाठ, श्लोक वाचन, स्वस्तिवाचन, वाद-विवाद प्रतियोगिता प्रबुद्ध वर्ग एवं छात्र/छात्रा स्तर के लिए आयोजित की गई। विजेता, उपविजेता को पुरस्कार स्वरूप सत्यार्थप्रकाश एवं ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका एवं अन्य आर्य साहित्य भेंट किया गया।

कार्यक्रम का संयोजन आर्य शिक्षण समिति के अध्यक्ष डॉ. रामनिवास जी पाटीदार ने किया। इस अवसर पर आर्य शिक्षण समिति के सदस्य मा.वि. तथा उ.मा.वि. आर्य बाल मन्दिर के स्टाफ के अतिरिक्त लगभग ७०० छात्र/छात्राएं सम्मिलित हुए।

८. आर्यसमाज भुवनेश्वर का विद्वत् सम्मान समारोह- भुवनेश्वर आर्यसमाज का तीन दिवसीय ३६ वां **वार्षिकोत्सव** फरवरी ९, १० और ११ को सम्पन्न हुआ। उक्त अवसर पर इस आर्यसमाज के संस्थापक तथा प्रधान डॉ. प्रियव्रत दास जी के पौरोहित्य में अनुष्ठित सम्मेलन में धनपतिगंज गुरुकुल के संस्थापक डॉ. शिवदत्त पाण्डेय को 'महर्षि दयानन्द पुरस्कार-२०१२' एवं कन्या गुरुकुल महाविद्यालय चोटीपुरा की आचार्या डॉ. सुमेधा को 'शन्नोदेवी राष्ट्रीय वेदविदुषी पुरस्कार-२०१२' द्वारा सम्मानित किया गया। ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त पद्मविभूषण डॉ. सीताकांत महापात्र, ख्यातनामा हृदयरोग चिकित्सक डॉ. कविप्रसाद मिश्र, वरिष्ठ पत्रकार तथा साहित्यकार श्री सातकडी होता ने विभिन्न अधिवेशनों में उद्‌बोधन दिये। स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, स्वामी डॉ. आनन्द और स्वामी सुधानन्द ने आशीर्वचन प्रदान किये। पं. विसिकेशन शास्त्री ने यज्ञ एवं आर्यसमाज के मंत्री श्री वीरेन्द्र कर ने मञ्च परिचालन किया।

९. गुरुकुल हरिपुर, जुनवानी जि-नुआपड़ा, ओड़िशा के तत्त्वावधान में तथा जन-सहयोग से आर्यजगत् के सेवावीर महात्मा वानप्रस्थ श्री सत्यनारायण जी आर्य के आशीर्वाद से ओड़िशा के बहुत ही पिछड़े हुए क्षेत्र फुलवाणी (कन्धमाल) जिले के नुआगां, राईकिया व फिरींगिया विकासखण्ड के विभिन्न २६ गांवों के अत्यन्त निर्धन ६०० परिवारों को २१-२२ फरवरी को अन्न-वस्त्र वितरण किया गया। गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य के प्रत्यक्ष देखरेख में तथा गुरुकुल के आचार्य-द्वय आचार्य दिलीप कुमार जी, आचार्य धर्मराज जी एवं स्थानीय श्रद्धालु सहयोगियों की निष्ठा एवं पुरुषार्थ से यह वितरण का कार्यक्रम अत्यन्त सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। ध्यान रहे, सहयोग उन लोगों तक पहुंचाया गया, जो पिछले २००८ के दंगे से बहुत ही पीड़ित थे और अपने आपको असहाय अनुभव करते थे, ऐसे लोगों को चिह्नांकित करके प्रत्येक परिवार को २५-२५ किलो चावल एवं एक-एक साड़ी प्रदान की गयी। इस प्रकार एक परिवार को कुल ७००/- सहयोग दिया गया।

वितरण कार्यक्रम के साथ-साथ तीन मुख्य वितरण केन्द्रों पर यज्ञ-प्रवचन का कार्यक्रम भी हुआ। अनेक महिलायें एवं पुरुष वर्ग आर्यसमाज के सम्पर्क में आये, यज्ञोपवीत लिये। इसके साथ ५० से ६० व्यक्तियों ने मांस-मछली, नशा छोड़ने हेतु संकल्प लिया। जिला भर से वैदिक धर्म के लिये समर्पित २७ कार्यकर्त्ताओं को शॉल एवं वैदिक सिद्धान्तों की पुस्तकों से सम्मानित किया गया।

१०. वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास, सहारनपुर के द्वारा गौ-भक्तों और सामाजिक क्षेत्र के कार्यकर्ताओं को शॉल उढाकर, प्रशस्ति-पत्र व वैदिक साहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर न्यास के अध्यक्ष आदित्य प्रकाश गुप्ता ने कहा कि न्यास के द्वारा अपनी वैदिक संस्कृति के उत्थान के कार्यक्रम सदा चलते रहेंगे। और इस कार्यक्रम को चलाने में हमे क्षेत्र के सभी सज्जन लोगों के सहयोग की आवश्यकता है। क्षेत्र में लगातार हो रही गौ हत्या पर गम्भीर चिन्ता व्यक्त की गयी। सरकार से मांग की गई कि गौ-हत्यारों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्यवाही की जाये, संचालन वेदभूषण गुप्ता (सचिव) ने किया।

गौ-रक्षा और सामाजिक सेवा के लिए सम्मानित व्यक्तियों की सूची-पं. ओमप्रकाश वर्मा यमुनानगर, आचार्य विष्णु वेदार्थी बिजनौर, चन्द्रशेखर मित्तल नकुड, चौ. हरिपाल रणदेई, संजीव नकुड, योगेन्द्र सिरोही (शिव सेना जिलाध्यक्ष सहारनपुर), कुलदीप उर्फ पप्पू झैरोली, अवनीश चौधरी रणढेडी, शिवकुमार जोशी कुतुबपुर, प्रवीन आर्य सरसावा, लाल सिंह नरयाली, जयप्रकाश शर्मा सरसावा, नीरज रोहिला लखनौती, सुभाष जी कुतुबपुर।

११. खेड़ा अफगान, सहारनपुर-आर्यसमाज के ११५ वें वर्ष पर आयोजित धर्म जागृति महोत्सव के दूसरे दिन १७.०२.२०१३ को यज्ञ-भजन, वेद-प्रवचन तथा सम्मान व पुरस्कार समारोह (वैदिक संस्कृति ज्ञान वर्धिनी प्रतियोगिता) सम्पन्न हुए। आर्यभजनोपदेशक पं. ओमप्रकाश वर्मा ने भजन व गीतों से वैदिक सन्देश व आर्यसमाज के योगदान की चर्चा की तथा आर्य भजनोपदेशक पं. प्रतापसिंह आर्य ने ईश्वरभक्ति, यज्ञ महिमा, संस्कार विषयक भजन व गीतों से श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आदित्य प्रकाश गुप्त ने की व संचालन अमित कुमार आर्य मन्त्री आर्यसमाज ने किया। प्रतियोगिता में उत्तीर्ण होने वाले सभी विद्यार्थियों को नकद पुरस्कार वैदिक साहित्य व प्रशस्ति-पत्र प्रदान किये गये।

१२. आर्य प्रतिनिधि सभा, हिमाचल प्रदेश-''स्वामी दयानन्द सरस्वती पीठ'' को हिमाचल विश्वविद्यालय में शीघ्र ही सक्रिय करने के सम्बन्ध में कार्यकारी परिषद् (ई.सी.) द्वारा सहमति दिए जाने से अन्तर्राष्ट्रीय आर्यजगत् शोधकर्ता, वैदिक धर्म, संस्कृति, दर्शन आदि विषयों एवं वैज्ञानिक दृष्टि से अनुसंधान करने वाले विद्यार्थी बहुत प्रसन्न है।

१३. पाक अदालत में ८४ साल पुराने मामले को खोलने की कवायद-लाहौर, २१ फरवरी (प.स.): पाक की एक अदालत ने ईशनिंदा को लेकर एक हिन्दू लेखक की हत्या के मामले में सुनाई गई मौत की सजा के ८४ साल पुराने एक मामले को दोबारा खोले जाने की मांग करने वाली एक याचिका पर सुनवाई शुरु कर दी है।

यह पुराना मामला ब्रिटिश शासन के समय का है जब **एक अदालत ने राजपाल नाम के एक हिन्दू लेखक की हत्या के आरोप में गाजी इलामुद्दीन को मौत की सजा सुनाई थी।** लाहौर उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश उमर अता बंदीयाल ने मामले की सुनवाई १४ मार्च तक के लिए टाल दी। पैगम्बर मोहम्मद की निंदा करने को लेकर इलामुद्दीन ने कथित तौर पर राजपाल की हत्या कर दी थी और इस आरोप में उसे लाहौर उच्च न्यायालय के ब्रिटिश न्यायाधीश ने मौत की सजा सुनाई थी। 'सेव द ज्यूडीशियरी कमेटी' के इम्तियाज रशीद कुरैशी ने इस मामले को दोबारा खोले जाने की याचिका दायरा की थी।

सौजन्य-पंजाब केसरी, २२.०२.२०१३

१४. आर्यसमाज मन्दिर, यमुना नगर, हरियाणा-आर्यसमाज मंदिर मॉडल कॉलोनी में दिनांक २३ दिसम्बर २०१२ दिन रविवार को **स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस** बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसमें डॉ. सूर्यपाल शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के पश्चात् नवनिर्मित भवन का उद्घाटन सुधा रानी जी के कर-कमलों द्वारा किया गया। सहारनपुर से धर्मसिंह जी, कैथल से श्री रणधीर जी व श्री प्रदीप माथुर आदि विद्वानों का मार्गदर्शन मिला।

चुनाव समाचार

१५. आर्यसमाज वेदमन्दिर, कानपुर, उ.प्र.- महिला आर्यसमाज वेदमन्दिर गोविन्दनगर की साधारण सभा की बैठक में निम्नलिखित पदाधिकारियों का चयन किया गया-**प्रधान**-श्रीमती सरोज अवस्थी, **उपप्रधान**-श्रीमती मिथलेश शुक्ला, श्रीमती तपेश्वरी देवी, **मन्त्री**-श्रीमती संजीता सचान, **उपमन्त्री**-श्रीमती आशा रानी, श्रीमती कल्पना गुप्ता, **कोषाध्यक्ष**-श्रीमती शशिकला, श्रीमती कुशा पाण्डेय।

१६. आर्यसमाज, वेदमन्दिर, कानपुर-आर्यसमाज (वेद मन्दिर) गोविन्द नगर, कानपुर की साधारण बैठक में निम्नलिखित पदाधिकारियों का चयन किया गया-**प्रधान**-अशोक कुमार पुरी, **उपप्रधान**-रामसेवक, रणधीर सिंह, पूर्णचन्द्र बत्रा, **मन्त्री**-हरिवंश आर्य ''सरल'', **उपमन्त्री**-सतपाल आर्य, ओमप्रकाश सचान, संजय गुप्ता, **कोषाध्यक्ष**-जयदेव सिंह, **पुस्तकाध्यक्ष**-रामलखन आर्य, **अधिष्ठाता आर्यवीर दल**-आत्मप्रकाश आर्य, **लेखा निरीक्षक**-भगवती प्रसाद त्रिपाठी, **मीडिया प्रभारी**-ओमप्रकाश पाण्डेय।

१७. स्त्री आर्यसमाज, मॉडल टाउन, जालन्धर पंजाब का ''गायत्री महायज्ञ'' सम्पन्न-विगत ५३ वर्षों की परम्परानुसार इस वर्ष भी आर्यसमाज मन्दिर, मा.टाउन जालन्धर द्वारा आयोजित 'गायत्री महायज्ञ' अपनी पूर्ण भव्यता के साथ दिनांक १२.०३.२०१३ को पूर्णता को प्राप्त हुआ।

यह महायज्ञ पूरे माघ माह (तदनुसार १३ जनवरी-१२ फरवरी) चलता रहा। प्रतिदिन दोपहर २.३० से सायं ४.३० के कार्यक्रम में प्रारम्भ के १ घण्टे का समय यज्ञ के लिए निश्चित था तदोपरान्त भजन व प्रवचन का कार्यक्रम किया जाता था। भजन प्रस्तुति के लिए समाज को किसी भजनोपदेशक को बुलाने की आवश्यकता नहीं पड़ी क्योंकि समाज की सक्रिय महिला सदस्यों ने अपने सुमधुर भजनों को प्रस्तुत कर इसकी आवश्यकता ही महसूस न होने दी। प्रवचन के क्रम में आर्यजनों को आचार्य महावीर मुमुक्षु जी (मुरादाबाद), आचार्य ऊषर्बुध जी (जयपुर), स्वामी विष्वङ् जी (अजमेर) आदि विद्वानों का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

स्त्री आर्यसमाज, मॉडल टाउन, जालन्धर के तत्त्वावधान में आयोजित होने वाले इस मासिक महायज्ञ में आचार्य महावीर जी मुमुक्षु ने प्रथम दस दिनों में स्वामी दयानन्द जी के द्वारा मानव जाति के उपकारार्थ किए गए कार्यों व आर्यसमाज की विशेषता संबंधी अनेकों प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत किए। इसी क्रम में आचार्य ऊषर्बुध जी ने सत्यार्थप्रकाश का महत्त्व, महापुरुषों के जीवन के प्रेरक प्रसंगों को यज्ञप्रेमी-समुदाय के समक्ष रखा। कार्यक्रम के अन्तिम सप्ताह में आर्यजनों को स्वामी विष्वङ् जी के उद्बोधन का लाभ प्राप्त हुआ। स्वामी जी ने योग के आठों अङ्गों (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि) को जनसामान्य के लिए सुस्पष्ट व बोधगम्य बनाया। ईश्वर व जीवात्मा संबंधी विवेक को पुष्ट करते हुए स्वाजी जी ने बताया कि ईश्वर ने हमें जिन कार्यों को करने में सक्षम बनाया, ईश्वर उन कर्मों को स्वयं नहीं करता है, ईश्वर केवल उन्हीं कार्यों को करता है, जिन्हें मनुष्य नहीं कर सकता। अत: इन तथ्यों को ध्यान में रखकर ही हमें ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। जनसामान्य को ईश्वर से प्रार्थना करनी भी

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

नहीं आती वो तो थोड़ा पैसा, थोड़ा प्रसाद चढ़ाकर ईश्वर से किसी विषय में सौदा करना चाहता है।

महायज्ञ के इस मासिक कार्यक्रम के मध्य पड़ने वाले उत्सवों को भी समाज में अत्यन्त उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के मध्य में डॉ. सुषमा चोपड़ा, डॉ. कुमुद पसरीचा, डॉ. दिपाली लूथरा के सहयोग व मार्गदर्शन में स्वास्थ्य संबंधी परिचर्चा भी आयोजित की गई। इस दौरान चिकित्सक-वृन्द ने स्वस्थ रहने के तरीके व स्वास्थ्य परीक्षण संबंधित जानकारियाँ प्रस्तुत की।

कार्यक्रम में दयानन्द मॉडल स्कूल, मॉडल टाऊन, जालन्धर के छात्र-छात्राओं ने भी गीत, भजन व भाषण आदि की प्रस्तुतियाँ कर अपनी सांस्कृतिक चेतना से जनसामान्य को अवगत कराया।

इस सम्पूर्ण कार्यक्रम की मुख्य विशेषता यह रही कि इस महायज्ञ में आर्य परिवारों से भिन्न परिवारों से अनेकों सज्जनों, माताओं, बहनों व बच्चों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। आर्यजनों के संबंधी अनेक सज्जनों ने भी आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण की जिनमें स्त्री आर्यसमाज की प्रधाना जी के परिवार से श्रुति कपूर, सोनम भगत आदि कई बहू-बेटियाँ शामिल थी।

पूर्णाहूति का कार्यक्रम १२.०३.२०१३ को ३१ हवन कुण्डों में अग्निहोत्र के साथ प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर श्री चतुर्भुज मित्तल जी (प्रधान, गुरुकुल करतारपुर) सपरिवार, गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ उपस्थित थे। आर्यसमाज के प्रधान श्री अरविन्द घई भी सपरिवार पूर्णाहूति के कार्यक्रम में भाग लेकर पुण्य के भागी बनें। समापन सत्र की अध्यक्षता सुमन जी (लुधियाना) ने प्रदान की। अपने उद्‌बोधन में डॉ. सुचरिता शर्मा (ए.पी.जे. कॉलेज) ने बताया कि सन्तानों में सुसंस्कारों का आधान करने का मुख्य दायित्व माताओं का है, इसके साथ-साथ उन्हें स्वावलम्बी भी होना चाहिए। डॉ. आतिमा शर्मा (कन्या महाविद्यालय) ने कार्य के प्रति समर्पण पर जोर देकर कहा कि तन, मन से समर्पण होकर पुरुषार्थ करने में ही सफलता मिलती है। कार्यक्रम में रश्मि घई जी के भजन 'सीता और गीता मेरी दो राज दुलारी है' से श्रोता भावुक हो उठें। स्वामी विष्वङ् जी ने अपने प्रभावी वक्तव्य में यह सुस्पष्ट किया कि यदि हम समाज की दशा और दिशा सुधारना चाहते हैं तो इसके लिए पहले अपने जीवन में सुधार की आवश्यकता है। मन्त्राणी प्रेमिला अरोड़ा जी ने स्त्री आर्यसमाज की वार्षिक रिपोर्ट पढ़कर सुनाई। कार्यक्रम के अन्तिम में समाज प्रधाना श्रीमती सुशीला जी ने डॉ. सुषमा चावला, डॉ. सुषमा चोपड़ा, प्रि.डॉ. सरिता वर्मा (वी.डी. आर्या कॉलेज, जालन्धर कैंट), डॉ. कुमुद पसरीचा, दमयन्ती सेठी जी, सरला सेतिया जी, प्रि. विनोद चुध जी, राजेन्द्र विज जी व अन्य अतिथियों को पुस्तकें भेंटकर सम्मानित किया। इस पूरे कार्यक्रम में अपने सुमधुर भजनों की प्रस्तुति देने वाली माताएँ-बहनें यथा श्रीमती रश्मि घई, श्रीमती रजनी सेठी, किरण मारवाह जी, सरला सेतिया जी, प्रोमिला अरोड़ा जी, विभा आर्या जी, मालती तलवाड़ जी, दमयन्ती सेठी जी शकुन मल्होत्रा जी के प्रति धन्यवाद व्यक्त करते हुए प्रधाना सुशीला भगत जी ने सभी कार्यकर्त्ताओं व सहयोगियों के प्रति विशेष आभार प्रकट किया।

इस कार्यक्रम में रवि मित्तल, देवी सूरी, अरविन्द घई (प्रधान-आर्यसमाज, मॉडल टाउन), अजय महाजन (मन्त्री आर्यसमाज, मॉडल टाउन), कमलेश सेठी, बाला मधोक, सरिता विज, कांता अरोड़ा, उषा मेहता, नीरु कपूर, सौम्या घई, गोकुलचन्द भगत, जोगिन्द्र भण्डारी, सुदेश भण्डारी आदि गणमान्य जन उपस्थित थे। अन्य समाजों से श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, श्री राजेश अमर प्रेमी जी, राजीव भाटिया जी, रंजित आर्य जी भी उपस्थित थे। इस प्रकार धन्यवाद कार्यक्रम के पश्चात् शान्ति पाठ व प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम अपनी पूर्णता को प्राप्त हुआ। **निवेदिका-श्रीमती सुशीला (प्रधाना)**

प्रेमिला अरोड़ा (मन्त्राणी)

१८. श्रीमती मदन कुमारी कोठारी का निधन-वैदिक विद्वान् श्री धर्मसिंह जी कोठारी की धर्मपत्नी श्रीमती मदन कुमारी कोठारी का निधन दिनांक १४ मार्च २०१३ को जयपुर में हो गया। आपका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक विधि से लाल कोठी श्मशान घाट पर किया गया। इस अवसर पर राजस्थान के मुख्यमन्त्री माननीय अशोक गहलोत एवं राजस्थान उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश अमिताव राव सहित कई न्यायाधिपति, प्रशासनिक अधिकारी, पुलिस अधिकारी व गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। माता श्री अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर नूतन शरीर पाने के लिए चली गई हैं। उनके चारों पुत्र श्री राजसिंह जी कोठारी, श्री सुदर्शन सिंह जी कोठारी, श्री सज्जन सिंह जी कोठारी एवं श्री हर्ष कोठारी उच्च पदों पर प्रतिष्ठित होते हुए भी पूर्ण सदाचारी, धार्मिक व ऋषि के अनन्य भक्त हैं। यह उनकी स्व. माता मदन कुमारी जी का ही पुण्य प्रताप का फल है। ''परोपकारी'' परिवार पुण्यात्मा माताश्री की सद्‌गति हेतु प्रभु से प्रार्थना करते हुए इस दु:खद घड़ी में कोठारी परिवार के साथ खड़ा है।

शोक समाचार

१९. आर्यजगत् के सुपरिचित विद्वान् एवं आर्यसमाज शृंगार नगर, लखनऊ के प्रधान **पं. रूपचन्द्र 'दीपक'** की धर्मपत्नी श्रीमती राकेश रानी (आयु ५५ वर्ष) का २७ फरवरी, २०१३ को निधन हो गया। वे एक मास पूर्व सड़क दुर्घटना में घायल हो गई थीं और उपचाराधीन थीं। आचार्य प्रद्युम्न जी ने अन्त्येष्टि-संस्कार कराया। वे अपने पति के साथ २ पुत्र (हिमांशु देव, सुधांशु देव), पुत्रवधू (शालिनी सिंह) और पौत्र (सुमन्यु देव) को छोड़ गई हैं। ❋

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

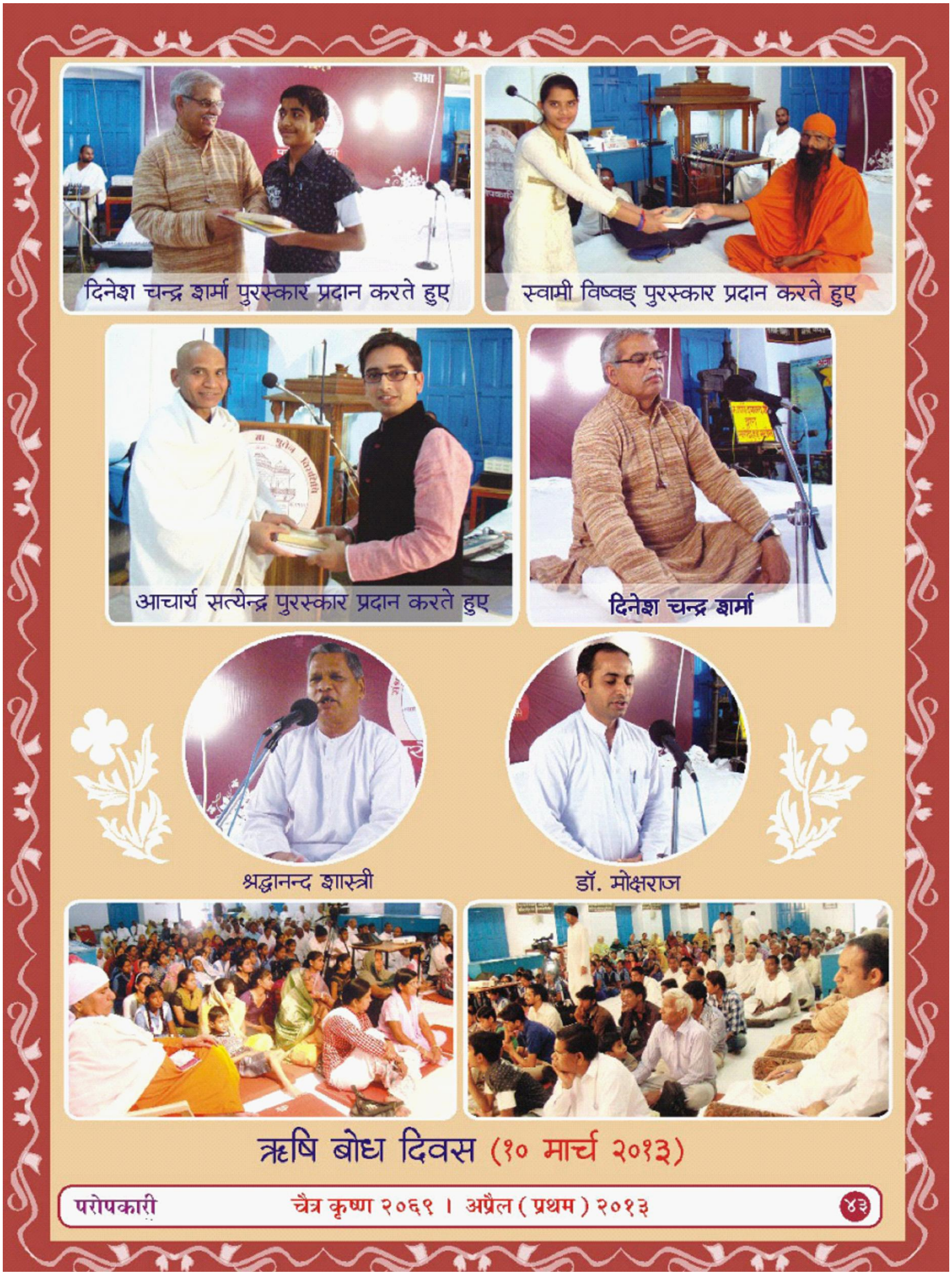

Generated by Foxit PDF Creator © Foxit Software
http://www.foxitsoftware.com For evaluation only.

आर जे/ए जे/80/2013-2014 तक   प्रेषण : ३० मार्च, २०१३   RNI. NO. ३९५९/५९

सभा अधिकारियों के साथ

आर्यवीरों के साथ

गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ

स्वामी रामदेव का ऋषि उद्यान में आगमन (८ मार्च २०१३)

प्रेषकः
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१